आगमोद्धारक

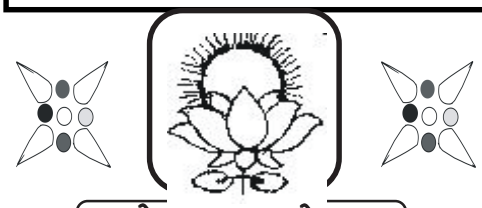

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक
डॉ. सुभाष जैन, उज्जैन

प्रमुख सलाहकार
श्री प्रेमजी डूंगरवाल
35, तिलकनगर, इन्दौर
मोबा. नं.94253-13434

संपादकीय कार्यालय
डॉ.सुभाष जैन
46,सखीपुरा,उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं.-94250-91012
E-mail-Subash3333@yahoo.co.in

इन्दौर कार्यालय
प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''
1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O से **श्री अभ्युदयफाउण्डेशन**, उज्जैन के नाम सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी।

-डॉ.सुभाष जैन

जिस हृदय में अरिहंत शब्द का उच्चारण हो रहा है उस आत्मा की अकस्मात मृत्यु नहीं होती। होती है तो कुगति नहीं होती। जीवन के अंत समय में भी अरिहंत शरण सुगति प्रदान करती है।

आर्शीवाददाता
प.पू.मालव भूषण आचार्य श्रीनवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक
प.पूज्य आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन
अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

सुइं च लद्धुं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लहं।
बहवे रोयमाणावि, नो यणं पडिवज्जई।।

कदाचित् धर्म को सुनकर उसमें श्रद्धा भी हो जाए, किन्तु धर्म में पुरूषार्थ करना तो और भी दुर्लभ है। धर्म में रूचि होने पर भी बहुत से लोग धर्म का पालन नहीं कर पाते है। - उत्तरा. सूत्र. 3.10

पाथेय

हे नाथ! तुम्हारे नियम को जो मूलतत्व अपरिवर्तनीय एवं सार्वभौमिक है वह है एक असीम शान्ति एवं आनन्दमय अनुभूति, जो कि तुमने इस मानव जगत को प्रदान की है और उसे क्षमता दी कि वह उसे उपलब्ध करें, उसका अनुसंधान करें। जिन व्यक्तियों ने हे नाथ तुम्हें किया है आत्म समर्पण उनके हृदय का कोई भी एक भी अंश भाग नहीं रह सकता है तमसाबूत वे अहँकार, अज्ञान, आसक्ति एवं दुर्भावना से नहीं रहते है पीड़ित अथवा ग्रसित। मैं परम भक्ति भावना से होकर नतमस्तक करता हूं तुमसे यह प्रार्थना कि हे प्रभु! यह सकल चराचर जगत जीवन तुम्हारी परम दिव्य शांति एवं आनन्द के प्रति हो सके उन्मुक्त, जागृत, विनीत एवं कृतज्ञ।।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रूपये
आजीवन	1000/- रूपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रूपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रूपये
एक प्रति	10/- रूपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-22 चैत्र-वैशाख अप्रेल 2017 अंक (4)

विषय-सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	1
2- विषय सूची	2
3- श्री ऋषभदेव से श्री महावीर प्रभु तक की तप परम्परा-आयंबिल- (सम्पादकीय)- डॉ. सुभाष जैन	3
4- अहिंसा व्रत- आ.श्री विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.	4
5- श्री कयावन्ना-चरित्रम्-आचार्यश्री जयानंदसूरीश्वरजी म., खाने में सफेद बाल	5-6
6- तीर्थाधिराज शत्रुंजयगिरि के पंद्रहवें उद्धार का अपूर्व इतिहास	7-8
7- गुरूवर मेरे लिये तुम कौन हो...!	9
8- नवरत्न को नमन् - मृदु सुनू नमि	10
9-मैं नंदिषेण (सेवामूर्ति)- पू.आ.श्री विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.	11-13
10-धर्म पुरूषार्थ- जैनाचार्य श्री जितरत्नसागरजी 'राजहंस', संसार में तो दुःख ही होता है- पं.गुणसुदरविजयजी गणी	14
11- पाप की सजा भारी...! -प.पू.आचार्य श्री अरूणविजयजी म., आत्मा की ज्योति	15-16
12-भगवान श्री महावीर स्वामीजी की उपदेयता, वृद्धों की सेवा करो.... रामेश्वरप्रसाद गुप्त 'इंदु', इन्सान व इन्साफ	17-18
13-बचपन और बुढ़ापे को बचाये.... सुधीर पटवा, एडवोकेट, ले जाने वाला रोएगा- एस.सी.कटरिया	19-20
14-भगवान श्री महावीर और उनके सिद्धांत	21-22
15-भगवान श्री महावीर की अहिंसा, पक्षी प्रकृति के पालनहार- अनोखीलाल कोठारी	23-24
16-सागर समुदाय के गौरव : पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी महाराज, गच्छाधिपति पू.आ.श्री चिदानंदसागर सूरीश्वरजी महाराज	25-26
17-शाश्वत है भगवान महावीर के सिद्धांत	27-28
18-मैं शनि हूं....	29-30
19-बच्चों के संस्कार व अभिभावक- ❋ श्रीमती प्रभा जैन, जानो पहचानो- सुधा लोढ़ा	31
20-वर्ग पहेली क्रमांक-268	32
21-ज्ञान गंगोत्री कमांक-268 -पंन्यास प्रवर मृदुरत्नसागरजी म.	33
22-आगमोद्धारक भविष्य फल-अप्रेल 2017-अनु दीपक जैन	34
23-शासन समाचार	35-39
24-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण,सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है	40

संपादकीय

श्री ऋषभदेव से श्री महावीर प्रभु तक की तप परम्परा-आयंबिल

संसार *को आलोकिक-प्रकाशित करने के लिये सूर्यदेव निरंतर तप करते है, अपने द्धारा किये जा रहे अविराम इस तप आराधना में जलते रहने के बाद भी सूर्यदेव पृथ्वीलोक के दोनों गोलार्ध में अपने द्धारा प्राण और ऊर्जा का संचार करते करते है, यही नहीं मेघों का अभाव ही जीवन की प्यास को बुझा दे इस हेतु सागर भी निरंतर सूर्य की तप ज्वाला में जलकर अपने अन्तदेह को सुखाकर-तपते झुलसते जीवन को वर्षा का शीतल फुहार के लिये जीवनदायक बनाने के जीवन दांव पर लगा देते है। हम यह भी जानते हैं कि अपनी हर श्वास में संसार का जहर पीकर बदले में अमृत प्रदान करने का पुण्य पुरूषार्थ वृक्षों ने कभी बंद नहीं किया बल्कि निरंतर करते रहते हैं। परोपकार रूपी कर्म को अपर्ण करना यह प्रकृति की मूल प्रेरणा है अगर प्रकृति परोपकार का यह तप करना बंद कर दे तो चारों ओर अंधकार, शून्य और विनाश ही अवशेष रह जायेगा।*

आपने यह भी देखा होगा कि परोपकार की इस पुण्य-प्रक्रिया का आगे बढ्ने में नदियां भी अपने मार्ग में आनेवाले पत्थरों-रूकावटों को ठोकरे मारते हुए, हटाते हुए संसार के सब प्राणियों को जलदान कर निरंतर प्रवाहित होती रहती है। हवा-वायु को ही देखिये चारों ओर प्रवाहित होते हुए सारे जहां की सब दुर्गंध का अपने में समाहित कर जीव मात्र को प्रेरणा ऊर्जा प्रदान कर जीवन दीप का दान करती रहती है। फूलों को ही देख लीजिये हमेशा मुस्कराते हुए अपनी महकी-महकी खुशबू से चमन में ताजगी बनाये रखते हैं, सौंदर्य और सुगन्ध से भरे अपने जीवन को हम पर न्यौछावर कर उनकी जिन्दगी की तपस्या पूर्ण होती है। हमारे तनाव और कोलाहल से भरे वातावरण के बीच कोयल का मधुर गान जीवन को शांति प्रदान कर तनाव से मुक्ति ही दिलाता है।

दीपों के समपर्ण में भी यही संदेश छुपा हुआ दिखाई देता है, जीवन की मूल प्रेरणा भी यही प्राप्त होती है कि परमार्थ और लोक कल्याण के लिये अपने जीवन का सर्वस्व लुटाकर असीम आनंद और आत्मशांति को अनुभूत करना है। हम सभी इस बात को अच्छी तरह से जानते भी है कि आत्मपर्ण किये बगैर परमार्थ की साधना नहीं की जा सकती है।

जैन जगत का संपूर्ण अस्तित्व और परम्परा भी इसी तरह आत्मपर्ण की रही हुई है तीर्थंकर परमात्मा से लेकर आज तक जितने भी महर्षि, महंत हुए सभी ने आत्म कल्याण को साधने के लिये ,परमार्थ को साधने के लिये परमार्थ की साधने के लिये तीर्थंकर और महर्षियों की श्रमण परम्परा ने हमेशा ही तप का आलंबन लिया है। अपनी काया को तप केअधीन कर उन्होंने वह सब पाने का प्रयास किया है जिसको पाकर संसार में प्राणी मात्र के लिये शांति और आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो। स्वयं ने तप मार्ग को चुनकर पहले अपने कल्याण का स्वार्थ सामने नहीं रखा बल्कि प्राणीमात्र का कल्याण हो इस भाव सबसे आगे रखा।

आत्म कल्याण और सर्वहित कल्याण को सामने रखकर जिस तपाराधना से हम जीवन को सफल बना सकते है वहीं चैत्र माह में की जाने वाली सर्वश्रेष्ट तपाराधना शाश्वती ओली इसी माह में आरंभ हो रही है। प्रथम तीर्थंकर परमात्मा से लेकर वर्तमान चरम तीर्थंकर परमात्मा भगवान श्री महावीरस्वामीजी के शासन तक जिस तप साधना का बोलबाला है वह आयंबिल तप ही है। कहते है न कि जो तपता नहीं वह पकता नहीं है, सोना भी तपने के बाद ही निखरता है, रोटी भी तपने के बाद ही ग्रहण करने के योग्य बनती है, आत्मा को तपाने के बाद ही परमात्मा की और कदम बढ्ते है, संसार में कुछ पाने के लिये तपना पड़ता है। इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, वैज्ञानिक, मैनेजर कौन नहीं है जिसने तपस्या नहीं की है, आत्म तत्व को पाने के लिये आयंबिल तप से श्रेष्ट तप अन्य कोई तप नहीं है, आयंबिल तप कर्म निर्जरा का सर्वोत्तम साधन है, शरीर और आत्मा अलग होने के बाद भी शरीर में रहा हुआ आत्मतत्व तप के कारण शुद्धता को प्राप्त करता है।

तपस्या के द्धारा अद्‌भूत शक्ति को भी साधा जा सकता है, अनुभव किया जा सकता है, आयंबिल तप से भी ऐसी ही शांति मिलती है जो इच्छाओं को भी रोककर हमारी आत्मा के प्रति जाग्रति को सजग करती है, तप भोग को निरोध करता है, ऐसा करने में आयंबिल आराधना बेजोड़ है जो शक्ति, आत्मबल आयंबिल तप से प्राप्त होता है, वह अद्‌भूत है। तप मुक्ति का अंतिम जतन है।

महापुरूषों ने ही नहीं इस संसार के साधारण से साधारण मनुष्य ने भी तप की इस पुण्य प्रक्रिया को हमेशा ही आगे बढ़ाया है जो मनुष्य अपने साथ सबके परमार्थ का ध्यान रखकर उसकी ओर अपनी श्री वृद्धि और सौंदर्य (आत्मा) निखारने का प्रयत्न न करें तो फिर कुल और जाति और धर्म का ऋण हम कैसे उतारेंगे? अतः आयंबिल तप के मार्ग पर चलकर हम आत्महुति के द्धारा स्व पर कल्याण के लक्ष्य को पा सकते है।

तो आईये! हम आयंबिल तप की इस अविच्छन परम्परा को आगे बढ़ाते हुए इसका आलंबन ले एवं अपने साथ जगत मात्र के कल्याण का भाव जाग्रत करें। यहीं शुभभाव!

- डॉ. सुभाष जैन

अहिंसा व्रत

*आ.श्री विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

गृहस्थ जीवन को धर्माचरण युक्त पवित्र रखने के लिये जिन आचार-नियमों का कथन किया गया है, उन्हें ''श्रावक व्रत'' कहा जाता है।

सबसे पहला अहिंसा अनुव्रत है। प्राणधारी जीव के प्राणों की घात करना हिंसा है। यह हिंसा दो प्रकार से होती है-आघात से तथा प्रतिबंध से। दूसरों पर ऐसी घातक चोंट आदि करना जिससे दिखाई देना, सुनना आदि बंद हो जाये, अंग भंग हो जाये, आघात है। किसी के भोजन, पानी, हलन-चलन आदि प्रवृत्तियों में बाधा पहुंचाना प्रतिबंध है।

इस जगत में दो प्रकार के जीव है- 1- सूक्ष्म, 2- स्थूल। सूक्ष्म जीव संपूर्ण जगत में भरे हैं। वे चर्म चक्षुओं से दिखाई नहीं देते। जो आंखों से दिखाई देते हैं, वे स्थूल जीव हैं। इनके भी दो प्रकार हैं- 1- स्थावर- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति जो एक जगह स्थिर रहते है। 2- त्रस- जो अपने सुख-दुःख के लिए इधर-उधर हलन-चलन करते है, द्वीन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीव। गृहस्थ सूक्ष्म जीवों की हिंसा का त्याग नहीं कर सकता। स्थावर जीव को जैसे पृथ्वी, जल आदि की हिंसा को मर्यादित कर सकता है। अत्यावश्यक होने पर ही उनकी हिंसा करता है। त्रस जीवों में भी निरपराध निर्दोष जीवों संकप्पपूर्वक द्वेष बुद्धि से हिंसा नहीं करना। यह प्रथम अहिंसा अणुव्रत है।

चार उपभेद-

हिंसा के अन्य दृष्टि से चार उपभेद किये है- 1- संकल्पी हिंसा-मारने के इरादे से निर्दोष जीवों की हिंसा करना। 2- आरंभी हिंसा- घर, भोजन आदि आवश्यक कार्यों के लिये होने वाली हिंसा। 3- उद्योगिनी हिंसा- व्यापार, उद्योग आदि के लिये होनेवाली हिंसा। 4- विरोधिनी हिंसा- किसी ने आक्रमण किया तो अपनी आत्मरक्षा के लिये उसका प्रतिकार करना। इनमें भी श्रावक केवल संकल्पी हिंसा का ही त्याग करता है तथा अन्य तीनों प्रकार की हिंसा की मर्यादा करता है।

अहिंसा अणुव्रत में श्रावक त्रस जीवों की संकल्पपूर्वक हिंसा का त्याग करता है।

अहिंसा का महान फल- हरिबल नामक एक मच्छीमार था। वह रोज सुबह नदी पर जाकर जाल फैंककर मछलियां पकड़ता था। एक दिन नदी तट पर तप करते खड़ेएक मुनिराज मिल गये। उन्होंने हरिबल को 'जीवदया' का महत्व समझाया और हिंसा के कटु फल बताये। हरिबल बोला- मैं मछली पकड़ना छोड़ दूं तो कैसे आजीविका चलेगी। आखिर मुनि के समझाने से उसने एक नियम लिया- पहली बार जो मछली जाल में फंसेगी उसे जीवित छोड़ दूंगा। पहले दिन पहले जाल में एक बड़ मच्छ फंसा। हरिबल ने उसके गले में एक कोड़ी बांधकर छोड़ दिया। दूसरी बार, तीसरी बार भी वही मच्छ फंसा। उसने दूसरी जगह जाल डाला। वहां भी वही मच्छ फंसा। संध्या तक उसके जाल में केवल वहीं मच्छ फंसता रहा। हरिबल उसको छोड़ ता रहा। उस दिन भूखा-प्यासा वह रात को घर भी नहीं गया। एक देवी के मंदिर में ही सोया रहा। इस जीवदया के पुण्य से उसे जीवन में ऐसे संयोग मिले कि एक राजकुमारी के साथ विवाह हो गया और जीवन में तीन बार मृत्यु के मुंह में जाते-जाते बचा। उसकी नियम दृढ़ता से देवता ने प्रसन्न होकर वरदान दिया और हरिबल मच्छी एक बहुत बड़ राजा बन गया। यह सब दया भगवती का चमत्कारी प्रभाव था।

पांच अतिचार- अहिंसा अणुव्रत के पांच अतिचार (व्रत में दोष लगने के कारण) है-

1- बन्ध-मनुष्य, पशु आदि जीवों को निर्दयतापूर्वक कठोर बंधन से बांधना।

2- वध-लोभ, क्रोध, द्वेष आदि दुर्भावनाओं के वश होकर पशु व अपने नौकर आदि किसी भी जीव पर घातक प्रहार करना।

3- छविच्छेद- किसी जीव के अंग काट देना, जैसे कुत्ता गधा आदि के कान व पूंछ काट डालना।

4- अतिभार- ऊंट, बैल, घोड़, गधा आदि मूक पशु तथा कुली, मजदूर आदि पर निर्दयतापूर्वक ज्यादा भार लादना, उन पर घोर अत्याचार है।

5-भक्तपान व्यवच्छेद- अपने आश्रित प्राणियों को समय पर भोजन, पानी नहीं देना, उनका खाना-पीना रोक देना, उन्हें भूखा रखना।

श्रावक इस प्रकार के क्रूर व्यवहारों से बचकर दया-संवेदना और करूणापूर्वक जीवन जीता है।

जीवदया का दिव्य प्रभाव-

* हाथी के भव में नन्हें खरगोश की दया के प्रभाव से मेघकुमार राजकुमार बना।

* मैतार्य मुनि ने क्रोध पक्षी के प्राणों की रक्षा कर मोक्ष प्राप्त किया।

* एक कबूतर (कपोत) को अभयदान देने से मेघरथ राजा का जीव शांतिनाथ तीर्थंकर बना।

* श्री मुनिसुव्रत भगवान एक घोड़े की अश्वमेध यज्ञ में बलि देने से रक्षा हेतु आठ योजन का विहार कर भृगुकच्छ पधार गये। अश्व की रक्षा की। वहां अश्वावबोध तीर्थ बना।

श्री कयावन्ना-चरित्रम्

* आचार्य श्री जयानंदसूरीश्वरजी म.सा.

गतांक से आगे....

तत्पश्चात अभयकुमार ने एक अत्यंत-रमणीय भवन को सुसज्जित कराकर उसके मध्य में समुचित आसन पर कयवन्ना शाह की अनुरूप और मनोहर मूर्ति को संस्थापित कर सर्वत्र नगर में पटह बजवाया कि- यह चार-मुखवाला महावीर साक्षात चिन्तामणी के समान सकल मनोवांछित देता है, इसलिये ही सभी आबाल-वृद्ध स्त्री और पुरूष यहां आकर देखें। एक तरफ प्रत्यक्ष फल दातृत्व और दूसरी ओर राज-शासन है इस प्रकार से समस्त ही बाल-वृद्ध स्त्री और पुरूष वहां पर गमनागमन करने लगे। उस अवसर पर पूर्व ही अभयकुमार और कयवन्ना शाह वहां आकर बैठ गये थे। क्रम से आनेवाले लोगों को देखता हुआ कयवन्ना शाह प्रथम उस वृद्धा को और बाद में पुत्र सहित उन चार स्त्रियों को देखकर पहचान लिया, परन्तु उनसे कुछ भी नहीं बोला किन्तु मौन ही रहा। वे भी उस मूर्ति को देखकर और थोड़ हंसकर उदासीनता को प्राप्त हुई। उसी अवसर वे चारों पुत्र उस मूर्ति को देखकर आलिंगन करते हुए हे पिताजी, हे पिताजी! इस प्रकार कहते हुए उसके वस्त्र को खींचने लगे। वहां एक पुत्र ने कहा कि- हे पिताजी! आज क्या हुआ है जिससे आप नहीं बोल रहे हो? अथवा नहीं हंस रहे हो? दूसरे पुत्र ने कहा कि- हे पिताजी! पहले आप मुझे क्षण-भर के लिये भी अपनी गोद में से अलग नहीं करते थे, इतने दिन आप कहां गये थे? तीसरे ने कहा कि हे पिताजी! दादी मुझे प्रति-दिन डरा रही है, आप उनको क्यों नहीं रोकते हो? चौथे पुत्र ने कहा कि आप मेरे बिना पूर्व कभी भी भोजन नहीं किया था, तो अब आप अकेले कैसे भोजन कर रहे हो? इस प्रकार कहते हुए वे चारों शिशु उस मूर्ति को उठाने लगे थे, और हे पिताजी! उठो और अपने घर चलो, हम आपको यहां पर नहीं बैठने देंगे इस प्रकार वे कहने लगे थे। इस आश्चर्य को देखने से आश्चर्य-चकित हुए अभयकुमार ने निश्चय किया कि सत्य ही ये शिशु और ये स्त्रियाँ कयवन्ना शाह की ही है तत्पश्चात उस वृद्धा और उन स्त्रियों को एक अलग भवन में लाकर क्रोध सहित पूछा कि- अरे! ये शिशु किसके हैं? और ये स्त्रियां किसकी हैं? सत्य बोलो, जो असत्य कहोगी तो शूलिका की सजा दूंगा। यह सुनकर उस वृद्धा ने यथा-जात सर्व वृत्तांत को सत्य कहा उसके बाद अभयकुमार ने धन-भवन आदि सहित तथा पुत्र सहित उन स्त्रियों को कयवन्ना शाह को दिलायी परन्तु कृपालु कयवन्ना शाह ने यह वृद्धा दुःख को प्राप्त न करें इस प्रकार की बुद्धि से धन आदि उसे ही दिया। तत्पश्चात सात रमणीयों के साथ सुख का अनुभव करता हुआ कयवन्ना प्रतिदिन सज्जनों की प्रीति के समान संपत्ति को बढ़ाने लगा था और जहां पुण्य है वहां सर्व ऐसे ही होता है। क्योंकि- जिस पुरूष के द्धारा धर्म रूपी वृक्ष का आरोपण कर उसे बढ़ाया, उससे ऐसा फल प्राप्त होता है, जैसे कि- सुकुल में जन्म, अनेक प्रकार की विभूतियाँ, प्रिय-जन के समागम से निरंतर सुख की अनुभूति, राज-सभा में मान्यता और निर्मल यश। इसलिये सर्व ही धर्म की आराधना करें।

अब एक बार चरम तीर्थंकर श्री महावीर प्रभु सकल पृथ्वीतल को पवित्र करते हुए राजगृह नगर में पधारें, वहां देवताओं के द्धारा समवसरण की रचना की गयी। तभी वन-पालक ने वीर आगमन की श्रेणिक राजा से विज्ञप्ति की। उसे सुनकर हर्ष के अतिरेक से पुलकित शरीरवाला हुआ राजा वर्धापनक को पारितोषिक देकर अंतःपुर के साथ, अनुचर और प्रधान आदि वर्ग से अनुसरण किया गया प्रभु के वदन के लिये चला। राजा के पीछे नगर-निवासी नर-नारीगण आबाल-वृद्ध तथा सात प्रेयसीयों के साथ प्रमुदित हुआ कयवन्ना शाह भी चला। वहां पर आये राजा आदि क्रमशः प्रभु को तीन प्रदक्षिणा देकर वंदन किया और यथोचित स्थान पर बैठें। तब मेघ के समान गंभीर वाणी से भगवान ने धर्म-देशना प्रारंभ की-

हे भव्य प्राणियों! इस संसार में सर्व असार ही है। जो कि प्राणी पुत्र-स्त्री, धन-परिवार आदि देख-देखकर आनंदित होते हैं, उसे भी परिणाम में दुःख का कारण ही जानों। इसलिये ही ऐसे विद्युत समान जगत में भव रूपी समुद्र में जहाज प्रायः तथा स्वर्ग-अपवर्ग को देनेवाले ऐसे धर्म की ही लोग प्रशंसा करते हैं। महा-सागर आकारवाले इस लोक में जो प्राणी बार-बार भ्रमण करते हुए सैकड़ें सुकृतों से और बड़े प्रयास से भी दुःप्राप्य इस मनुष्य ने को जैसे निर्धन पुरूष भूमि में रही हुई निधि के समान प्राप्त कर स्व-कल्याण को नहीं करते हैं, वे जीव प्रांत में पश्चाताप को प्राप्त करते हैं। इसलिये ही अति-भीषण अग्नि-ज्वाला से स्पर्शित हुए घर के समान शोकमोह, जरा, व्याधि से आकुलित बने इस संसार में भव्य-आशयवाले प्राणियों के द्धारा क्षण भी नहीं रहना चाहिये और वहां चिन्तामणि के समान अति-दुष्प्राप्य इस मनुष्य-जन्म को प्राप्त कर विज्ञ-पुरूषों के कभी

भी प्रमाद नहीं करना चाहिये। बड़े कष्ट से प्राप्त कोटि द्रव्य को जैसे महा-मूढ़ लोग एक काकिणी के लिये छोड़ते हैं, वैसे ही कितने प्राणी तीर्थंकरों के द्वारा प्ररूपित, शाश्वत, विशुद्ध और नित्य आनंद तथा सुख-प्रद आर्हत धर्म को छोड़कर क्षणिक वैषयिक सुख की वांछा करते हैं। जो यह विश्व-मोहिनी लक्ष्मी प्रेयसी लग रही है, वह समुद्र के जल-तरंग के समान चपल दिखाई देती है और प्राणियों का आयु भी कुश के अग्र भाग में लगे जल-बिन्दु के समान है और सौन्दर्य भी विद्युत-विलास के समान ही है और इस प्रकार आधिपत्य भी स्वप्न-लीला ही लग रहा है तथा जो सांसारिक सुख है वह भी संध्याभ्र-राग के समान क्षण-भंगुर ही है, इसलिये सभी सर्व प्रपंच को छोड़कर सुख-प्रद धर्म की ही आराधना करें।

भगवान की अमृतमयी देशना को पी-पीकर द्वादश पर्षदा किसी अकथनीय प्रमोद को ही प्राप्त करने लगी थी और यथाशक्ति बहुत से भव्य-प्राणियों ने व्रत-नियम आदि भी ग्रहण किये तथा देशना के अंत में कयवन्ना शाह ने प्रभु को इस प्रकार पूछा कि- हे स्वामी! मैंने भवान्तर में कौन-सा पुण्य किया था जिससे मुझे इस जन्म में ऐसी संपत्ति उत्पन्न हुई है? तब भगवान कहने लगे कि-

हे श्रेष्ठी! यह सर्व ही सुपात्र-दान का ही प्रभाव है। तुम पूर्व जन्म में शालिग्राम नगर में किसी ग्वाले के पुत्र हुए थे। पिता के मरण प्राप्त हो जाने पर तेरी माता रंकता को प्राप्त हुई। एक दिवस किसी पर्व दिन में सभी के घरों में क्षीर-पाक बना था और तूने माता से पायस की याचना की, जो कि निर्धनपने से तेरी माता कुछ भी पकाने में समर्थ नहीं हुई थी, फिर भी पुत्र के वात्सल्य से पार्श्ववर्ती लोगों के घरों से दूध, शक्कर आदि उन-उन सामग्री को लाकर और पकाकर तथा थाली में पीरोसकर तेरी माता किसी हेतु से कहीं पर गयी थी। उस अवसर पर कोई मुनि गोचरी के लिये वहां आकर धर्म-लाभ दिया और उनको देखकर तूने बड़े हर्ष से प्रचुर उस क्षीर-पाक को उन्हें दिया और दूध की बहुलता से शीघ्र ही उनके पात्र में वह अधिक पड़ने लगा, फिर भी तुम्हारे मन में लेश-मात्र भी खेद नहीं हुआ था, किन्तु महान हर्ष ही उत्पन्न हो रहा था। उन मुनि के धर्म-लाभ को देकर चले जाने पर उस पात्र को चाट रहे अपने पुत्र को देखकर आयी हुई माता मन में इस प्रकार सोचने लगी थी कि-अरे! मेरे पुत्र को कितनी क्षुधा थी जो इसने यह सर्व ही खा लिया है पश्चात अल्प ही काल में स्व-आयु के क्षय हो जाने पर तुम मरकर इस भव में धनदत्त-श्रेष्ठी के पुत्र हुए हो। वह तुम कयवन्ना हो जिसने पूर्व में कृत सुपात्र-दान की महिमा से इस जन्म में अपरिमित लक्ष्मी प्राप्त की है।

इस प्रकार भगवान के मुख से अपने पूर्व-भव के वृत्तांत को सुनकर उत्पन्न हुए वैराग्य से परिपूर्ण और अंजलि जोड़कर कयवन्ना भगवान को इस प्रकार कहने लगा कि- हे भगवन्! मैं अब इस संसार को असार और महा-घोर फल देनेवाला जान रहा हूं, इसलिये जैसे मैं इसे सुख-पूर्वक तैरूँ वैसे आप कृपा लाकर शीघ्र करो। प्रभु ने भी योग्य मानकर संसार रूपी वन के विच्छेद विधान में दक्ष और अभिरूप दीक्षा देना स्वीकार किया। उससे प्रमोद से युक्त बना कयवन्ना प्रभु को वंदन कर और गृह में आकर पुत्रों को सर्व समर्पित कर और प्रेयसीयों के समीप में आकर इस प्रकार से कहने लगा कि-हे प्रेयसीयों! इस संसार में बड़ा ही क्लेश दिखाई देता है, इसलिये ही मैं सकल दुःखों को क्षय करनेवाली और शिव सुख को देनेवाली ऐसी दीक्षा को लेने की इच्छा कर रहा हूं। तब उन्होंने कहा कि- हे स्वामी! हम भी उसी को चाहती हैं। इस प्रकार दीक्षा ग्रहण की इच्छावाले कयवन्ना ने सात प्रेयसीयों सहित सकल दीन-अनाथ लोगों को बहुत दान देता हुआ महोत्सव के साथ वीर-प्रभु के पास में दीक्षा ग्रहण की। निरतिचार संयम का परिपालन कर और विविध दुष्कर तप का आचरण करते हुए तथा प्रभु के साथ विहार करते हुए ध्यान रूपी अग्नि से पूर्व के एकत्रित किये हुए कर्मरूपी काष्ठ को भस्मसात कर कयवन्ना महा-मुनि ने कैवल्यज्ञान प्राप्त किया। पश्चात शिव-सुख का अनुभव किया। अहो! ऐसा अद्‌भूत प्रभावशाली सुपात्र-दान सभी को प्रशंसनीय और नमस्करणीय है और सभी सुख-इच्छुक भव्य-प्राणियों के द्वारा वह अवश्य ही सहर्ष करना ही चाहिये, इति शम्।

मैं यतीन्द्र-विजय ने पंडित-जनों के सुख के लिये इस प्रख्यात और निर्मल चरित्र को वि.सं. 1985 द्वितीय श्रावण शुक्ल प्रतिपदा गुरूवार के दिन संपूर्ण किया है।

युवा- *रामतीर्थ विदेश जा रहे थे। जिस जहाज पर सवार थे, उस पर एक बूढ़ा जर्मन चीनी भाषा सीख रहा था। तीन दिनों तक बूढ़े की सीखने की तल्लीनता देखकर रामतीर्थ ने पूछा-*

90 साल की उम्र में यह भाषा सीखकर क्या करेंगे? मौत करीब आ रही है। बूढ़े जर्मन ने उत्तर दिया- मौत तो जन्म के समय से ही करीब रहती है। लेकिन मैं जब तक सीख रहा हूं, मुझे मरने का ख्याल नहीं आता। मौत जब आनी होगी, आएगी। मैं मरने के भय से सीखना बंद नहीं कर सकता, क्योंकि जब तक मैं सीख रहा हूं, युवा हूं।

तीर्थाधिराज शत्रुंजयगिरि के पंद्रहवें उद्धार का अपूर्व इतिहास

गतांक से आगे...!

लग्न-मुहूर्त की घड़ी आ पहुंचने पर श्री सिद्धसेनसूरि सावधान होकर ज्योतिषयों के द्धारा बताये गये प्रतिष्ठा के लग्न को साध रहे थे। शुभलग्न में जिन प्रतिमा को लाल वस्त्र द्धारा आच्छादित कर चंदन और सुगंधी द्रव्य द्धारा पूजा की, उस समय समरसिंह पौषधशाला में जाकर नंदावर्त का पट्ट सौभाग्यवती स्त्री के सिर पर रखवाकर चैत्य में लाए। चारों ओर वाद्ययंत्र बजन लगे। लोग जिनगुण गाने लगे। मंडप की वेदिका पर नंदावर्त के पट्ट को प्रतिष्ठित किया गया। उसे बिछाकर यथाविधि कर्पूर द्धारा सूरीजी ने पूजा की। फिर लग्न समय हो गया है ऐसा जानकर चांदी की कटोरी और सोने की शलाका हाथ में लेकर श्री सिद्धसूरीजी महाराज ने ऋषभजिन के प्रतिबिंब से वस्त्र खिंचकर उसके नेत्रों में सूरमा और शर्करा के मिश्रणवाला अंजन किया और विक्रम संवत् 1371 की माघ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी, पुष्य नक्षत्र और सोमवार के दिन मीन लग्न में नाभिनंदन श्री ऋषभदेव भगवान की प्रतिष्ठा की। प्रथम जावडशाह के उद्धार के समय श्री वज्रस्वामी ने प्रतिष्ठा की थी और उसके बाद यह प्रतिष्ठा हुई। श्री सिद्धसेनसूरि की अनुज्ञा से मुख्य प्रासाद के ध्वजदंड की वाचनाचार्य नागेन्द्रसूरि ने प्रतिष्ठा की। सभी पुत्रों के साथ देशलशाह ने चंदन और बरास द्धारा आदिनाथ प्रभु के शरीर पर विलेपन कर उनके समीप पकवान प्रमुख नैवेद्य रखे। उस समय वाद्ययंत्र बजने लगे। आनंद से कई लोग नृत्य करने लगे। मंगल गीत गाये जाने लगे। अनेक प्रकार से उस समय भव्यजनों ने महोत्सव किया। अब देशल शाह ध्वजदंड की स्थापना को तैयार हुए। श्री सिद्धसूरी जो कि हाथ का सहारा देकर पुत्र सहित देशलशाह ध्वजदंड के साथ शिखर पर चढ़ गये। वहां सूत्रधारों द्धारा दंड की स्थापना की और दंड के साथ ध्वजा बांधकर याचकों को दान दिया तथा उसके पांचों पुत्रों ने धन की वृष्टि की।

देशलशाह ने तीन छत्र और दो चँवर आदिजिन के चैत्य में दिये। स्वर्ण दंड युक्त और चांदी के तंतुओं से बने हुए दो अन्य चँवर दिये। मनोहर स्नात्र कुंभ, चांदी की आरती, मंगल दीपक भी दिया। सभी जिनेश्वरों की स्नात्र विधि की। सभी जिनों की चंदनादि द्धारा पूजा की, फिर आचार्य महाराज श्री सिद्धसेनसूरी के चरण में वंदन कर अन्य मुनियों की भक्ति पान द्धारा की और यह प्रतिलाभ लेकर प्रातःकाल अपने पुत्र सहित देशलशाह ने उद्यापन किया पश्चात भाट, चारण, याचक, दीनदुःखीजनों को भोजनदान आदि से सत्कार करते हुए दश दिन तक उत्सव मनाया। ग्यारहवें दिन प्रातःकाल सूरीजी महाराज के स्वहस्त से प्रभु का कंगन खुलवाया और स्वयं द्धारा बनवाए गये अलंकार देशलशाह ने प्रभु को चढ़ाए।

देशलशाह ने संघ सहित आदि जिनकी आरती उतारना प्रारंभ किया। उनके दोनों ओर साहण और सांगल चँवर धारण कर और सामन्त और सहजपाल कलश धारण कर खड़े हुए फिर समरसिंह ने पिता के नौ अंगों पर चंदन का तिलक किया। ललाट पर तिलक कर अक्षत लगाकर गले में फूलों की माला पहनाई। अन्य संघ के व्यक्तियों ने भी चंदन से चरण पूजा कर भाल पर तिलक कर, आरती की पूजा कर उनके गले में माला पहनाई। देशलशाहन ने आरती उतारकर मंगलदीप ग्रहण किया। भाट उस समय देशल तथा समरसिंह की बिरूदावली गाने लगे। उनको प्रचुर दान दिया गया। पश्चात् कर्पूर द्धारा मंगलदीप प्रज्वलित कर बजते हुए वाद्ययंत्रों के साथ मंगलदीप स्तुति बोलकर हाथ जोड़कर शक्रस्तव द्धारा आदिजिन की स्तुति की। सूरीजी महाराज ने भी उसके बाद आदिजिन की अमृताष्टक द्धारा स्तुति की।

प्रतिष्ठा महोत्सव-अभिष्ट कार्य की सिद्धि से उत्पन्न हुए आनंद वश देशल ने नृत्य किया और स्तुति की फिर युगादि प्रभु से विदा मांगी, देशल कर्पदियक्ष के मंदिर में गए, वहां नारियल और लापसी के द्धारा यक्ष की पूजा की उसके मंदिर पर ध्वजा चढ़ाकर धर्म कार्यों में सहायता करने की प्रार्थना की।

संघनायक देशलशाह शत्रुंजय तीर्थ में बीस दिन ठहरकर पुत्र सहित श्री सिद्धसेनसूरी के साथ पर्वत पर से नीचे उतरने के लिये तैयार हुआ। सभी अरिहंतों को नमस्कार कर, प्रातःकाल में पर्वत से नीचे उतरकर संघ के निवास स्थान पर आये और सुंदर भोजन द्धारा मुनिवरों से प्रतिलाभ लेकर परिवार सहित श्री संघ को भक्तिपूर्वक भोजन करवाया।

इस संघ में आचार्य, वाचनाचार्य, उपाध्याय आदि पदस्थ पांच सौ मुनि थे, उन्हें तथा अन्य दो हजार मुनियों की अनेक प्रकार के वस्त्रों और उचित वस्तुओं के द्धारा भक्ति की। समरसिंह ने सात सौ चारण, तीन हजार भाट, हजार से अधिक गायकों को धन वस्त्रादि का प्रचुर दान दिया। वाटिकाओं के मालियों को धन देकर पुष्पपूजा के लिये बगीचों को खरीदकर उनका नवनिर्माण करवाकर पूजा करनेवाले तथा गायकों को वहां सेवा भक्ति के लिये नियुक्त किया। इसके बाद देशल शाह ने उज्जयन्तगिरि (गिरनारजी) तीर्थ की यात्रा के लिये संघ सहित प्रयाण किया। संघ के साथ मार्ग में अनेक तीर्थों की यात्रा तथा धर्म प्रभावना कर पाटण की ओर श्री संघ के पहुंचने पर सोईल गांव में, पत्तनवासी जन उस संघ के सन्मुख आए। संघवी देशल तथा समरशाह के चरणों को चंदन और स्वर्ण पुष्प से पूजा, गले में पुष्पमाला पहनाई, मोदक आदि भोजन से स्वागत किया।

समस्त वर्ण के लोग स्वागत हेतु आए थे, उन सभी का संघपति ने तांबूल, भोजन, वस्त्र आदि से सन्मान किया। पश्चात शुभ मुहूर्त में नगर प्रवेश करते समय समरशाह सामैया में घोड़े पर और देशलशाह पालकी पर आरूढ़ हुए। मृदंग, भेरी आदि वाद्ययंत्र की ध्वनि के साथ नृत्य करते हुए, नगरजनों ने भी नगर को ध्वज-पताका आदि से सुशोभित बनाया हुआ था समरशाह ने नगर प्रवेश किया। उसके पीछे संघपति ने देवालय और गुरूवर्य के साथ पाटण में प्रवेश किया। उस दिन नगरजनों से यात्रा की प्रशंसा सुनते हुए, मंत्रणा ग्रहण करते हुए अनुक्रम से अपने निवास पर पहुंचे। वहां कुमारिकाओं ने देशल तथा समरशाह के ललाट पर अक्षत युक्त तिलक किया। गीत, मंगलादि कर श्री पंचपरमेष्ठि का स्मरण करते हुए देशलशाह ने अपने घर को सुशोभित किया।

देशलशाह ने आदि जिन को कपर्दीयक्ष के साथ देवालय से उतारकर घर के देरासर में स्थापित किया। नगरजनों का तथा याचकों का वहां भी विशेष सन्मान कर विदा किया। सहजपाल आदि पुत्रों ने अनुक्रम से विनयपूर्वक पिता के चरणों का दूध से प्रक्षालन किया। तीसरे दिन शाह ने देव भोज करवाया, उसमें इच्छानुसार भक्तपान आदि द्वारा साधुओं की भक्ति की। नगर के पांच हजार मनुष्यों को भोजन करवाया। संघपति देशलशाह ने इस तीर्थोद्धार में सत्तावीस लाख सत्तर हजार (27,70,000) द्रव्य का व्यय किया था। इस कार्य को कर शाह अपनी आत्मा को धन्य मानते हुए नित्य धर्मकार्य में तत्पर होकर गृहकार्य में व्यस्त हो गए।

सं. 1375 में देशलशाह ने इसके पश्चात भी सात संघपति, गुरू और दो हजार मनुष्यों के साथ सभी महातीर्थों की यात्रा की थी। पूर्व की भांति दो यात्रा की थी। उन यात्रा में भी ग्यारह लाख से अधिक (रू. 11,00,000) का व्यय किया था। उस समय सोरठ देश में म्लेच्छों से बंधे हुए समस्त जैनों को मुक्त करवाकर समयमेघ बने थे।

श्री सिद्धसूरि महाराज ने अपनी शेष आयु तीन महिने की जानकर, देशलशाह से कहा कि आपकी आयु भी एक महिना शेष है, तो उकेशपुर (ओशीया) में जाकर मैं स्वयं कक्कसूरि को मुख्य चतुष्किका में अपने पद पर स्थापना करना चाहता हूं यदि तुम्हारी भी इच्छा हो तो साथ चलो। जहां देवताओं के द्वारा बनाई गई वीर भगवान की प्रतिमा स्थापित है ऐसा वह उत्तम तीर्थ है, यह सुनकर देशलशाह भी समस्त सामग्री तैयार करवाकर संघ और सूरि सहित वहां गये। मार्ग में देशलशाह का स्वर्गवास हो गया।

श्री सिद्धसूरिजी ने माघ पूर्णिमा को कक्कसूरि को अपने हाथों मुख्य स्थान पर आरूढ़ किया।

दिल्ही के सार्वभौम कुतुबुद्दीन बादशाह ने समरसिंह के गुण सुनकर आदेश भेजकर समरसिंह को दर्शन हेतु बुलवाया। समरशाह भी योग्य सामग्री को एकत्रित कर दिल्ली की ओर रवाना हुए। दिल्ली पहुंचने पर बादशाह ने मान सहित बुलवाकर सन्मान किया। बादशाह के समक्ष विविध भेंट सौगात रखकर नमन करते हुए समरसिंह की ओर बादशाह ने उत्कंठा से उनकी ओर देखा। संतुष्ट हुए बादशाह ने स्वयं प्रसाद देने के साथ सभी देश के व्यापारियों में मुख्य पद दिया। वहां रहते हुए बादशाह के स्नेह प्रसन्न होते हुए कुछ दिन वहां बीत गये, गवैये के कविता गाने पर एक बार उपहार में समरशाह ने एक हजार टंक उसे दिये। कुतुबुद्दीन के बाद ग्यासुद्दीन बादशाह बना, उसने भी कुतुबुद्दीन की भांति समरसिंह को पुत्रवत् स्वीकार किया। बुद्धिशाली समरसिंह ने बंदी के रूप में पकड़े गए पांडु देश के राजा वीरवल्लभ को बादशाह से मुक्त करवाकर उसके देश में पुनः राजगद्दी पर बैठाया इस कारण उसे ''राज संस्थापनाचार्य'' नामक उपाधि मिली।

बादशाह के आदेश से धर्मरत्न समरशाह ने जिनेश्वर की जन्मभूमि मथुरा और हस्तिनापुर में श्री जिनप्रभसूरि के साथ संघपति बनकर संघ के सहित तीर्थयात्रा की।

उस समय तिलंगदेश में ग्यासुद्दीन का पुत्र उल्लखान सूबेदार के पद पर था। उसने भी समरसिंह को विश्वासपात्र अपना भाई समझकर तिलंगदेश का सूबेदार बनाया। वहां भी तुर्कों के बंदी बने हुए ग्यारह लाख लोगों को मुक्त करवाया। अनेक राजा राणा, व्यापरियों पर समरसिंह ने बहुत उपकार किया था।

समरशाह ने सभी देशों से बुलवाकर श्रावकों के कुटुम्बों को तिलंगदेश में बसाया, उरंगलपुर में जिनालय बनवाकर जैन शासन का साम्राज्य एक छत्र कर न्याय नीति से तिलंगदेश की रक्षा कर पूर्वजों को गौरवान्वित किया था और अंत तक धर्मसाधना करते हुए स्वर्ग सिधारे।

इस उद्धार के ऐतिहासिक प्रमाण-

1- देशलशाह द्वारा किये गए उद्धार के कुछ स्मृति चिन्हों के रूप में प्रमाणित तीन लेख श्री शत्रुंजय की बड़ी टूंक में मिलते है।

1- कुलदेवी सच्चिकादेवी की मूर्ति के ऊपर-

2- सपत्नी सं. आसाधार देशल के बड़े भाई की मूर्ति पर,

3- राणा महीपालदेव (आरासण की खान के स्वामी) की मूर्ति पर है। (देखें गुर्जर काव्य संच और गायकवाड़ ओरिएं, सीरीज द्वारा प्रकाशित)

2- समरशाह के स्वर्गवास पश्चात वि.सं. 1404 में उनक धर्मपत्नी के साथ की एक मूर्ति उनके पुत्र सालीग और सज्जनसिंह द्वारा बनवाई गई और कक्कसूरि के शिष्य देवगुप्तसूरि प्रतिष्ठित की गई थी, जो वहां देखने में आती है।

गुरूवर मेरे लिये तुम कौन हो!

कैसे बताऊँ हे गुरूवर मैं तुम्हें, तुम मेरे लिये कौन हो
तुम धड़कनों का गीत हो जीवन का संगीत हो
तुम जिंदगी तुम बंदगी तुम रोशनी तुम ताजगी
हर खुशी प्यार हो तुम प्रीत हो मनगीत हो
आँखों में तुम ख्वाबों में तुम निंदो में तुम यादों में तुम
तुम हो मेरी हर बात में, तुम हो मेरी हर साँस में
तुम सुबह में तुम शाम में, तुम सोच में तुम काम में
मेरे लिये पाना भी तुम मेरे लिये खोना भी तुम।
मेरे लिए हंसना भी तुम मेरे लिये रोना भी तुम।
मेरे लिए जगना भी तुम मेरे लिये सोना भी तुम।
जाऊँ कही देखु कहीं तुम. हो वहां तुम हो वही।
कैसे बताऊँ मैं तुम्हें. तुम बिन गुरूवर मैं कुछ नहीं।।
कैसे बताऊँ मैं तुम्हें ,मेरे लिए तुम कौन हो....
ये जो तुम्हारा रूप है आध्यात्म की ये धूप है।
चंदन सी निमति काया छाया छागन बहती है
जिससे ज्ञान की अगन
ये ज्ञान त्याग तपस्या तेरे प्रवचन से है रोशन चमन
चेहरे पे सिमटा तेज है वाणी में भी क्या ओज है।
नदियों सा ये बहाना तेरा तेरी गुरूवर क्या सोच है।
कैसे बताऊँ मैं तुम्हें मेरे लिए तुम कौन हो....
मेरे लिए तुम धर्म हो इंसान हो तुम्ही ईबादत हो मेरी
तुम्हीं तो चाहत हो मेरी, तुम्हीं मेरा अरमान हो।
ताकता हूं मैं जिसे हर पल, तुम्हीं तो वो तस्वीर हो
तुम्हीं मेरी तस्वीर हो, तुम्ही ही मेरी तकदीर हो।
तुम्ही सितारा हो मेरा तुम्हीं नजारा हो मेरा।
यू ध्यान में मेरे हो तुम, जैसे हो मुझे घेरे हो तुम।
पूरब में तुम पश्चिम में तुम उतर में तुम दक्षिण में तुम।
कैसे बताऊं तुम कौन हो तुम....
सारे मेरे जीवन में तुम हर पल में तुम हर दिन में तुम
मेरे लिए रास्ता भी तुम, मेरे लिए मंजिल भी तुम।
मेरे लिए सागर भी तुम, मेरे लिए साहिल भी तुम।

मैं देखता बस तुमको हूं मैं सोचता बस तुमको हूं।
मैं जानता बस तुमको हूं मैं मानता बस तुमको हूं।
तुम मेरी पहचान हो
कैसे बताऊं तुम कौन हो
ईश्वर हो तुम मेरे लिये
मेरे लिए तुम भगवान हो
कैसे बताऊँ मैं तुम्हें
गुरूवर मेरे लिए तुम कौन हो

नवरत्न को नमन् * मृदु सुनू नमि

तुझे सूरज कहूं या चंदा
गुरूदेव, मुझे तुम्हारी याद सताती सदा।
तुमने रोशन किया जगसारा जगसारा।
त्याग, तपस्या, जाप करके उपदेश दिया प्यारा।
मालवा, गुजरात, राजस्थान आदि में विचरण
कर जिनशासन का डंका बजाया।
परस्पर प्रेम, सहृदयता, सदाचार का
पाठ पढ़ाया। शास्त्रज्ञ वचन समाचारी
का शिष्यों, प्रशिष्यों को बोध कराया।
जिनाज्ञानुसार जीवन जिया जिलाया
सिंह की तरह संयम लिया,सिंह की तरह पालन किया।
शुभध्यान में अप्रमत्त रहते शुभध्यान में स्वर्ग सिधाया।
माह वदी5 को चैन्नई में धरा को धन्य किया
सब भक्तों को महा दुःख सागर में डूबोया।
आयंबिल पर आयंबिल तपकर''तप सम्राट'' कहलाया
शरीर को नहीं साधा आत्म कल्याण आधारा
राजगढ़ नंदन कोटि-कोटि वंदन हमें भाया।
समाधि मंदिर पर फूल चढ़ाने सेवक आंसू लाया।
कर्म-कर्म कहते, रायरक सबको इसने नचाया।
नमि-नमि कहते सब जन ''मालव भूषण'' पद पाया।

मैं नंदिषेण (सेवामूर्ति)

* पू.आ.श्री विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

बचपन से ही मैं दर्पण का दुश्मन था। बेचारे दर्पण का कोई दोष नहीं था। दोष मेरा ही था.... पर मैं भी क्या करूं? मैं लाचार था। मेरा बीभत्स रूप दूसरों को तो क्या मुझे भी अच्छा नहीं लगता था। अब आप समझ गये होंगे कि मैं दर्पण का दुश्मन किस कारण से था? दूसरे लोग दर्पण में घंटों तक अपना मुंह देखते रहते हैं और खुश होते रहते है, जब कि मेरा और दर्पण का छत्तीस का आंक क़ा योग था।

कुरूपता के साथ दुर्भाग्य भी मिला हुआ था। कोई मेरे साथ प्रेम नहीं करता, प्यार नहीं जताता और तो ठीक दो मीठे शब्द भी कोई नहीं कहता।

मेरा सिर त्रिकोण था! उस पर जंगल के सूखे वृक्ष जैसे सीधे खुरदरे बाल! आंखें बिल्ली जैसी! नाक! मानो बड़ी अरगल। दांत मानो खेत का हल! गाल चपटे! पीठ खूंधवाली! हाथ-पैर डोर जैसे और पेट गागर जैसा।

अब आप ही कहो, कौन मुझे बुलायेगा?

हां.... बालकों के लिये तो मैं खिलौना ही बन गया था! मात्र बालकों के लिये ही नहीं, बड़े भी मुझे सताने में कोई कमी नहीं रखते थे।

सत्कार तो नहीं मिलता, मगर धिकार मिलता। फूल तो नहीं मिलते, किन्तु शूल मिलते। कुंकुम तो नहीं मिलता, मगर कीचड़ मिलता, ऐसे समय मनुष्य की कैसी हालत होगी, उसकी आप कल्पना कर सकते हैं? नहीं.... आप कल्पना भी नहीं कर सकते। शायद कल्पना कर सको तो भी अनुभूति तो नहीं कर सकते। आपकी कल्पना संवेदनहीन होगी। क्योंकि आपके स्वयं के ऊपर जब तक ऐसा कुछ बीते नहीं तब तक आप ऐसे दुःख की कल्पना भी कर नहीं सकते। 'घायल की गत घायल ही जाने?' यह बात ऐसे ही नहीं कहलाई।

जिसे कहीं से भी प्रेम नहीं मिलता, उसे भी मां-बाप की ओर से तो जरूर प्रेम मिलता है। पागल या गंदा चाहे जैसा बालक हो, लेकिन मां-बाप उस पर प्यार बरसाते ही है, किंतु मेरे नसीब में यह भी नहीं था। क्योंकि बचपन में ही मेरे माता-पिता का अवसान हो चुका था। वैसे तो मुझे उनके नाम का भी पता नहीं था, लेकिन बाद में लोगों द्धारा ज्ञात हुआ कि मेरी माता का नाम सोमिला और पिता का नाम सोमिल था।

मामा को मुझ पर दया (प्यार नहीं) आने के कारण उन्होंने मुझे अपने पास रखा था।

वहां रहकर मैं पशु की तरह काम करता और मुझे खाने-पीने का मिल जाता। मेरे लिये इतना तो काफी था।

इस तरह सुखपूर्वक मैं जीऊं वह दुनिया को कैसे पसंद आए?

लोगों ने कानाफूसी शुरू की : देख नंदिषेण ! तेरे मामा तुझ से पशु की तरह काम करवाएंगे, किन्तु अवसर आने पर दगा देंगे। अब तो तू जवान हो गया हैं। तुझे शादी-वादी करनी है या नहीं? ऐसे अविवाहित ही फिरना हैं? तेरी शादी करना हो तो तेरे मामा के लिये दायें हाथ का खेल हैं। क्योंकि उनकी सात लड़कियां है। यदि उसमें से एक भी लड़की का विवाह तेरे साथ करें तो हम मानें.... बाकी सब बातें! दूसरे कोई तेरे भविष्य का विचार नहीं करेंगे। यह तो हम हैं जो इतनी हित-चिन्ता कर रहे हैं।

मुझे लोगों की बात सच लगी। मैं अविवाहित फिरूं वह कैसे चले? विश्वास भी कौन करें? समाज में सम्मान भी क्या? जवान हुए इसलिए लग्न तो करने ही चाहिए न? परन्तु.... मेरे साथ लग्न करने कौन-सी लड़की तैयार होगी? यह मैंने नहीं सोचा! मनुष्य को यदि अपनी मर्यादा, अपनी योग्यता-अयोग्यता का विचार आ जाये तो तो तभी कल्याण हो जाये। लेकिन अधिकतर मनुष्य को अपनी कमजोरी, अपनी मर्यादा अपनी अयोग्यता दिखाई नहीं देती और योग्यता से अधिक अपेक्षा पूरी न हो तो हैरान-हैरान हुआ करता है।

लोगों की कानाफूंसी से अब मैं काम में उत्साह दिखाता नहीं था। इससे मेरे मामा ने मुझे वचन दिया कि मैं सात में से एक का तेरे साथ विवाह करवाऊंगा.... तू चिन्ता मत कर।

बस.... अब चाहिये ही क्या? अब मैं दुगुने उत्साह के साथ काम करने लगा।

लेकिन एक दिन मेरे सारे उत्साह का बाष्पी भवन हो गया। मेरे मामा ने सबसे बड़ी पुत्री को पूछा : 'बोल तू इस नंदिषेण के साथ विवाह करेगी?'

'नहीं' जवाब मिला।

क्यों क्या दिक्कत हैं?

ऐसे ढीमचे के साथ जिंदगी गुजारने के बजाय तो श्मशान अच्छा! मैं साफ-साफ कह रही हूं कि यदि आप मेरा विवाह इसके साथ करोगे तो दूसरे ही दिन मेरी लाश देखोगे। मुझे मार

डालनी हो तो ही इसके साथ मेरा विवाह कराना।

पुत्री के धड़के को सुनकर मामा स्तब्ध हो गये।

मामा ने दूसरी पुत्रियों को भी पूछा। सब की तरफ से ऐसा ही जवाब मिला।

अब मामा क्या कर सकते?

कर्णोपकर्ण यह समाचार मुझे मिले।

मैं जिंदगी से एकदम उदास हो गया। अब जीने का क्या मतलब? मामा की लड़कियां ही विवाह न करें तो दूसरा तो कौन करनेवाला? विवाह के बिना जीवन का आनंद भी क्या हैं?

मामा के घर रहना अब मुझे अच्छा नहीं लगा। मैं तो मामा का घर छोड़कर चल पड़ा। फिरते-फिरते रत्नपुर नगर में जा पहुंचा। नगर में दंपतियों की क्रीड़ा देखकर मेरा हृदय दुःखी होता था। ये लोग कितने भाग्यशाली है? मैं कैसा बदकिस्मत? संसार की एक भी स्त्री मुझे प्रेम करने तैयार नहीं।

मेरा हृदय मुझे कोई स्नेह करें-ऐसा झंखना कर रहा था, किन्तु प्रेम मांगने से थोड़े मिलता है? ढूंढने से नहीं मिलता है। जिसे बचपन में माता-पिता का प्रेम नहीं मिला। यौवन में पत्नी का प्रेम नहीं मिला.... उसका जीवन कोई जीवन है? वह तो रेगिस्तान है। रेगिस्तानी जीवन जीने से तो मरना अच्छा। मैं मरने के लिये तैयार हो गया। सचमुच प्रेम के अभाव में जीवन-पुष्प समय से पहले ही मुरझा जाता है।

नगर के बाहर रहे हुए टीले पर चढ़कर कूद मरने की तैयारी की। मैं कूदने की तैयारी में ही था तभी किसी ने मेरा हाथ पकड़.... वाह! क्या मीठा स्पर्श था? अरे भाग्यशाली! यह क्या कर रहा हैं? असंख्य देव जिस अवतार को प्राप्त करने के लिये तड़प रहे हैं उसे तू इस तरह पूरा कर देना चाहता हैं? मेरे कान में मधुर प्रेरणात्मक शब्द सुनाई पड़े। ओह! क्या इन शब्दों में मीठास थी? आज तक किसी ने मुझे प्रेम से पकड़ नहीं था। प्रेम से बुलाया नहीं था। आज जिंदगी में- वह भी मरने के समय पर-पहली बार प्रेम की उष्मा मिली। प्रथम बार प्रेमपूर्वक कोई बुलानेवाला मिला। प्रथमबार मुझे पता चला कि मेरी भी किसी को जरूरत है।

कौन होगा यह प्रेम देनेवाला? क्या होगा यह वात्सल्यभरा गर्म हाथ फिरोनेवाला? नहीं.... आप ऐसी कोई कल्पना करना ही नहीं। व्यर्थ में आप ऐसी-वैसी कल्पना कर अन्याय कर बैठेंगे।

यह प्रेम देनेवाले थे जैन मुनि! जिसको कहीं से भी प्रेम नहीं मिलता उसे जैन मुनि से मिलता हैं। ऐसा प्रेम मिलने से कितने ही भिखारी संप्रति महाराज बन सके हैं। कितने ही जुआरी सिद्धर्षि बन सके हैं। कितने ही दृढ़प्रहारी और अर्जुनमाली केवली दृढ़प्रहारी और केवली अर्जुनमाली बन सके हैं।

मैं यह प्रेम देनेवाले मुनि की वाणी सुन रहा था : वत्स! समय से पहले जीवन समाप्त क्यों करना चाहता हैं? मैं जानता हूं कि तुझे जीवन तो प्रिय है ही। विष्ठा के कीड़े को भी जीवन प्रिय होता है.... वह भी मरना नहीं चाहता.... ऐसा किमती जीवन तू नष्ट करने के लिये तैयार हुआ है उसका कारण भी मैं जानता हूं। तू किसी दुःख से छूटना चाहता हैं। तुझे ऐसा लगता हैं कि मर जाने के बाद संपूर्ण शांति! शमशान में शान्ति से तो जाना! कोई भी झंझट नहीं! सभी झंझट जिन्दे को ही करनी पड़ती है। मुर्दे को क्या झंझट? तू अगर ऐसा सोचता हो तो तेरी भूल हैं। मरने के बाद श्मशान में ही नहीं जाना है। श्मशान में तो शरीर जाएगा, किन्तु शरीर तू नहीं है। तू तो आत्मा है। आत्मा कोई दूसरे शरीर को धारण करेगी, संभव है कि तू यहां से मरने के बाद कुत्ता भी बने, सूअर भी बने, नरक में भी जाए, मानव या देव भी बने। यदि तेरे पाप कर्म हो तो वहां पर भी दुःख आ सकता है। ऐसे दुःख से छूटना सरल नहीं है। दुःख का मूल पाप है। पाप का तू नाश कर। दुःखों का अंत स्वयमेव हो जायेगा। दुःख डाल है। पाप मूल है। डाल काटने से क्या मिलेगा? मूल काट। आत्मघात नहीं, पर पाप-घात कर। जीवन को उन्नत बनाने का यही मार्ग है।

ऐसी प्रेरणा देते हुए मुनि की आंखों में से करूणा टपक रही थी। मैं उस करूणा की वृष्टि में स्नान कर रहा था, मैंने अपनी संपूर्ण आपबीती कह सुनाई।

मुनि ने मुझसे कहा- अन्य तरफ से हमें प्रेम मिले, यह हमारे हाथ की बात नहीं है, परन्तु हम दूसरों को प्रेम दें, यह हमारे हाथ की बात है। तेरे दुर्भाग्य कर्म का जबरदस्त उदय है। इसलिये ऐसा बना है। दुर्भाग्य कर्म का सर्जन भी पूर्वभव में तूने ही किया है। तूने पूर्वजन्म में किसी को भी प्रेम नहीं दिया तो इस जन्म में तुझे प्रेम कहां से मिलेगा? बोये ही नहीं तो आम कैसे मिले? शायद किसी की तरफ से प्रेम मिल भी जाये तो भी क्या हुआ? वह प्रेम दे तो हम सुखी! वह न दें तो हम दुःखी। ऐसे तो हमारे सुख की चाबी दूसरे के पास चली गई। हम पराधीन बन गये। हम यंत्र बन गये.... दूसरे चलाए वैसे चलनेवाले! पराधीनता से बड़ दुःख दूसरा कौन सा हैं? महर्षियों ने सुख-दुःख की जो व्यवस्था की है वह समझने जैसी है- 'सर्व परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्'

जो भी पराधीन है वह सब दुःख हैं। जो कुछ स्वाधीन है वह सब सुख है। यदि ऐसी स्वाधीनता तुझे प्राप्त करनी हो तो आ जा हमारे पास। स्वीकार लें जैन साधुत्व। यहां आने के बाद तुझे किसी से प्रेम मिले-ऐसी अपेक्षा ही नहीं रहेगी.... प्रेम का झरना अंदर से ही फूटने लगेगा.... इस झरने में विश्व के सभी जीवों को स्नान करवाने का मन होगा। तेरे हृदय में से निरंतर सर्व जीवों के प्रति निर्विशेष प्रेम बहता रहेगा। मैं यहां ध्यान कर रहा था वहां तुझे आत्महत्या करते देखकर मेरी करूणा उछल पड़ी। मैंने तुझे रोका है। दुःख से नहीं, मैं तुझे पाप से भी रोकना चाहता हूं। मेरी बात अच्छी लगती हो तो अभी से ही स्वीकार कर लें।

मुझे मुनि की बात बहुत अच्छी लगी। उनका प्रत्येक वाक्य मेरे हृदय को चोट मार रहा था। अब तक ऐसा तत्वज्ञान समझानेवाला कोई मिला नहीं था। बात करने भी कोई तैयार नहीं हो वहां तत्वज्ञान कौन समझायेगा?

मैंने मुनि के चरणों में आत्म-समर्पण कर दिया। जैन दीक्षा ग्रहण कर ली। मेरी आत्मा आनंद से नाच उठी। विनयपूर्वक गुरू के चरणों में अध्ययन करके मैं गीतार्थ बना। फिर मैंने अभिग्रह किया। छट्ठ और पारणे में आयंबिल करना तथा ग्लान महात्माओं की वेयावच्च करने के बाद ही वापरने के लिये बैठना।

तप और वेयावच्च-ये दोनों मेरे जीवन के अंग बन गये। मैं पूरे रस से उसमें जुट गया था। हृदय का पूरा रस (रूचि) जिस कार्य में हम लगा देते हैं-उसमें इतना आनंद आता है कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता! उस कार्य के बिना चैन नहीं पड़ता! आधे-आधे मन से किये हुए कार्य में आनंद नहीं आता। मैं तो अपने अनुभव से कहना चाहता हूं कि कोई भी रूचिकर एकाध शुभ कार्य को पकड़ लो और फिर जीवन का पूरा रस उसमें ऊंडेल दो! फिर देखो मजा! आपके कार्य से आपकी आत्मा को एक गहरा संतोष होगा। जीवन में धन्यता-कृतार्थता की भावना का अनुभव होगा। अब तक आपको ऐसा गहरा परितोष नहीं हुआ। क्योंकि आप एक भी अनुष्ठान हृदय के भावपूर्वक नहीं कर सके हैं। आधे मन से किया हुआ कार्य कहां से संतोष दे सकता है?

मैं ग्लान मुनिओं की सेवा में ऐसा मग्न हो जाता- ऐसा अंदर उतर जाता कि दूसरा सब कुछ भूल जाता। मुझे छट्ठ का पारणा करना है, आयंबिल का वहोरने जाना है, यह भी भूल जाता। कोई दो-तीन बार याद कराए तभी याद आता। भावपूर्वक जो कार्य किया जाता है उससे आपको और दूसरों को-दोनों को संतोष की गहरी अनुभूति होती है। आप कभी यह प्रयोग कर के देखना। छोटे-छोटे कार्य भावपूर्वक रूचिपूर्वक करना। फिर जीवन में कैसी प्रफुल्लित महक उठती है, यह देखना।स्वारस्य से अर्थात् भावपूर्वक किये जाने वाले कार्य का मजा कुछ और ही होता है। सेवा का अभिग्रह किसी ने मुझे जबरदस्ती नहीं दिया था, मैंने ही लिया था। जबरदस्ती किया जानेवाला कार्य व्यर्थ है, स्वारस्य से होता कार्य स्वयं आनंदरूप है।

मेरी सेवा की सभी प्रशंसा करते थे। मुझे खूब-खूब धन्यवाद देते थे। इससे मेरा उत्साह बढ़ जाता यह कबूल, पर कोई मेरी प्रशंसा करें- इसलिये मैं सेवा नहीं करता था। सेवा मेरा स्वभाव बन गया था। मोर नाचता है, फूल खिलता है, सूर्य उगता है, बादल बरसता है, यह उनका स्वभाव है। वे बदले में प्रशंसा थोड़े ही चाहते है? आप प्रशंसा करो या न करो-खिलना और सुगंध फैलाना फूल का स्वभाव है। आप धन्यवाद दो या न दो टहुकार करना कोयल का स्वभाव है, उगना सूर्य का स्वभाव है, नाचना मोर का आनंद है।

एक दिन छट्ठ का पारणा था। आयंबिल करने मैं बैठ ही रहा था। कवल मुंह में रखने की तैयारी कर ही रहा था तभी अचानक ही एक आगंतुक साधु आ पहुंचे और जोर से बोलने लगे, अरे! नंदी! भूखड़ी बारस की तरह बस.... सीधा भोजन पर टूट ही पड़? हमने तो सुना है कि तू बीमार मुनिओं की सेवा किये बिना खाता नहीं है। ऐसी गलत प्रचार-लीला? सेवा न हो सकती है? तो क्यों ऐसा प्रचार? दुनिया को उल्लू बनाने के लिये? सस्ती प्रसिद्धी प्राप्त करने के लिये? मेरे एक साथी मुनि गांव बहार है। बहुत ही बीमार है। उन्हें अभी इसी वक्त शुद्ध पानी की जरूरत है। तू अगर सच्चा सेवभावी हो तो चल सेवा करने।

(आगे और भी है...!)

** एक संत निश्चित दिन अपनी गुफा से बाहर निकलते और जिससे उनका स्पर्श हो जाता वही रोगमुक्त हो जाता था। एक भक्त यह सुनकर वहां पहुंचा और जिस समय महात्मा गुफा से निकलकर आरोग्य दान करते हुए गुफा में घुसने को थे, तभी भक्त ने उनकी चादर का कोना पकड़ लिया और बोला- आपने सबका रोग दूर किया, मेरे भी मन का रोग दूर कीजिए। महात्मा हड़बड़ाकर कहने लगे- मुझे जल्दी छोड़े, वह ईश्वर देख रहा है कि तुम उसका पल्ला छोड़कर दूसरे का पल्ला पकड़ना चाहते हो। मुक्तिदाता वही है, उसी का पल्ला पकड़े। महात्मा चादर छुड़ाकर गुफा में घुस गए और ईश्वरभक्ति में लीन हो गये।*

धर्म पुरूषार्थ

✽ जैनाचार्यश्री जितरत्नसागरसूरीजी 'राजहंस'

श्री संघ पंच परमेष्ठि रूप है एवं तीर्थंकर धर्मचक्रवर्ती समान है। गणधर आचार्यादि व्यवस्थापकों संचालक है। उपाध्यायजी भगवंत ग्रहण, धारणा शिक्षा के संचालक है। मुनि भगवंत भी संचालक है एवं उपचार से साधुपद में सुश्रावक-सुश्राविकाओं का समावेश किया जा सकता है। सम्यग् दर्शन एवं देशविरति गुण सम्यग्-साधु-अच्छे गुण है। सब मिलाकर अधिकार अनुसार सभी संचालन करते रहते है। सिद्धिपद ध्येय रूप है।

चार पुरूषार्थ रूप सुन्दर है-जीवन मार्ग श्री तीर्थंकर भगवान का विनियोग है और वह प्राणीमात्र का कल्याण कर रहा है। इस जीवन मार्ग को उथलाने के लिये प्रगति नामक हिंसक जीवनमार्ग को दुनिया में व्यापक बनाया जा रहा है।

जैसे पांचों शासन एवं संघ के संचालक है वैसे पांच आचार दृष्टि से आराध्य भी है तथा मंदिर, तीर्थ, गुरू, आगम आदि पूज्य आराध्य होने पर भी वे सभी संघ के नेतृत्व में है। संघ के नेतृत्व से बाहर की आराधना, आराधना नहीं गिनाती है।

विश्व व्यवस्था, तत्वज्ञान, पांच आचार आदि रूप शाश्वत धर्म शासन के बन्धारणीय नियम, संघ की जवाबदारी एवं कार्यों की व्यवस्था आदि तथा पांच द्रव्यों एवं सात क्षेत्र आदि की विचारणा शास्त्रों में है। इन सबके लिये शास्त्रों में से मार्गदर्शन प्राप्त करना पड़ता है। शास्त्रों में अन्य चार स्तम्भ गौण होते है। शास्त्र से अमान्य धर्म, धर्म नहीं है। शासन शासन नहीं है। संघ संघ नहीं है। शास्त्र शास्त्र नहीं है एवं धार्मिक संपत्तियाँ, धार्मिक संपत्तियां नहीं है।

धार्मिक संपत्तियों के उपयोग में पांचों आचारों का समावेश हो जाता है। उपकरण, तीर्थ, मंदिर, प्रतिमाएं तथा कल्याण भूमियां रूप क्षेत्रात्मक धार्मिक संपत्ति है। पर्व आदि कालात्मक संपत्ति है। सम्यग्दर्शनी देश विरतिधर एवं विरतिधर आत्माएं द्रव्यरूप धार्मिक सम्पत्ति है, क्षमा आदि गुण पांच आचार, मार्गानुसार आदि गुण भाव रूप धार्मिक संपत्ति है, इत्यादि बहुत समझने की आवश्यकता है, यह व्यवस्था बहुत ही गूढ़ एवं अद्‌भूत है।

जो लोग सीधे पांच आचारमय पंच महाव्रतों के द्वारा धर्म पुरूषार्थ का आचरण कर सकते न हो उन्हें अर्थ एवं काम पुरूषार्थ के साथ-साथ सम्यक्त्व मूल बारह व्रत रूप धर्माचारों का पालन करके धर्मपुरूषार्थ की साधना करनी चाहिये।

यदि ऐसा न कर सकते हो वे आत्मा यथाशक्ति व्रत धारण करके आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

यह भी न कर सकते वाले व्यक्ति सम्यग्दर्शन गुण धारण करके धर्म पुरूषार्थ की आराधना कर सकते है।

यदि यह भी करने में असमर्थ हो ऐसे आत्मा मार्गानुसारी रूप अर्थ-काम पुरूषार्थ मात्र का सेवन करके यथा शक्ति पूर्व सेवादिक धर्मों का पालन कर सकते हैं।

इसके अलावा जो मानव मार्गानुसारी भूमि पर भी न आए हो वे गतानुगतिकता से भी मार्गानुसारी अनुसरण करने से उनका विकास होना भी संभव है।

अन्त में चार पुरूषार्थ रूप सुन्दर मार्ग तीर्थंकर परमात्माओं का विनियोग है और वह प्राणी मात्र का कल्याण कर रहा है।

इस जीवन मार्ग को उथलाने के लिये आज के प्रगतिवादी प्रगति नामक हिंसक मार्ग दुनिया में व्यापक बना रहे है। इससे हमें सावधान होकर चलना है।

संसार में तो दुःख ही होता है

✽ पं.गुणसुंदरविजयजी गणी

उस भले भाई को उसकी माँ ने आज्ञा फरमाई- कॉलेज से वापस आते समय बाजार से अच्छी से अच्छी चालनी लेकर आना। शाम को वह चालनी के बिना ही वापस आया। माता ने कारण पूछा तो भला कहने लगा- माँ ! बाजार में खूब-खूब घूमा लेकिन एक भी चालनी अखंड नहीं थी, सभी छिद्रवाली ही थी। इस भले भाई को माता समझा सकी कि चालनी छिद्र बिनाकी होती ही नहीं लेकिन इस जगत में ऐसे कितने ही भला भाईयों है जिन्हें समझाया गया कि संसार दुःख बिनाका-त्रास बिनाका-पीड़, बिनाका-जन्म-मृत्यु-आधि-व्याधि-उपाधि बिनाका होता ही नहीं पर वे समझने को तैयार ही नहीं। भगवान ऐसे भले भाईयों का भला करें। यही शुभाभिलाषा!

पाप की सजा भारी...!

* प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

माया का परिणाम-

परम पूज्यपाद परमेश्वर परमेष्ठि चरम तीर्थपति श्रमण भगवान श्री महावीरस्वामी के चरणरविंद में कोटि-कोटि नमस्कार पूर्वक....

असूनृतस्य जननी, परशुः शीलशाखिनः।

जन्मभूमिरविद्यानां, माया दुर्गतिकारणम्।।

- असत्य की जननी (माता) और शील वृक्ष को काटने की कुल्हाड़ी और (मिथ्यात्व) अज्ञान रूपी अविद्या की जो जन्मभूमि है ऐसी माया सचमुच दुर्गति की कारण है।

विभाव को स्वभाव-

अनादि-अनन्तकाल से अनन्त संसार में परिभ्रमण करती हुई अनन्त आत्माओं ने जो अपना मूलभूत स्वभाव है उसे तो छोड़ दिया है और जो अपना स्वभाव नहीं है, विभाव है, उसे ही स्वभाव मान लिया है। जैसे किसी ने रस्सी को ही साँप मान लिया और फिर चिल्लाने लगा, रोने लगा आदि। जैसे किसी ने कांच के चमकते टुकड़े को ही हीरा मान लिया, पीली धातु को सोना मान लिया। ऐसे सैकड़ों भ्रम मनुष्य में पड़े हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ ये हमारा स्वभाव नहीं है परन्तु विभाव है। वि+भाव=विकृत भाव, विपरीत भाव! खट्टापन यह दूध का स्वभाव नहीं है। लेकिन फटे हुए दूध का खट्टापन यह विभाव है। विकृत स्वरूप है।

उसी तरह नम्रता, समता, मृदुता, ऋजुता आदि आत्मा के मूलभूत स्वभाव कहलाते है। आत्मगुण है आत्मा के स्वरूप है। लेकिन आज संसार में ये गुण नामशेष मात्र क्यों रह गए है? गिने गिनाए व्यक्तियों में ही पाए जाते है इसका क्या कारण है। इसके स्थान पर जो विभाव, विकृति हमारे में आई है वह क्या है? समता कम हुई और क्रोध आया। नम्रता, मृदुता कम हुई और मान आया, ऋजुता-सरलता कम हुई और माया आई, सुख-शांति, संतोषवृत्ति घटते ही लोभ कषाय आकर खड़ा हो गया! यही कारण है कि प्रकृति गई और विकृति आई, स्वभाव गया और विभाव आया!

आत्मा का विभावदशा में से स्वभावदशा में आना ही साधना-आराधना, उपासना का मार्ग है। विकृति में से पुनः प्रकृति में आने के लिये ही अध्यात्म का मार्ग है। अध्यात्मशास्त्र ने क्या किया? दिशा-भ्रष्ट आत्मा को विकृति-विभाव के दोष दिखाकर प्रकृति के गुणों की तरफआकृष्ट किया, विभाव के परिणाम दिखाकर स्वभाव की तरफ लाने का प्रयास किया। यही अध्यात्म मार्ग का मुख्य कार्य है।

क्रोधादि कषायों को क्यों अपनाया है?

ये क्रोधादि कषाय जब भी आए, जिस किसी के पास आए तब.... नुकसान ही किया है। इसमें कोई संदेह ही नहीं है। चोर को तो चोर ही मानना पड़ेगा। इसमें तो कोई शंका ही नहीं है। धन-माल चुराया है तो उसने नुकसान ही किया है और फिर यदि हम चोर को घर रखकर उसका पालन-पोषण करें तो उसमें हमारा ही नुकसान है! यह निर्विवाद निःसंदेह है। वैसे ही ये कषाय है। इन कषायों ने आत्मा को कर्म से बांधी और फिर संसार में खूब भटकाई। नतीजा यह आया.... आत्मा को दुःखी-दुःखी कर दी। आज हमने जाना-फिर भी यदि आत्मा को पूछा जाय कि कषायों को क्यों अपनाया है?.... तो क्या उत्तर देगी।

हां....हां कषाय तो चाहिए! इसके बिना तो जीवन निर्वाह ही संभव नहीं है? संसार कैसे चल सकता है? कोई तो कहता है अपनी रक्षा के लिये कषाय जरूरी है। जैसे सीमा पर तैनात खड़े एक सैनिक के पाप सुरक्षा हेतु शास्त्र होना जरूरी है उसी तरह हमने यह मान लिया है कि ये क्रोधादि कषाय ही हमारे लिये शस्त्र है। ये शस्त्र का काम करेंगे और हमारी रक्षा करेंगे। इसलिये कई तो कषायों का उपयोग रक्षा के हेतु से करते है। वे समझते हैं कषायों से हमारी रक्षा हो जाएगी। किसी के सामने क्रोध करने से मेरा कार्य सिद्ध हो जायेगा। इस तरह कईयों ने कार्य सिद्धि के हेतु कषाय करना जारी रखा है। शस्त्र की तरह सदा पास में रखना भी हानिकर है। कभी यही शस्त्र हमारा भी वध कर देगा। शस्त्र तो जड़ है। वैसे ही कषाय भी जड़ है। कर्म बंधा कर आत्मा को दुर्गति में गिरा देंगे। अतः किसी भी हेतु से कषायों को अपनाना उचित तो नहीं ही है। लाभ तो नहीं है।

कषाय जय के लिये वीर प्रभु कैसे हैं?-

संसार दावानल दाह नीरं, संमोह धूलि हरणे समीरं।

माया रसा दारण सार सीरं, नमामि वीरं गिरिसार धीरं।।

संसार एक दावानल जैसा है जिसमें जले हुए के लिये वीरप्रभु नीरं अर्थात् पानी के जैसे है। क्रोध दावानल जैसा है। ऐसी क्रोधाग्नि को शांत करने के लिये वीरप्रभु का स्मरण, वीर प्रभु को किया हुआ नमस्कार पानी का काम करता है। संमोहि-मोहरूपी धूली के आवरण, मान-अभिमान रूपी मोह की धूलि

के पटलों को दूर हटाने के लिये वीर प्रभु समीर=अर्थात हवा की तरह उपयोगी है और मायारूपी कठिन पृथ्वी को फाड़ने के लिये वीर प्रभु सीरं अर्थात् हल जैसे हैं और गिरिसार अर्थात् मेरू पर्वत के समान लोभ को शमाने के लिये वीर प्रभु सुमेरू के जैसे धीर-गंभीर है। ऐसे वीर स्वामी को नमस्कार किया गया है। पूज्य हरीभद्रसूरी ने क्रोध, मान, माया, लोभ इन चारों कषायों को जीतने के लिये नीरं, समीरं, सीरं, धारं की चार प्रकार की उपमा श्री वीर प्रभु को देते हुए स्तुति की है और इन्हीं चारों से वीर प्रभु ने ऐसे चारों कषायों को जीत लिया है अतः ऐसे कषाय विजेता श्री वीरप्रभु को यहां नमस्कार किया गया है। हमारे लिये यह एक आदर्श आलंबन है। हमें भी कषाय विजेता बनना है। क्रोधादि कषायों को जीतना है अतः यह एक उच्च आलंबन, ऊंचा आधार है। अतः यह स्तुति मननीय है।

संसार का लाभ कराने वाले अर्थात् भव परंपरा बढ़ाने वाले चार कषाय है। इनमें तीसरा कषाय माया है। यद्यपि क्रोध को ही मुख्य रूप से कषाय गिननेवाले मोटे स्थूलरूप से देखते है अतः मान-माया-लोभादि कषाय नहीं लगते होंगे। कइयों ने तो कषाय को क्रोध का ही पर्यायवाची शब्द मान लिया है। कोई क्रोध करें तो कह देते हैं अरे! इतना कषाय क्यों करते हो? लेकिन माया लोभ करने पर यह कोई नहीं कहता कि इतना कषाय क्यों करते हो? तो क्या माया और लोभ ये कषाय नहीं है? कौन कहता है नहीं है? अवश्य है। माया-लोभ भी संसार बढ़ाने वाले है। इतना ही नहीं क्रोध से भी ज्यादा खतरनाक है। बहुत ज्यादा नुकशानकारक है। जैसे पांचों इन्द्रियों के अपने अपने विषय भिन्न-भिन्न है उसी तरह चारों कषायों का स्वरूप और कार्य क्षेत्र भिन्न-भिन्न है। रोत-भात भिन्न-भिन्न है। तरीका अलग-अलग है! क्रोध का एक आगबबूला होकर गरम होकर अभद्र शब्द बोलकर वातावरण गरम-गरम कर देता है। जोरों से बोलकर लोगों को इकट्ठे कर देता है। जबकि मान पद-प्रतिष्ठा, सत्ता, शोभा का इच्छुक है। माया स्वार्थ साधने में लगी है। माया कूटनीति है और लोभ तो लाभ कराने की सतत चिन्ता में मन को सदा आकृष्ट किये ही रहता है। कामी मन जैसे काम में, सोनी का मन जैसे सोने में और जुगारी का मन जैसे जुगार में लगा रहता है उसी तरह लोभी का मन लाभ में लगा रहता है। अब कुछ मिलेगा, अब कुछ लाभ होगा। इस तरह मन ललचाया हुआ रहता है। ये चारों ही आत्मा के घातक शत्रु है! कर्म बंध के कारण है। अतः कषाय है!

इतना ही फरक है कि.... क्रोध सांप की तरह डंक दे के काटता है। तो माया-लोभ-ये चूहे की तरह फूंक मार कर सोते समय पैर की चमड़ी निकाल लेते हैं। उस समय फूंक का स्पर्श बड़ा मीठा-मधुर लगता है। क्रोध भी विष है। लेकिन तेज विष है। 2 मिनिट में मृत्यु होती है लेकिन माया-लोभ-तेज-कड़क विष नहीं है, ये Cold Poision ठंडे विष है। ये धिरे-धिरे असर करते हैं।

चारों कषाय स्वाद में कैसे हैं? -

प्रत्येक खाद्य पदार्थ का स्वाद होता है। उसी तरह ये चारों कषाय स्वाद में कैसे होते हैं? इनके रसास्वाद का अनुभव कैसा होता है? यदि उपमा देकर देखें तो पडरस में इनका भी रस है। अतः इनका भी रसास्वाद है। उदाहरणार्थ जैसे क्रोध तेज लाल मिर्ची के जैसा तिखा है। तेज लाल मिर्ची खाते ही जैसे जीभ जलती है, मुंह जलता है। उसी तरह क्रोध के आने से उसके तीखे पने से स्वयं और दूसरा दोनों ही जलते है। आग-आग हो जाते है। क्रोधी को क्रोध के आगमन पर ऐसे अनुभव होते है। मान कषाय खट्टा है। खटाई भी लोगों को प्रिय है। भोजन में खट्टा रस भी चाहिए। इसी तरह जीवन में मान भी चाहिये। ऐसी हमारी धारणा है। दाल-सब्जी में खटाई अच्छी लगती है उसी तरह मान का सेवन भी अच्छा लगता है।

माया कैसी है? मीठी है! जैसे मिठाई प्रिय है। मीठा रस सबको पसंद है। वैसे ही माया भी जीवों को पसंद है। मिठाई खाते समय मिठी लगती है उसी तरह माया का सेवन करते समय माया बड़ी मीठी लगती है। फरक इतना ही है कि खट्टे-मीठे-तीखे रस का अनुभव जिव्हा इन्द्रियों से होता है जबकि क्रोध, मान, माया, लोभादि कषायों का रसास्वाद अर्थात् अनुभव मन से होता है। मन इन्द्रिय नहीं अतीन्द्रिय है। लोभ नमकीन है। नमक के बिना किसको चलता है? रोटी, चावल आदि सभी में नमक पड़ता है। बिना नमक की रोटी, चावल भी अच्छी नहीं लगती। वैसे लोभ के बिना किसको चलता है। हर बात में लोभ है। अतः नमकीन के जैसा लोभ है। इस तरह चारों कषायों का भिन्न-भिन्न रसास्वाद है। अनुभव है। यह तो सेवन करने वाले को ही अनुभव होता है। हम सभी प्रत्यक्ष जानते है। स्वादिष्ट रसोई जैसे हम नहीं छोड़ते मिलने पर डट के खाते है। वैसे ही रसास्वाद की अनुभूति वाले ये कषाय हम नहीं छोड़ते। मौका आने पर जी भर कर करते हैं। **(आगे और भी है...!)**

**** अरिहंत भगवंत को साक्षात् भगवंत मानकर भक्ति करनी है। इसके लिये विवेक की परमावश्यकता है।***

भगवान श्री महावीर स्वामीजी की उपादेयता

पौराणिक और ऐतिहासिक महान आत्म विभूतियों में परमात्मा चरम तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामीजी की उपादेयता को आज के हिंसात्मक युग में आँकना अब अपरिहार्य लगता है। इसका प्रबल कारण प्रभु वीर का जीवन दर्शन। यदि हम, हमारे जीवन से भोग और विलासिता के साथ परिगृह की संस्कृति को दूर कर सके,अंध विश्वासों को छोड़कर सत्यानिष्ठामय अहिंसा की साधना कर अपने जीवन का अंग बना ले तो मानव मात्र का जीवन सुखमय हो सकता है और भगवान श्री महावीर स्वामीजी उस समय हमारे सबसे निकट, पास होंगे। आप हम सब जानते हैं कि भगवान का जीवन विरासत में मिले भोग, आनंद, अपार संपदा के त्याग का प्रतीक है, भगवान का जीवन दर्शन अहिंसा की सर्वोच्चतम पराकाष्ठा संयम, विवेक का साधना का अनुपम उदाहरण है।

भारत देश के विविध सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों की गरिमा को बनाये रखते हुए उन्हें मानवमात्र के कल्याण के लिये सर्वथा उपयोगी बनाने में भगवान श्री महावीर के दर्शन की प्रासंगिता से इंकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि वर्तमान युग प्रभुवीर के दार्शनिक मूल्य और जीवन आचरण की उपादेयता आज सर्वाधिक है। जब हम भगवान श्री महावीर स्वामीजी के जीवन दर्शन पर चिंतन और मनन करते हैं तो हमारे सामने बहुत ही गंभीर और विचारणीय बिन्दु सामने आते हैं कि क्या हिंसा, आतंकवाद और सांप्रदायिक अंध विश्वास के महल में बैठकर हम मानव मूल्यों का सरंक्षण कर पायेंगे? क्या ऐसे वातावरण में पनपता लोकतंत्र सबके लिये कल्याणकारी हो सकता है। गले तक भ्रष्टाचार में डूबे देश की प्रतिष्ठा को दलगत राजनीति, पारिवारिक भाई-भतीजावाद के दलदल में उलझा लोकतंत्र सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा को बचा पायेगा? अपहरण-परिग्रह से अपनी जीविका को पुष्ट एवं विकसित करने वाला प्रशासन तंत्र मानव हित के निर्णय ले पायेगा? क्या हम अपने आप को सर्वोशक्तिमान, अधिकारों का अधिष्ठाता-अधिकारी और चाटुकारिता का अभिलाषी बनकर दीनहीन प्रजा का भलाकर सकते है? भोग विलास और लोभ की सगान्धता तथा परिग्रह की पराकाष्ठता की कालिमा से हमें बचा सकता है? इन प्रश्नों के कहीं न मिलने वाले आसान उत्तर हमें भगवान श्री महावीर के गणराज में ढुढना चाहिये जहां प्रभु ने गुणराज की स्थापना की थी, भारतीय लोकतंत्र की नींव को मजबूत करने का काम परमात्मा श्री महावीर स्वामीजी के दर्शन ने बहुत पहले कर दिया था, अगर हम उस पर कायम रहते तो न तो आज नारी की प्रतिष्ठा कलंकित होती और नहीं बेटी बचाओ जैसे अभियानों की जरूरत होती।

भारत के गौरव और अभिमान को बढ़ाने में भारत का सांस्कृतिक वैभव, विविध जाति धर्म की अनेकाविध योग्यताओं का समावेश, सामाजिक, सौहार्दता, एक दूसरे के प्रति करूणा का भाव धार्मिक क्रिया और अनुष्ठानों का आस्था के साथ पालन और समर्पण है, भारत के इस सांस्कृतिक और दार्शनिक वैभव की शक्ति श्री महावीर के परिप्रेक्ष्य में सदैव विकसित होती रही है, यह हम भारतीयों को महिमा मंड़ित करने में अपनी सार्थकता को सिद्ध करती है, भारत का आध्यात्मिक गौरव श्री महावीर के जीवन दर्शन से प्रभावित हुआ है। श्रमण संस्कृति के महान उन्नायक भगवान श्री महावीर स्वामीजी ने अपने जीवन व्यवहार से सत्य अहिंसा की पुर्नस्थापना करने में गहरा योगदान दिया, उन्होंने यह प्रमाणित कर दिया है कि निश्चल और स्वाधीन अध्यात्म आत्म साधना के द्वारा कोई भी परमात्मा बनने का पुरूषार्थ कर सकता है। आत्मा की परम दशा में पहुंच जाना है परमात्मा होना है, परमात्मा श्री महावीर स्वामीजी ने अपने जीव का पुनरागमन से मुक्त होने के पूर्व जिन सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना की उन्हें ही मानव मात्र के लिये पूर्ण सुखी होने के लिये अपरिहार्य बताया है।

भगवान श्री महावीर स्वामीजी की अहिंसा जीवनदायिनी संजीवनी है, एक शब्द में भगवान ने सबके

जीने के अधिकार का मार्गदर्शन दे दिया है, यही नहीं उन्होंने सत्य को अजय और अक्षय बताते हुए अंधविश्वास और कोरी कल्पना को भी जीवन के लिये दुःख का कारण बतलाया है, उन्होंने अपरिग्रह के सिद्धांत के माध्यम से यह इंगित कर दिया कि धर्मप्रिय पुरूषार्थी व्यक्ति भोग विलास और वैभव सम्पन्नता का परित्याग कर सुखी हो सकता है। भव भवान्तरों में भी कर्मफल मिलता ही है। मोह राग, द्वेष वशीभूत होकर हम किसी की भी अभिमानना या अपमान न करें, बल्कि समभाव पूर्ण जीवन जीए। संसार के प्राणीमात्र पर मैत्रीभाव रखें यही क्षमा की सीढ़ी है। विश्व बंधुत्व या सर्वोदय को तभी साकार किया जा सकता है, जब हमारे मन में राग, द्वेषजन्य पक्षपात करने की अवधारणाएं नहीं होगी, भगवान श्री महावीर और उनके द्वारा उपदेशित तत्वज्ञान को अगर आज का मानव अपने जीवन में अंगीकार कर ले तो वह नैतिक होकर पापाचार से बच सकता है और सद्कर्मों से सन्मार्गोन्मुखी बन सकता है। भगवान श्री महावीर स्वामीजी के तत्वज्ञान में यह तो कहा ही गया है कि अच्छे बुरे कर्मों का फल उसे अवश्य ही मिलता है तो जीवन में सचेत हो जाये और इतना तो अवश्य करें की जितने बुरे है उससे अधिक बुरे न बने यही सुधरने की मजबूत पहली सीढ़ी होगी।

वृद्धों की सेवा करो....

*** रामेश्वरप्रसाद गुप्त 'इंदु' बड़गांव-झांसी**

वृद्धजनों का साथ दे जीवन को आयाम।
चलते-फिरते तीर्थ हैं वे अनुभव के धाम।।
अगर चाहते हो सदा रहे दूर दुःख द्वंद।
वृद्धों की सेवा करो, पाओ परमानन्द।।
सत्यज्ञान देते हमें, जीवन के प्रयोग।
उऋण नहीं इनसे कभी हो सकते हम लोग।।
मौन तपस्वी से रहे, पग-पग रहे निहार।
अनुभव देकर वह करें जीवन का श्रृंगार।।
जीवन जीने की कला, रही सभी को पाल।
इंदु विरासत दे हमें, उसको रखें संभाल।।
वयोवृद्ध बसते जहां, उस घर का हो मान।
उनसे ही पहचान हो वे अनुभव की खान।।

इन्सान व इन्साफ

इन्सान के लिये इन्सान से बढ़कर और कोई उपयोगी वस्तु इस दुनिया में नहीं, इन्सान एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज के बिना नहीं रह सकता ठीक वैसे ही जैसे मछली जल के बिना नहीं रह सकती हाँ, यदि मछली जल में रह कर भी प्यासी रहे तो यह विपरीत परिस्थिति ही मानी जायेगी जो न्यायोचित नहीं है इसी प्रकार मनुष्य भी समाज में रहकर समाज का ही एक अंग होने पर भी यदि जीवन की मूलभूत सुविधाओं व आवश्यकताओं से वंचित रह जाता है तो इन्सान के साथ नैसर्गिक न्याय व इन्साफ कहां आवश्यकताओं से वंचित रह जाता है तो इन्सान के साथ नैसर्गिक न्याय व इन्साफ कहां हुआ? समाज में जहां कई लोग रोटी, कपड़ा, मकान के लिये तरसते हों वहीं सम्पन्न वर्ग के लोग अपनी ही पृथक दुनिया मानकर आमोद-प्रमोद की जिन्दगी बिताते हो तो समाज में समानता व सहिष्णुता का वातावरण कैसे बनेगा? एक दूसरे के दुःख दर्द को समझना मानवता है व परस्पर सहयोग करना मानव धर्म है।

मानव शरीर करीब दस करोड़ छोटे-मोटे पूर्जों से निर्मित हुआ है व मानव मस्तिष्क जिसमें करीब अस्सी करोड़ सूक्ष्म कोशिकाओं युक्त स्नायु व्यवस्था है सभी परस्पर सहयोग सहकार में तत्पर है, शरीर के किसी एक भाग में पीड़ा होने पर सारे शरीर में वेदना होने लगती है तथा तब तक सारा शरीर दर्द महसूस करता रहता है। जब तक कि उस भाग को दुरूस्त नहीं किया जाता, यही हाल समूचे मानव समाज का होता है तो इन्सानियत के साथ इन्साफ करना है, पर दुर्भाग्य से ऐसा है नहीं, वरना मानव अपने ही भाई को दुःखी कैसे देख सकता है?

यदि समाज के सभी वर्ग मानवीय गुणों को अपनाकर 'वसुदेव-कुटुम्बकम्' के सिद्धांतों को आत्मसात् करें तो सर्वत्र सुख शांति बनी रहेगी। प्रकृति प्राणी मात्र के साथ न्याय करती है जैसे सभी के लिये हवा पानी समान रूप से सुलभ है, वैसे ही हर व्यक्ति यदि सम्पूर्ण मानवता के प्रति अपना दायित्व व कर्त्तव्य का निर्वाह करने लग जाये तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी तल पर ही स्वर्ग उतर आए, मानव-मानव का पूरक बनें, किसी अन्य का शोषण नहीं पोषण करें, यही मानव धर्म है, किसी वृक्ष को खाद व पानी दिया जाए तो वह जड़ से लगाकर समस्त पत्तों तक स्वाभाविक रूप से पहुंच कर पूरे वृक्ष को पोषण देता है, सूर्य की रोशनी सभी के लिये समान रूप से उपलब्ध है उसी प्रकार साधन सुविधाएं भी आवश्यकतानुसार यथा संभव सभी को उपलब्ध होती रहें ऐसी व्यवस्था करने में हम सहभागी बनें यही समय की पुकार है, समुद्र संग्रह करता है, अतः पानी खारा है नदी देती रहती है अतः पानी मीठा रहता है व नदी पूजनीय है।

बचपन और बुढ़ापे को बचायें....

* सुधीर पटवा, एडवोकेट, कुकड़ेश्वर

हजारों वर्षों से चली आई भारतीय संस्कृति में यहां का जीवन अक्षुण चला आ रहा था। इसी कारण बाहरी आक्रन्ताओं के द्धारा अनेकों बार आक्रमण कर यहां की अमूल्य कीमती सम्पदाओं को लूटा गया तथा आधिपत्य जमाकर के भी इस देश को तोड़ने का अथक प्रयास किया गया किन्तु आज तक यह देश अपने संस्कारों के कारण ही हर अग्नि परीक्षा में खरे सोने की तरह चमक कर बेदाग निकलता रहा है, किन्तु वे हमारे संस्कारों को नहीं लूट पाए।

हजारों वर्षों के बाद अब जाकर विदेशियों की समझ में आया है कि भारत को तोड़ना है तो भारतीय के संस्कारों को तोड़ना होगा तभी जाकर के वे सफल हो पावेंगे अन्यथा नहीं, इसलिये उनके द्धारा विकसित संचार माध्यमों तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यमों से अनवरत हमारे संस्कारों को तोड़ने की सोची समझी मुहिम चलाई जा रही है। सबसे पहला प्रहार तो उनके द्धारा हमारी भाषा पर किया गया है, इसी प्रकार हम भेड़्वाल की तरह हमारे बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में शिक्षा दिलवा रहे है, जहां उनका ब्रेनवाश करके उन्हें पाश्चात्य जीवन शैली में ढाला जा रहा है, इस कारण हमारी आनेवाली पीढ़ियां न तो भारतीय बन पा रही है, और न ही पश्चिमी, वे न इधर में है, न उधर में, केवल अधर में है। क्योंकि हमें उन्हें संस्कार विहीन बना रहे है।

यही कारण है कि आज हमारे संयुक्त परिवार समाप्त हो रहे हैं और एकल परिवार की अनचाही व्यवस्था पनप नहीं है, जो संयुक्त परिवार के लाभों से अनभिज्ञ है, हमारी नई पीढ़ियां स्वतंत्र नहीं अपितु स्वच्छंद जीवन के उबड़ खाबड़ मार्ग पर सरपट भागी जा रही है, इसी मार्ग में अनगिनत गड्डे, अनपेक्षित खाईयां और अनचाहे अंधे मोड़ हैं जो अपने में संकटों की अंतहीन फैहरिस्त समेटे हैं। इन सब से अंजान नई पीढ़ी परेशानियों में गिरती पड़ती आगे बढ़ती जा रही है जिन्हें अपने गंतव्य का भी स्पष्ट आभास नहीं है। पुराने समय के संयुक्त परिवारों में चाहे आज जैसे सुख वैभव के साधन नहीं थे, किन्तु उनके साधनहीन जीवन में भी एक सुकून था, एक शांति थी और खुशियों का एक चमन था जो आज के लाखों के पेकेज वाले बड़े शहरों के सुविधा सम्पन्न विशाल फ्लेटों तथा कीमती चार पहियां वाहन के साथ शान शौकत से जीवन व्यतित करने वाले युवाओं को नसीब नहीं है।

आज हमारे परिवारों में सामंजस्य, सौजन्यता, सौहार्द तथा आपसी प्रेम भाव का पूर्णतया अभाव दृष्टिगत होता है और उसका कारण यह रहा है कि हमारे शिक्षण पद्धति से हमारी संवैदनाओं को चेतन्य करने वाली महापुरूषों की जीवनियां, धार्मिक आख्यान तथा जीवन जीने की कला के सारे संदर्भ धर्म निरपेक्षता या सेक्युलरिज्म के नाम से विलोपित कर दिये गए या अन्यान्य सनैतिक तुष्टिकरण के कारणों से हटा दिये गये इस कारण व्यक्तियों में संवैदनशीलता पूर्ण रूपेण समाप्त हो गई होकर व्यक्ति केवल स्वकेंद्रित या सेल्फ सेन्टर्ड हो गया है, या यूं कहें उसे अपने स्वार्थ के अलावा दूसरों से कोई लेना देना ही नहीं है। व्यक्ति का स्वहित और स्वार्थ पूर्ति ही सर्वोपरि हो गये हैं। पहले संयुक्त परिवार में एक सदस्य का कष्ट पूरे परिवार का कष्ट होता था, किन्तु आज के समय में व्यक्ति के कष्ट को बांटने वाला कोई रहा ही नहीं है, क्योंकि जब व्यक्ति अपने सुख में किसी को भागीदार नहीं बनाता है, और वह स्वयं कभी दूसरे के कष्ट में काम नहीं आता है, तो फिर उसके सुख-दुःख में क्यों कर कोई भागीदार बनेगा, यह सारा गणित परस्पर के नियम पर आधारित है। आप सुख दोगे तो सुख पाओगे और दुःख दोगे तो दुःख ही पाओगे यही प्रकृति का अटूट नियम है।

आज के परिवार में बुजूर्गों का कोई स्थान ही नहीं रहा है। एक जमाना था जब परिवार में बुजूर्ग सम्माननीय होते थे तब पोते-पोती, दादा-दादी या नाना-नानी की पूंजी हुआ करते थे, जिनसे बच्चों को अथाह प्यार मिलता था, कहानी किस्सों का जीवन के अनुभवों के निचोड़ के माध्यम से उन्हें ऐसी अमूल्य शिक्षा मिलती थी, जो उनके जीवन की अखूट पूंजी हुआ करती थी किन्तु हमने अपनी बुजुर्गों से मुफ्त से मिलने वाली इस अकूत एवं अमूल्य शिक्षा प्राप्ति के साधन से ही मुंह मोड़ लिया है। ऐसी पूंजी किसी स्कूल, कॉलेज, युनिवर्सिटी या मार्केट में मनमानी कीमत देने पर भी उपलब्ध नहीं है। आज के समय में 90 और 95 प्रतिशत के सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले जीनियस बच्चे या गोल्ड मेडलिस्ट बच्चे जरूर शिक्षा की फेक्ट्रियों से निकल रहे हैं जो लाखों करोड़ें के पैकेज पर दुनिया के कोने-कोने में जॉब कर रहे हैं, याने कि वो नोट छापने का कारखाना जरूर बन जाते हैं, किन्तु जीवन में आई एक असफलता उन्हें चोटी से रसातल में गिराने या आत्महत्या करने से या अपने प्रिय व्यक्ति की

मौत की नींद सुला देने के निकृष्ट कार्य करने तक नीचे गिरा देती है। क्योंकि वे पढ़ा-लिखा रोबोट अवश्य बन जाते हैं किन्तु सवैदनाओं से कोरे केवल एक मशीन भर होते है जिनमें जीवन का संगीत रचा बसा ही नहीं होता है। ऐसी पीढ़ी से अधिक उम्मीद करना पत्थर पर पेड़ उगाने या आग में बाग लगाने की कल्पना करने जैसा ही होगा।

इस मशीनी युग के बदलते समय में हमारे समाज में सबसे अधिक कष्ट में है, हमारी अगली पीढ़ी के नन्हें मुन्नों का बचपन जो अपने माता-पिता की अपेक्षाओं पर खरे उतरने के लिये अपने बचपन की बली दे रहे हैं ये बच्चे पढ़ाई में कब अपना प्यारा बचपन अंजाने में खोकर बड़े बन जाते है इन्हें ही पता नहीं चल पाता हैं। इन अबोधों के बाद हमारे समाज के वरिष्ठजन याने सीनियर सीटिजन हैं, इन वृद्ध महिला पुरूषों की स्थिति तो अधिकांश परिवारों में अवांछित तत्व जैसी हो गई है, ये न तो ठीक से जी पाने की स्थिति में है और न ही मर पाने की। इस विषय पर जल्द ही समाज को ध्यान देकर इस बूढ़ी पीढ़ी के सुख, सुकून और शांति की स्थापना के लिये कुछ करना चाहिये ताकि ये वृद्धजन अपना उत्तरार्ध जीवन अपनी क्षमता के अनुसार अपने अनुभवों का लाभ समाज को देते हुए, शांति से बिता सकें।

आज के समय में अपने नाम के लिये और अधिक मंदिर या देवालयों के निर्माण की कतई आवश्यकता नहीं है। इन बच्चों को और बूढ़ों के रूप में जीवित मंदिरों को निराशा में ढह कर गिरने से बचाने और पश्चाताप पूर्ण जीवन से उबारने की आवश्यकता है। इसके लिये समाज के वरिष्ठजनों सभी संतों, समाज सेवियों तथा अग्रजनों से निवेदन है कि इस सवैदनशील विषय पर चिंतन कर समाज में परिवर्तन लाने का कोई सार्थक प्रयास अवश्य करें, ताकि देश की एक बड़ी आबादी जो ऊपर उल्लेखित परेशानियों से जूझ रही है, उनका जीवन सुखद और सार्थक हो सके। बच्चों को श्रेष्ठ संस्कार और सुशिक्षा बिना दबाव के उनकी अभिरूचि के अनुसार उनके बचपन को सुरक्षित रखते हुए बिना सवैदनाओं को मिटाए प्राप्त हो सके, तथा वृद्धों को समय के मान से उनकी जरूरी आवश्यकताओं की यानी रोटी, कपड़ा और मकान के साथ चिकित्सा की पूर्ति हो सके और उन्हें विश्वास के दो मीठे शब्द सुनने को मिल सकें ताकि उनका एकाकीपन उन पर भारी न पड़े और उनका बाकी का जीवन सुख, सुकून और शांति से बीत सके, इस पर ध्यान दिया जाना अत्यंत आवश्यक है। जिन माता-पिता ने बहुत कष्ट सहकर अपने बच्चों को जन्म देकर पाल पोष कर बड़ा किया, आत्म निर्भर बनाया उनके लिये ही माता पिता भार भूत हो गये है, तो यह हमारे लिये गंभीर चिंतन का विषय है कि समाज किधर जा रहा है और हमारा भविष्य कितना सुरक्षित है।

ले जाने वाला रोएगा

*** एस.सी.कटारिया, रतलाम**

बात पिछले वर्ष देव उठनी ग्यारस की है, मेरे घनिष्ठ व वर्षों पड़ोसी रहे तिवारीजी की छोटी बिटिया प्रिया का लग्न का प्रसंग था। विवाह में मुझे सपरिवार शादी के दो दिन पहले उनके घर पर पहुंचने का निमंत्रण था। संबंधी का निर्वाह व तिवारीजी की भावना का आदर करते हुए हम शादी से पहले आतिथ्य देने उनके घर पहुंच गए। शुभ मुहूर्त में विवाह के पश्चात बरात बिदाई का समय आया। जैसाकि आम रिवाज है दुल्हन (लड़की) बाबूल पक्षों से संबंधित अपने सगे संबंधी से गले मिल कर से रही थी। उसकी अश्रुधारा रूकने का नाम नहीं ले रही थी। बिदाई में एकत्र मेहमान यह दृश्य देखकर भाव विभोर थे। हम भी इस वातावरण के सहभागी थे। कुछ सगे अच्छे से प्रिया के मिजाज, स्वभाव व व्यवहार से परिचित थे। एक तरफ जाकर बतियाने लगे, जिसे मेरी धर्मपत्नी ने भी सुना कि- अरे अने छोरी से कहो कि यह नाटक बंद करें। दूसरों को रूलाने वाली क्यों रो रही है? अब तुझे नहीं रोना है, थने तो ले जाने वाले ससुराल पक्ष के रोने की अब बारी है। ग्रामीण सामाजिक मान्यता के आधार पर ये रूढ़िवादी प्रथा अभी भी शहरों में भी विद्यमान है। रोना नहीं आने पर भी इस मौके पर दिखावा प्रदर्शन के लिये दूल्हन को ऐसा कहने के लिये प्रेरित किये जाने के दृश्य आसानी से विदाई के वक्त देखे जा सकते है।

एक महात्मा ने किसी भक्त की सेवाभावना से प्रसन्न होकर उसे सात दिन के लिए पारस मणि देकर कहा- इसे छूने से लोहा सोना हो जाता है, जितने सोने की जरूरत हो, बना लो। सात दिन बाद यह वापस ले ली जाएगी। भक्त बड़ा प्रसन्न हुआ कि अब मेरा सारा दारिद्रय दूर हो जायेगा, पर वह बड़ा कंजूस। सस्ता लोहा बड़ी तादाद में ढूंढने लगा। जिस दुकान पर वह गया, वहां उसकी समझ में लोहा थोड़ा था और महंगा भी था। बहुत सस्ता और बहुत बड़ा ढेर ढूंढने के लालच में वह कई नगरों में गया, पर उसे कहीं संतोष न हुआ। इसी भाग-दौड़ में सात दिन पूरे हो गये। मणि वापस ले ली गई और वह रत्ती भर भी सोना प्राप्त न कर सका।अधिक सयाने बनने वाले और अधिक कंजूस सदा घाटे में रहते हैं।

भगवान श्री महावीर और उनके सिद्धांत

इतिहास साक्षी है कि जब-जब इस वसुन्धरा पर अत्याचार, पापाचार, शोषण, विद्वेष, हिंसा आदि अमानवीय अधार्मिक, कृत्यों से मानव ने प्रकृतिकृत ढांचे को तहस-नहस किया है, तब-तब विश्व को उबारने एवं कल्याण हेतु एक महान आत्मा का अवतरण होता है। भगवान श्रीमहावीर के काल में भी ऐसा ही सब कुछ घटित हुआ। लेकिन भगवान श्रीमहावीर की आत्मा के पवित्र परमाणु के प्रभाव से दुर्भिक्ष, महामारी, अकाल हिंसा आदि आसुरी शक्तियां स्वतः ही समाप्त हो गई और प्रकृति ने एक साथ छह ही ऋतुओं को उपस्थित कर वातावरण को सौरभमय बना दिया। सभी प्राणी सुख का अनुभव करने लगे। भगवान श्रीमहावीर की पवित्र आत्मा के माँ त्रिशला के गर्भ में आने से छह माह पूर्व से ही देवों ने कुंडलपुर के राजा सिद्धार्थ के आंगन में जन्म पर्यन्त पंद्रह मास तक रत्नों की वर्षा की।

यह चैत्र मास बड़ा ही आध्यात्मिक एवं चिंतन का मास है। प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव एवं मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम ने भी इसी चैत्र माह में जन्म लेकर वसुन्धरा को धन्य किया है। विशेष बात यह है कि इसी माह में पन्द्रह तीर्थंकरों की सतरह कल्याणक हुए है। धन्य है माता त्रिशला एवं कुंडलपुर के राजा सिद्धार्थ जिनके आंगन में चैत्र सुदी तेरस के दिन इस युग के अंतिम तीर्थंकर धर्मचक्रवर्ती भगवान श्रीमहावीर ने जन्म लिया। इस महामानव के जन्म लेते ही आश्चर्य प्रकट होने लगे। दुंद भी बजने लगी, देवों द्धारा जन्मोत्सव मनाया गया।

राजकुमार श्रीमहावीर एक महान विचारक थे। राजपाट में उनका मन अधिक समय नहीं लगा रह सका। आरंभ के तीस वर्षों में वैभव और विलास के बीच वे जल से भिन्न कमलवत् रहे। तीस वर्ष की अवस्था में राजकुमार श्रीमहावीर ने तमाम मोह-माया का त्याग एक अर्किंचन भिक्षु के रूप में दीक्षा ग्रहण की। महामुनि बनकर उन्होंने अपने मन को अखंड ब्रह्मचर्य की आंच में बारह वर्ष तक घोर तप करके तपाया एवं आत्मा पर विजय प्राप्त की। बयालीस वर्ष की आयु में केवल्यज्ञान को प्राप्त कर महामुनि वीतरागी सर्वत्र भगवान हो गये। इन्द्र ने तत्काल आकर केवल्यज्ञान की पूजा की।

संसार में उनकी ही विजय होती है जो मोह-माया के साम्राज्य पर विजय प्राप्त कर राग-द्वेष मय परिणति को छोड़ता है, विषयों पर अंकुश लगाता है, कषायों को जीतता है तथा इंद्रियों को वश में करता है। उसका चिंतन स्वयं की ओर हो जाता है, मेरा वास्तविक स्वरूप क्या है, कर्त्तव्य क्या है, अब तक क्या किया और क्या करना है। यह सब चिंतन मोह, समाप्त करने के उद्देश्य से हो तभी जाना जा सकता है-आत्म तत्व को। वही वीर, अतिवीर, सन्मति, वर्द्धमान या महावीर कहलाता है। महापुरूष संसार में स्वयं आदर्श पथ पर चलकर दूसरों के लिये आदर्श उपस्थित करते है। केवल्यज्ञान प्राप्त होने के पश्चात तीस वर्ष तक भगवान श्रीमहावीर देश देशान्तरों में विहार कर रत्नत्रैयी एवं सप्ततत्व आदि का धर्मोपदेश करते रहे। वे जहां-जहां विहार करते उनके आगे-आगे धर्मचक्र चलता एवं कुबेर समोशरण की रचना कर देता था। समोशरण में वीतरागता से सरोबार उनकी वाणी किसी एक सम्प्रदाय, किसी एक जाति, किसी एक देश अथवा किसी एक व्यक्ति के लिये नहीं, अपितु प्राणीमात्र के लिये थी। उनकी जिओ और जीने दो की देशना इस बात का प्रमाण थी। भगवान श्रीमहावीर देववादी ने होकर पुरूषार्थवादी थे। उन्होंने व्यक्ति के गुण और कर्म को ही सर्वोपरी मानकर उपदेश दिया कि मनुष्य परमात्मा के केवल इतना ही अंतर है कि मनुष्य कर्म सहित है और परमात्मा कर्म रहित। मनुष्य जन्म से नहीं, कर्म से महान बनता है, का उपदेश देकर उन्होंने कर्म की सत्ता को सर्वश्रेष्ठ मानव धर्म बताया है। उनकी दृष्टि में भेदभाव अनर्थ अन्याय और संघर्ष का कारण बनता है। छोटा-बड़, अच्छा-बुरा, ऊंची-नीच सब मनुष्य अपने कर्मों से बनाता है। उनका कथन था, पाप से घ्रणा करो पापी से नहीं।

जब आत्मा अमर है- कभी नहीं मरती तो डर किस बात का कहकर लोगों को निर्भिक होने का उपदेश दिया। उन्होंने विश्व के समस्त जीवों को मानवता का संदेश देते हुए कहा कि एक छोटी सी चींटी एक बड़ सा हाथी जैसा जानवर, सभी की आत्मा हमारी आत्मा के समान है, उन्हें भी हमारी तरह जीने का अधिकार है। अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह का सिद्धांत देकर उन्होंने प्राणी मात्र को सुखी रहने के लिये विश्वशांति का मार्ग दिखाया। जब मन, वचन, काय से अहिंसा आती है, तभी आत्मदर्श होता है, अहिंसा आत्मिक गुण है अविनाशी है। भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति अहिंसा पर आधारित है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने तो भगवान महावीर की अहिंसा नीति को जीवन में अपनाकर भारत को अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्त करवाया है।

भगवान श्रीमहावीर की अनेकांतरणी अहिंसा की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है। अहिंसा के मार्ग में अनेकांत को ही साधक जाना है। वैचारिक भिन्नता और हठग्राहिता, अनेकांत के अभाव में होती है। मताग्रह को दूर करने के लिए अनंकांत का सिद्धांत कारगर है। वस्तुओं को सभी पहलुओं से देखने एवं सभी पक्षों को समझने की दृष्टि अनेकांत है। मानव मानव के मध्य समानता, सामंजस्य एवं समन्वय करने वाला अनेकांत का सिद्धांत विश्वशांति के लिये कारगर हो सकता है।

अपरिग्रह का सिद्धांत आज के युग में अत्यंत आवश्यक है। अपरिग्रह का आधुनिक नाम समाजवाद है। समाजवाद में सत्ता एवं कानून के बल पर समानता लाने का प्रयत्न होता है और इसमें विरोध जन्म लेता है तथा विरोध से संघर्ष उत्पन्न होता है लेकिन अपरिग्रहवाद में स्वैच्छिक दृष्टि छीपी है। अपरिग्रह में आवश्यकताओं से अधिक वस्तुओं का संग्रह नहीं करना एवं इसकी एक सीमा निश्चित करना होती है। अपरिग्रह से आशय किसी भी प्रकार की कोई लालसा, तृष्णा, लोभ और संग्रह की भावना का न होना है। आवश्यकता से अधिक संग्रह, समाज में विकृति व भोगवादी प्रवृत्ति को जन्म देती है। अपरिग्रह समाजवाद की एक सीढ़ी है जो धनिक वर्ग से प्रांरभ होती है। आज लोगों के सामने मुख्य रूप से रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या मुंह बांये खड़ी है। संग्रह प्रवृत्ति ने विषमता विलासता और क्रूरता को जन्म दिया है। परिग्रह समाज में शोषक और शोषण वृत्ति का जनक है। इसी से वर्गभेद होता है। संग्रह मनोवृत्ति के कारण समाज एवं देश का विकास अवरूद्ध हो जाता है। अत्यधिक संग्रह के कारण जहां समाज में असमानता होती है वहीं वैमनस्यता बढ़ती है। परिग्रह संसार का सबसे बड़ा अभिशाप है। परिग्रह से ही भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। संग्रह मनोवृत्ति की अधिक लालसा झूठ, चोरी, ईर्ष्या व द्वेष आदि घणित प्रवृत्तियों को भी जन्म देती है। राग-द्वेष और मोह जिसे मूर्च्छा भी कहा जाता है, आसक्ति का भाव है। जहां आसक्ति का भाव है, वहां मेरा-तेरापन आ जाता है। इस मेरा तेरापन से ही हिंसा का जन्म होता है। अपरिग्रह के अभाव में अहिंसा का कोई अर्थ नहीं है। अहिंसा और अपरिग्रह एक ही सिक्के के दो पहलू है।

भगवान श्रीमहावीर ने अहिंसा और अपरिग्रह से जीवन जीने के उपदेश के साथ झूठ, चोरी, कुशील से बचने का भी मार्ग प्रशस्त किया है। उनका सिद्धांत सत्य, एक विज्ञान की भांति कार्य कारण सूत्र पर आधारित बुद्धिगम्य एवं ग्राह्य है। उनका अनुभव था कि सत्य आत्मा से साक्षात्कार कराता है। सत्य से व्यक्ति को मानसिक शांति मिलती है। उन्होंने कहा कि जो सत्य है वह मेरा है। कुशील से बचने के लिये उन्होंने चरित्र और त्याग का मार्ग अपना कर संयम धारण करने का उपदेश दिया। उनका ब्रह्मचर्य का सिद्धांत विचारों की शुद्धता पर बल देता है, जिसे अपनाकर स्वाभाविक रूप से परिवार नियोजित किया जा सकता है।

भगवान श्रीमहावीर केवल किसी एक समुदाय के विशेष के आराध्य न होकर सकल लोक के थे एवं लोक के लिये उन्होंने सर्वस्व का त्याग किया तथा सत्य सर्वस्व को पाकर सब में बांट दिया। अध्यात्म के क्षेत्र में मनुष्य कैसा साम्राज्य निर्मित कर सकता है, इसका ज्ञान भगवान श्रीमहावीर के जीवन से प्राप्त होता है। उन्होंने धार्मिक आराजकता, जातिवाद, अन्याय और हिंसा के विरूद्ध जनता को सचेत कर उसका हल उपस्थित कर उसका अंत ही नहीं किया, बल्कि लोक में विश्वबंधुत्व की भावना भी जागृत की।

भगवान श्रीमहावीर ने किसी नये धर्म की प्रतिष्ठा नहीं की, अपितु मानव समुदाय के खोये विश्वास को पुर्नस्थापित किया। भगवान श्रीमहावीर ने वही उपदेश दिया, जो स्वयं ने जिया-अपने में उतारा, अनुभव किया, वही लोगों को बतलाया, उनकी कथनी व करनी में लेश मात्र भी अन्तर नहीं था। भगवान श्रीमहावीर की स्वाधीनता आत्म स्वातंत्र्य और स्व आत्मनिर्माण की शिक्षा ने सांसारिक प्राणियों को नया जीवन दिया।

आज भगवान श्रीमहावीर के अनुयाई, उनके सिद्धांत और सन्मार्ग को भूल रहे है। भीड़, उत्साह, सजावट, माईक मंच और जुलूस के आगे श्रीमहावीर जन्म कल्याणक हो ही नहीं पाता। अहंकार और ममकार को छोड़े बिना न जीवन का विकास संभव है और न ही आत्मा परमात्मा बन सकती है, अपने कर्त्तव्यों को ध्यान में रखकर जीवन व समाज का निर्माण करें तथा जो व्यवहार हमें प्रिय है वही दूसरों के साथ करें तो श्रीमहावीर जन्म कल्याणक मनाना सार्थक हो सकता है।

साध्वीश्री अमितगुणा श्रीजी का चार्तुमास बदनावर में

बदनावर- बड़नगर की पुण्य धरा को संयम ग्रहण उज्जैन लानेवाली साध्वी वर्या श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास बदनावर में होने जा रहा है।

भगवान श्रीमहावीर की अहिंसा

भगवान श्रीमहावीर के अनुसार अहिंसा क्या है? अहिंसा जीवन-दर्शन का तत्व है। अहिंसा धर्म-ध्रुव है। अहिंसा ही सत्य है। जहां अहिंसा है वहां अनुशासन, अपरिग्रह, संयम, समता और विश्व बंधुत्व है। अहिंसा वह धर्म है जो न तो उच्चरण मात्र से गम्य होता है और न ही व्याख्या करने से व्यक्त होता है। अहिंसा को तभी परखा जाता है जब वह आचरण में आती है। प्राणवध को ही अहिंसा नहीं माना गया है, प्राणी मात्र का दिल दुखाना भी अहिंसा है।

अहिंसा के पुजारी भगवान श्रीमहावीर का जिस सदी में जन्म हुआ उसी सदी में फारस में जरथख पैदा हुआ और चीन में लाओत्सु। विदेह देश में वैशाखी के कुंडग्राम के महाराज सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला के यहां चैत्र शुक्ल की त्रयोदशी को भगवान श्री महावीर का जन्म हुआ। पिता सिद्धार्थ, वैशाली के शासक थे और माता त्रिशलादेवी धर्मपरायण, भारतीयता की साक्षात प्रतिमूर्ति थी। बाल्यावस्था में भगवान श्रीमहावीर का नाम वर्धमान था। किशोरावस्था में एक भयंकर नाग तथा मदमस्त हाथी को वश में कर लेने के कारण आप श्रीमहावीर के नाम से पुकारे जाने लगे थे। श्रीमहावीर सचमुच में श्रीमहावीर थे। चैत्र शुक्ल की त्रयोदशी को पूरे भारत वर्ष में श्रीमहावीर जन्म कल्याणक बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। अहिंसा के आजीवन पुजारी, वंदनीय महापुरूष भगवान श्रीमहावीर ने सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक क्रांति करके लोगों को नई राह बतलाई। उनका जीवन संदेश आज सिर्फ भारत ही नहीं, सारे विश्व को अनुप्राणित कर रहा है।

भगवान श्रीमहावीर के जीवन-दर्शन के अनुसार हरेक आत्मा खुद के पुरूषार्थ से ईश्वर बन सकती है। उनके अनुसार पुरूषार्थ मनुष्य का धर्म है। संपूर्ण विश्व कल्याण की दृष्टि से महावीर ने पांच महाव्रत बताये हैं- 1- अहिंसा, 2- सत्य, 3- अस्तेय 4- ब्रह्मचर्य, 5- अपरिग्रह।

भगवान श्रीमहावीर के अनुसार अहिंसा क्या है? अहिंसा जीवन-दर्शन का तत्व है। अहिंसा धर्म-ध्रुव है। अहिंसा ही सत्य है। जहां अहिंसा है वहां अनुशासन, अपरिग्रह, संयम, समता और विश्व बंधुत्व है। अहिंसा वह धर्म है जो न तो उच्चरण मात्र से गम्य होता है और न ही व्याख्या करने से व्यक्त होता है। अहिंसा को तभी परखा जाता है, जब वह आचरण में आती है। प्राणवध को ही अहिंसा नहीं माना गया है, प्राणी मात्र का दिल दुखाना भी अहिंसा है।

भगवान श्रीमहावीर ने कहा है कि- किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो, जिये और जीने दो। उन्होंने अहिंसा को मानव का श्रेष्ठ धर्म बतलाया है। उनके अनुसार मानव के पास अहिंसा से बड़ी कोई शक्ति नहीं है।

श्रीमहावीर के अनुसार अहिंसा ही परम धर्म है, अहिंसा ही परब्रह्म है, अहिंसा ही सुख-शांति देनेवाली है। यहीं संसार का त्राण करने वाली है। मानव का सच्चा धर्म व सच्चा कर्म अहिंसा ही है। जैन धर्म एक ऐसा धर्म है जो इतिहास के प्रारंभ से ही अहिंसा-प्रधान है। इसका सम्पूर्ण आचार-विचार अहिंसा की धूरी पर घूमता है।

कोई दुःख नहीं चाहता इसीलिए किसी को दुःख मत दो, कहकर भगवान महावीर ने समस्त प्राणी-जगत के प्रति समता, सौहार्द और मैत्रीपूर्ण भावना मानव-समाज को ग्रहण करने की सीख दी है। महावीर का चिंतन अपने आप से अनूठा है। सर्वनाश की कगार पर खड़े विश्व शांति के लिये श्रीमहावीर का उपदेश एकमात्र मार्ग है। सर्वत्र सुख-शांति हेतु उनका अहिंसा का सिद्धांत है, मूलमंत्र है। उनके अनुसार जब सभी जीवन जीना चाहते है, मरना कोई नहीं चाहता, सभी सुख चाहते है, दुःख कोई नहीं तो ऐसी स्थिति में उन्हें कष्ट पहुंचाना या ना देना या उनके प्राण हर लेने का हमें कोई अधिकार नहीं है। जब हम किसी को प्राण नहीं दे सकते तो उसे लेने का हमें कोई हक नहीं है।

श्रीमहावीर ने जहां जीव-जन्तुओं तक की हिंसा को निषेध बताया वहां मानव हिंसा का विचार तक आना भी हिंसा के समान ही है। भगवान महावीर ने आचारांग सूत्र (1/5/2) में अहिंसा के नए अध्याय स्थापित करते हुए कहा है-

तुमंसि नाम न चेव जे इंतव्य ति सन्नसि।
तुमंसि नाम तं चेवं जं परिमावेत्वं ति मन्नसि।।

अर्थात् जिसे तू मारना चाहता है वह तू स्वयं ही है। रूप एवं आकार की दृष्टि से सभी चैतन्य एक समान ही है, यही अद्वैत भावना ही अहिंसा का मूलाधार है।

भगवान श्रीमहावीर के अनुसार- कुछ किसी प्रयोजन से,

कुछ क्रोधवश, कुछ लोभवश और कुछ अपनी अज्ञानता के कारण हिंसा करते है परन्तु हिंसा चाहे किसी कारणवश की गई हो या अकारण जानबूझकर की गई हो या अज्ञानतावश वह हिंसा ही कही जाएगी।

हिंसा सिर्फ जीवन-हत्या का खून करना ही नहीं, बल्कि किसी का दिल दुखाना, तरह-तरह के ताने देना, परेशान करना, किसी भी रूप में बुराई करना, ये सभी बातें हिंसा की श्रेणी में आती है। महावीर के अनुसार हिंसा सब दुःखों की जड़ है। जब व्यक्ति 'स्व' को प्रमुखता देने लगता है, अपने स्वार्थ को मुख्य मान लेता है, समाज के प्रति उदासीन हो जाता है, निरपेक्ष व्यवहार करने लगता है तो हिंसा को बढ़वा मिलता है।

हिंसा को जीतना हो तो आज हमें अपना व्यवहार बदलना होगा। आधुनिकता की अंधी दौड़ में जिस तरह हम बेतहाशा उड़े जा रहे है, हमें थमना होगा, अपने पैर धरती पर टिकाने होंगे। मंदिर में जाने, भगवान का नाम लेने या पूजा-अर्चना कर लेने मात्र से हम आध्यात्मिक या पुण्यात्मा नहीं हो जाते। महावीर का कहना है कि यदि मुझे पाना चाहते हो तो हिंसा छोड़े, परिग्रह छोड़े, दोनों एक साथ नहीं चल सकते। परिग्रह के मोह को त्यागे बगैर हिंसा को छोड़ना असंभव है। हम हाथ में अहिंसा की जयपताका लेकर कितना भी दौड़े, किन्तु यदि जमीर ही हमारा स्वार्थ व अहंकार से पटा भरा है तो क्या मतलब? हाथ में अहिंसा और पैर में हिंसा दोनों कैसे चलेगा?

महावीर का कहना कितना सही है! अहिंसा का आदर्श हमारे आचरण में, अपरिग्रह का संस्पर्श हमारे व्यवहार में एवं अनेकांत का उत्कर्ष हमारे विचार में होना चाहिये। हम महावीर के अनुयायी है, हम चारित्र में करूणा मैत्री का विश्वव्यापी संगीत संजोकर जीवन को सुंदर फूलों की क्यारी बनाएं। उसे हथियारों और क्रूरताओं का प्रसूतिगृह क्यों बनाएं? आज उपभोक्तावादी संस्कृति के चलते जहां ज्ञान-विज्ञान अपने विकास के चरमोत्कर्ष पर पहुंच चुका है। हिंसा भी उसके साथ उसी अनुपात में बढ़ी है।

भौतिकतावादी एवं वैज्ञानिक आविष्कारों की चकाचौंध में आज का मानव अपनी अंतरआत्मा की आवाज खो बैठा है और अपने ही हाथों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने को तैयार बैठा है। ऐसे में महावीर की याद आना स्वाभाविक है।

आज विश्व आंतकवाद, आर्थिक विषमता, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, हिंसा, असहिष्णुता, अनैतिकता आदि समस्याओं से जूझ रहा है। उसका एक मात्र समाधान भगवान महावीर की अहिंसा है। भगवान महावीर के उपदेश आज भी उतने ही सामायिक सार्थक एवं समुचित है, जितने कि आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व थे।

महावीर का जीवन-दर्शन पढ़कर बड़ा आश्चर्य होता है कि महाश्रमण वर्धमान जैसा प्राणी भी कभी धरती पर हुआ था। महावीर पहले शारता है, जिन्होंने संसार को माया नहीं बल्कि कड़वा यथार्थ माना।

पक्षी प्रकृति के पालनहार

*** अनोखीलाल कोठारी, उदयपुर**

पक्षी प्रकृति के पालनहार,
मत करो इन पर अत्याचार।
पक्षी है तो जीवन साथ
मत बनो आप इनके धाती।।

भूलोगे सब रीति नीति,
विकृत होगी यह संस्कृति।
चहकते पक्षी करते शोर,
उठ मनवा हो गई भोर।।

पक्षी है बैठे डाली-डाली,
इनसे जग की छटा निराली।
पर्यावरण की करें सुरक्षा,
तभी होगी हमारी जीवन रक्षा।।

हे मानव अब तो तू आँखें खोल,
जीवन के दो दिन है, अनमोल।
बूंद-बूंद है जल की अमृत,
कभी न करना इसे विस्मृत।

पक्षियों से करो तुम प्यार,
प्रकृति के अनुपम उपहार।
प्रकृति की देन है अमूल्य,
तभी तो है वह ईश्वर तुल्य।।

**** जीवन का लक्ष्य है-आन्तरिक परिशोधन, साहस और परमार्थ। जो उन्हें पकड़े रहता है वह मार्ग से भटकता नहीं।***

सागर समुदाय के गौरव
पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी महाराज

महा मनस्वियों का जीवन संसार में आकाश की तरह अनंत, सागर की तरह गंभीर एवं कल्पतरू कामधेनु की तरह अभीष्ट हुआ करता है। उनमें धरा-सी धीरता, हिमालय सी अचलता, सूर्य की तेजस्विता, चन्द्र-सी शीतलता और गंगा सी पवित्रता समाविष्ट हुआ करती है। श्री शंखेश्वर आगम मंदिर के संस्थापक पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी म.भी उन्हीं महा मनस्वियों में एक है।

आपका जन्म वि. संवत् ११८२ कार्तिक वदी १ के शुभ दिन सुरत के एक सुखी सम्पन्न झवेरी परिवार में हुआ था। आपके पिताश्री का नाम उत्तमचंद झवेरी एवं मातुश्री का नाम श्रीमती भूरीदेवी था। आप अमरचन्द भाई के नाम से पुकारे जाते थे। आपका परिवार धर्मपरायण एवं सुसंस्कारी था।

आपका व्यवहारिक और धार्मिक अध्ययन बम्बई में हुआ। प्रकृति से आप चिंतनशील व्यक्तित्व के धनी थे। परिणाम स्वरूप पूज्य मुनिश्री महिमाविजयजी म.के परिचय से आप में धर्म का बीजारोपण हो गया और इसे पल्लवित किया मालवोद्धारक पूज्य आचार्यदेव श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.के पावन संसर्ग ने।

वैराग्य भाव जागृत होने से आप सदैव 'सस्नेही प्यारा हो संयम कब ही मिले' की भावना में रमण करने लगे। भाई-बहनों में आप सबके लघु अनुज होने के कारण माता-पिता आदि स्वजनों के अत्यधिक लाड़ले थे। अतः महाभिनिष्कमण में अवरोध तो आना ही था। किंतु आपकी महदेच्छा का आदर कर माता-पिता ने खुशी-खुशी स्वीकृति प्रदान की।

२४ वर्ष की युवावय में वि.संवत् २००६ वैशाख शुक्ला १३ के शुभ दिन सुरत में महोत्सवपूर्वक आगमोद्धारक पूज्य आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म.के सान्निध्य में संयम स्वीकार कर आप पूज्य आचार्यदेव श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी म. (तत्कालीन पंन्यास) के शार्गिद बन गये। दीक्षा पश्चात आप मुनिश्री अभ्युदयसागरजी म.के नाम से विख्यात हुए। पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री का अंतिम वासक्षेप ग्रहण करने का सौभाग्य आपके ही सिर है।

ज्ञान का क्षयोपशम तीव्र होने से आपने गुरूदेव की निश्रा में अल्प समय में ही जैन दर्शन के साथ-साथ दर्शनों का भी विस्तृत ज्ञान प्राप्त किया। आप संस्कृत, हिंदी, गुजराती एवं अंग्रेजी भाषा के विद्वान थे।

योग्यता और पर्याय की अभिवृद्धि देख, पूज्य गुरूदेवश्री ने अपने लघु वयस्क शिष्य मुनिश्री नवरत्नसागर (उस समय) को आपके साथ घाटकोपर (बम्बई) चातुर्मासार्थ भेज दिया गया। यह आपका स्वतंत्र रूप से प्रथम चार्तुमास था जो कि ऐतिहासिक रहा। बम्बई के विख्यात घाटकोपर जिनालय के निर्माण में आपकी प्रेरणा, तप एवं त्याग से जुड़ हुआ है। आपश्री शासन के अनेकानेक कार्यों में यशभागी बने। आप जैन शासन के एक प्रखर वक्ता के रूप में उभरे थे। आपके प्रभावशाली प्रवचनों में छोटी से छोटी बातों की तल स्पर्शी विवेचना सुनने को मिलती थी। आपने अपनी जादूई वाणी द्वारा कई ऐतिहासिक कार्य किये। वलसाड, नेर, नौगामा, राजोद, घाटकोपर (बम्बई) आदि अनेक संघों में एकता जिसके ज्वलंत उदाहरण है।

आपके यशस्वी जीवन की अमर यादगार श्री शंखेश्वर तीर्थ में बना भव्य आगम मंदिर है। परमाराध्य गुरूदेवों की स्मृति में आपने मुनि अवस्था में ही कठोर अभिग्रह धारण कर, दिन-रात अथक प्रयास पूर्वक इसका निर्माण करवाया। अलबत्ता, इस पुण्य कार्य में आपके सामने कई विघ्न-विरोध उपस्थित हुए, यहां तक कि कोर्ट-कचहरी तक भी पहुंचना पड़। किंतु आप निर्भिक अडिग होकर अपने संकल्प में डटे रहे और अंत में विजयी हुए। आगम मंदिर के एकाध कोने तक में भी आपने अपना नाम अंकित करने का प्रयास नहीं किया। यह आपकी निस्पृहता का ही एक आदर्श उदाहरण है।

आपके यशस्वी जीवन की अमर यादगार श्री शंखेश्वर तीर्थ में बना भव्य आगम मंदिर है। परमाराध्य गुरूदेवों की स्मृति में आपने मुनि अवस्था में ही कठोर अभिग्रह धारण कर, दिन-रात अथक प्रयास पूर्वक इसका निर्माण करवाया। अलबत्ता, इस पुण्य कार्य में आपके सामने कई विघ्न-विरोध उपस्थित हुए, यहां तक कि कोर्ट-कचहरी तक भी पहुंच पड़ किंतु आप निर्भीक अडिश होकर अपने संकल्प में बटे रहे और अंत में विजयी हुए। आगम मंदिर के एकाध कोने तक में भी आपने अपना नाम अंकित करने का प्रयास नहीं किया। यह आपकी निस्पृहता का ही एक आदर्श उदाहरण है।

३० वर्ष के संयम पर्याय के पश्चात आपको वि.संवत् २०२६ कार्तिक शुक्ला ५ के दिन अहमदाबाद में पूज्य पंन्यास श्री प्रबोधसागरजी म.की पुनीत निश्रा में गणिपद तथा वि.संवत् २०३१ वैशाख शुक्ला ३ के शुभ दिन शंखेश्वर में गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.के वरदहस्त पंन्यासपद से अलंकृत किया गया।

गुजरात के साथ-साथ मालवा प्रांत में भी आपने विचरण कर वहां के निवासियों सुषुप्त निद्रा से जागृत किया। वहां अनेक जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार प्रतिष्ठाएं, दीक्षा, आयंबिल शाला, धार्मिक पाठशाला आपकी अभी दृष्टि से सम्पन्न हुई। आपने अपने लघुगुरू भ्राता मालवभूषण पं.श्री नवरत्नसागरजी म. (उस समय) आदि शिष्यमंडल के साथ ग्रामानुग्राम विचरण कर जैन धर्म की महान प्रभावना की। आप स्वास्थ्य की दृष्टि से अस्वस्थ थे। किंतु आपने जैन शासन के लिये कभी स्वास्थ्य की चिन्ता नहीं की। आप शासन के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थे। पूज्य गणिवर्य श्री जितरत्नसागरजी एवं मुनिश्री मुक्तिरत्न सागरजी स्वशिष्य हो आपके निश्रावर्ति कुल १२ साधु थे।

वि.संवत् २०४४ फाल्गुण वदी ९ के दिन राजगढ़ से निकले मांडवगढ़ तीर्थ छःरि पालित संघ के तिरला मुकाम पर संध्या में प्रतिक्रमण पश्चात रात्रि ८.०७ मिनिट पर आप ब्रह्मलीण हो गये।

आपकी अंतिम संस्कार भूमि धार में स्मृति धाम का निमार्ण हो गया है तथा शंखेश्वर आगम मंदिर में आपश्री के गुरू-मंदिर का निमार्ण हो गया है।

गच्छाधिपति पूज्य आचार्यश्री चिदानंदसागर सूरीश्वरजी महाराज

शान्त एवं सरल स्वभावी गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री चिदानंद सागरर सूरीश्वरजी म.का जन्म संयमरत्न की खदान सम कपड़वंज गांव में हुआ। कपड़वंज की भूमि जिसे नवांगी टीकाकार आचार्य श्री अभयदेवसूरीजी म. आगमोद्धारक आचार्य श्री आनंद सागर सूरीजी म. आगम प्रभावक मुनिश्री पुण्यविजयजी म.आदि सैकड़ें पुण्यात्माओं को जन्म देने का सौगाग्य प्राप्त है, उसी पुण्यधरा पर बीज के चन्द्र की भांति वृद्धिगत होते चारित्रनायक श्री संयम के रंग से रंग गए।

परिवारजनों का अत्यन्त विरोध होने पर भी अटलव्रतधारी आपश्री ने १८ वर्ष की युवावस्था में ही वि.संवत् १९८७ में पूज्य आगमोद्धारकसूरी का शिष्यत्व स्वीकार कर संयम जीवन के कठोर मार्ग पर प्रयाण किया। आपश्री का नाम मुनिश्री चिदानंद सागरजी म.रखा गया।

पूज्य गुरूदेवश्री के सानिध्य में शास्त्राभ्यास कर आपश्री संयम साधना में लीन हो गए। आप एकांत प्रिय प्रकृति के धनी थे। कीर्ति और प्रशस्ति के व्यामोह से दूर रहकर आत्मसाधना के साथ-साथ शांतिपूर्वक शासन प्रभावना के विविध कार्य करना यही आपका एक मात्र ध्येय बन गया। छोटे-छोटे गांवों में विचरण तथा चार्तुमास कर उन्होंने 'सविजय करूं शासन रसि' की भावना को साकार करने का प्रयास किया।

पूज्यश्री की संयम साधना का विरोध करने वाले उनके पिताश्री को भी संयम अनुरागी बनाकर दीक्षा प्रदान की और मुनिश्री हितसागरजी म.के रूप में नामांकित किया। अन्तावस्था तक पिता मुनिश्री की अनन्य सेवा करर पितऋण से मुक्त हुए।

आरंभ से ही पूज्य सागरजी म. के समुदाय में पद प्रदान-पदोन्नति को कम महत्व दिया जाता है। तथापि योग्यता और पर्याय की संवृद्धि के अनुसार आपको वि.संवत् २०११ कपड़वंज में पूज्य आचार्यदेव श्री माणिक्यसागर सूरीश्वरजी म. के वरदहस्त गणि पद वि.संवत् २०२१ सुरत में पंन्यासपद तथा वि.संवत् २०३६ वेजलपुर में पूज्य आचार्यदेव श्री हेमसागर सूरीश्वरजी म.द्धारा आचार्य पद प्रदान किया गया।

पूज्य संयम जीवन की मस्ती में मस्त हो, संयम जीवन का शुद्ध पालन कर रहे थे अचानक वि.संवत् २०४३ में आपश्री पर विशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति पद का भार आ पड़ा जिसका आजीवन लगनपूर्वक निर्वाह करर आपने सभी को आश्चर्य में डाल दिया। इतने महान पद पर विराजित होने के बाद भी आपमें कभी अहंकार और आडम्बर का दर्शन तक नहीं होता था।

आपश्री के द्धारा शासन प्रभावना के अनेकविध कार्य सम्पन्न हुए। कपड़वंज में आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. स्मारक मंदिर के उद्घाटन का महोत्सव भी आपश्री की निश्रा में सम्पन्न हुआ।

वि.संवत् २०४७ जामनगर में अपना अंतिम समय नजदीक जानकर आपश्री ने छठ का प्रत्याख्यान कर चारों का आहार का त्याग कर दिया और मागसर वदी-५ के दिन नमस्कार मंत्र का स्मरण करते चतुर्विध संघ के सानिध्य में कालधर्म को प्राप्त हुए।

शाश्वत है भगवान महावीर के सिद्धांत

आज से 2600 वर्ष पूर्व वर्तमान बिहार राज्य के वैशाली गणतंत्र में कुंडलपुर के राज परिवार में जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म हुआ था। उनके पिता राजा सिद्धार्थ और माता रानी त्रिशला थी। यद्यपि जैन धर्म हजारों वर्षों का इतिहास रखते हुए दुनिया के प्राचीनतम धर्मों में से एक है, लेकिन आधुनिक इतिहास के पन्नों पर प्रसिद्ध जर्मन विद्वान हरसन जेकोबी जैसे इतिहासकारों ने यह लिखा है कि जैनों के 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ एक ऐतिहासिक पुरूष थे तथा उनके 250 वर्षों बाद भगवान महावीर अवतरित हुए। जन्म नाम 'वर्द्धमान' रखने वाले महावीर शैशवकाल में अपने असाधारण शौर्य तेज, विद्या और साहस के कारण महावीर कहलाए। राज परिवार के सुख और वैभव के बीच रहते हुए भी वे उनसे अलिप्त रहे। महावीर में बचपन से ही वैराग्य भाव था। 30 वर्ष की अवस्था में उन्होंने संन्यास लेकर तप, संयम और आत्म-साधना के मार्ग पर अपने कदम रखे। 12 वर्षों तक जंगलों में घोर तपस्या करके केवल ज्ञानी बने। केवल ज्ञान प्राप्त करने के बाद 30 वर्षों तक वे प्राणी मात्र के कल्याण के लिये धर्म का प्रचार-प्रसार करते रहे।

यह इतिहास का महत्वपूर्ण तथ्य है कि जब भारत में ईसा पूर्व छठी शताब्दी में भगवान महावीर और भगवान बुद्ध धर्मदेशना दे रहे थे, लगभग उसी समय चीन में कन्फ्यूशस, यूनान में सुकरात और फारस में जरथुस्त्र प्रेम और मैत्री के पैगाम दे रहे थे। भगवान महावीर के धर्म उपदेशों में कुछ ऐसी विलक्षणताएं दिखाई दी जो अन्यत्र दुर्लभ रही। इन्हीं विलक्षणताओं ने जैन धर्म को विश्व धर्म के रूप में प्रतिष्ठित किया। भगवान महावीर ने अहिंसा की सूक्ष्म विवेचना की और कहा कि चीटी जैसे सूक्ष्म जीव को मारना ही हिंसा नहीं है वरन किसी जीव के मन को दुखाना भी हिंसा है। उन्होंने कहा कि भारी आडंबर और कर्मकांड धर्म नहीं है, वरन सत्य, अनेकांतवाद, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि धर्म की बुनियादी है।

भगवान महावीर के समय समाज और देश जातिवाद, दासप्रथा, अंधविश्वास, नारी शोषण तथा भाग्यवाद जैसी कुरीतियों में फंसा हुआ था। भगवान महावीर ने अहिंसा का संदेश देते हुए कहा कि संसार के सभी प्राणी और वनस्पति समान है। सभी को जीवित रहने का समान अधिकार है। इसलिये किसी प्राणी को न मारो, न हानि पहुंचाओ न पीड़ दो और न ही उसका शोषण करो। सैकड़ें वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने अपने ज्ञान के आधार पर वनस्पति में जीवन की बात कहकर यह उपदेश दिया था कि पेड़-पौधे हमारे पर्यावरण का महत्वपूर्ण अंग है और इन्हें भी जीव ही मानते हुए हानि नहीं पहुंचानी चाहिये।

भगवान महावीर ने कर्मवाद पर जोर दिया और कहा कि हमें हमेशा अच्छे कार्य करने चाहिये तथा अच्छे विचार रखना चाहिये। हम जो भी कर्म करते है, उनका फल स्वयं को भोगना होता है। भगवान महावीर आत्मा, परलोक, पुनर्जन्म और पूर्व जन्म के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कहा कि 'परलोक नहीं है' ऐसा मानना और चिंतन करना मूढ़ता है। कुछ कर्मों का फल व्यक्ति व्यक्ति को उसी जीवन में भोग लेना पड़ता है तो कुछ कर्मों का फल वह अगले जन्म में भी भोगता है। इसीलिये उन्होंने शील-सदाचार का पालन करने की बात कही।

भगवान महावीर ने जातिवाद का कड़ा विरोध किया। उनके समय में राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक सभी क्षेत्रों में जातिवाद का दैत्य विकराल रूप में उपस्थित था। भगवान महावीर ने कहा कि निम्न जाति में जन्मा व्यक्ति भी अच्छे कार्य और तप साधना द्वारा श्रेष्ठता व पूज्यता को प्राप्त कर सकता है। इसके विपरीत उच्च कुल में उत्पन्न होकर भी चरित्र भ्रष्ट व्यक्ति उच्चता हासिल नहीं कर सकता। इसलिए जाति की दृष्टि से न कोई ऊंचा है, न नीचा है। इतना ही नहीं, भगवान महावीर ने नारी जाति को धर्म के पालन में समाज दर्जा दिया और आगम के अध्ययन की आज्ञा भी दी। उन्होंने मनुष्य जाति को पुरूषार्थी बनाने के लिये इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक व्यक्ति अपने भाग्य का स्वयं निर्माता होता है। उसका भाग्य किसी भगवान या दैवी शक्ति के भरोसे निर्धारित नहीं होता। उन्होंने कहा कि प्रत्येक आत्मा परमात्मा बन सकती है। आत्मा को परमात्मा बनाने के लिये जैन धर्म का लक्ष्य मोक्ष बताया गया है। इसे ही जैन साधना का गंतव्य शिखर कहा जाता है। भगवान महावीर ने मोक्ष के तीन उपाय बनाए- सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व सम्यक चारित्र। सम्यक दर्शन का अर्थ है यथार्थ दृष्टिकोण सम्यक ज्ञान का अर्थ है यथार्थ का बोध और सम्यक चारित्र का अर्थ है पवित्र आचरण।

भगवान महावीर ने साधु-संतों की आचार संहिता के साथ-साथ गृहस्थों की आचार संहिता के लिए भी नई दिशाएं दी। उन्होंने कहा कि सुख का आधार है- अध्यात्म। यदि संघर्ष-

शीलता, कामना, धन और सत्ता ये सभी शक्तियां धर्म से नियंत्रित हो तो मानव जाति के लिये वरदान बन सकती है। सच्ची सुख-समृद्धि अहिंसा, सत्य और अध्यात्म के धरातल पर ही संभव है। उन्होंने कहा कि असंयम में दुःख है तथा संयम में सुख है, इसलिये असंयम को त्यागो और संयम का आचरण करो। एक गृहस्थ साधक की आचार संहिता और उसका साधना क्रम भगवान महावीर की देशनाओं में जितना सुंदर और व्यवस्थित मिलता है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है।

भगवान महावीर ने सुख से जीने के लिये व्यसन छोड़ने तथा जुआ, मांसाहार, मद्यपान, वेश्यागमन, शिकार के निषेध को अपनी धर्म-देशनाओं का प्रमुख अंग बनाया था।

भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित जैन धर्म के सिद्धांत घृणा, आंतक, शोषण, अनाचार और सामाजिक पतन वर्तमान परिस्थितियों में अत्यधिक प्रासंगिक है। आज समाज, देश और विश्व को महावीर की उदात्त अहिंसा की आवश्यकता है ताकि चारों ओर बढ़ती हुई हिंसा, असहिष्णुता और बैर भाव पर रोक लग सके। भगवान महावीर का अनेकांतवाद सत्य के विभिन्न दृष्टिकोण की मान्यता रखता है। आज इसी को व्यावहारिक रूप में अपनाकर मतभेदों, संघर्षों और विवादों को रोका जा सकता है। भगवान महावीर का अपरिग्रह सिद्धांत स्वेच्छा से परिग्रह परिणाम की बात कहता है। इसे अपनाए जाने से सामाजिक न्याय की वर्तमान आवश्यकता की प्राप्ति हो सकती है। सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चारित्र के त्रिरत्नों का व्यावहारिक पालन अनैतिकता, कदाचरण, मिथ्यात्व, व्यभिचार, भ्रष्ट आचरण, अपराधीकरण आदि बुराइयों को रोक सकता है। इन्हीं त्रिरत्नों के परिपालन से मांसाहार से होनेवाली बीमारियों, परस्त्रीगमन से होने वाले एड्स जैसे रोगों को दूर किया जा सकता है व मदिरापान से खोखले होते शरीरों, जुए से बर्बाद होते परिवारों तथा शिकार से विलुप्त होती जीवों की प्रजातियों को बचाया जा सकता है। अतः भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत शास्वत है, वैज्ञानिकता लिये हुए है। ये सिद्धांत कल भी प्रासंगिक है और आने वाले कल में भी प्रासंगिक रहेंगे।

** महर्षि चाणक्य प्रारंभ में एक साधारण व्यक्ति और गरीब ब्राह्मण थे। उनकी तीन विशेषताएं थीं। वे माँ के भक्त, विद्या व्यसनी और संतोषी व्यक्ति थे। जो कुछ खाने-पहनने को मिल जाता, उसी में संतोष रखकर विद्याध्ययन करते हुए अपनी ममतामयी माँ की सेवा किया करते थे। उनकी मातृभक्ति, विद्या-व्यसन और दृढ़ संकल्प की अनेक कथाएं प्रसिद्ध हैं।*

एक बार किशोरावस्था में अपनी माँ को पुस्तक पढ़कर सुनाते हुए वे हंस पड़े। माँ ने उनके मुख की तरफ देखा और वह रो पड़ी। चाणक्य को माँ के इस असामयिक रूदन पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा- माँ ! तू इस प्रकार मेरे मुंह की ओर देखकर रो क्यों पड़ी? माँ ने उत्तर दिया- बू बड़ा होकर बहुत बड़ा राजा बनेगा और तब अपनी गरीब माँ को भूल जाएगा। चाणक्य ने पुनः विस्मय से पूछा- पर तुझे यह कैसे पता चला कि मैं राजा बनूंगा। तेरे आगे के दो दांतों में राजा बनने के लक्षण हैं। उन्हें देखकर ही मैंने समझ लिया कि तू राजा बनेगा। माँ ने चाणक्य को बतलाया।

चाणक्य ने माँ की बात सुनी और घर से बाहर जाकर पत्थर से अपने वे दोनों दांत तोड़ डाले, फिर अंदर आकर माँ से हंसते हुए बोले- ले, अब तू निश्चिंत हो जा, मैंने राजा के लक्षणों वाले दोनों दांत तोड़कर फेंक दिए। अब न मैं राजा बनूंगा और न तुझे छोड़कर जाऊंगा। यह था चाणक्य की दृढ़ संकल्प शक्ति और मातृभक्ति का ज्वलंत प्रमाण।

शासन समाचार

जाजूर कर्नाटक के श्री संकटमोचक धाम में त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन हुआ

जाजूर- अरसीकेरे के समीप श्री संकट मोचक पार्श्व-भैरवधाम में योगीराज श्री शांतिसूरीजी, श्री नाकोड़ा भैरव, देवीमां पदमावती के मंदिर का भूमि पूजन-खनन मुहूर्त पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। इस मंगल प्रसंग पर 999 जोड़ों के साथ श्री नाकोड़ा महापूजन भी पढ़ाई गई। पूज्य पंन्यास प्रवर श्री इन्द्रजितविजयजी म.सा. की निश्रा में यह आयोजन 12 से 14 मार्च तक हुआ। बड़ी संख्या में नाकोड़ा और गुरूदेव श्री शांतिसूरी के भक्तों का आगमन हुआ। अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण ने श्री नाकोड़ा भैरव महापूजन में रंग जमा दिया। भूमिपूजन एवं खनन मुहूर्त 14 मार्च को सम्पन्न हुआ। 12 मार्च को भौमियाजी महापूजन तथा 13 मार्च को श्री नाकोड़ा भैरव पूजन पढ़ाई गई।

मैं शनि हूं...!

❊ ज्योतिर्विद् पं. श्री श्रीकृष्णजी शर्मा

पाठकों! नमस्कार, आप घबराइये नहीं, हाँ मेरा ही नाम शनि है। लोगों ने बिना वजह मुझे हमेशा नुकसान पहुंचानेवाला ग्रह बताया है। फलस्वरूव लोग मेरे नाम से डर जाते है। मैं आपको यह स्पष्ट कर देना अपना दायित्व समझता हूं कि मैं किसी भी व्यक्ति को अकारण परेशान नहीं करता। हाँ, यह बात अलग है कि मैंने भगवान शिवकी उपासना की थी, तब उन्होंने मुझे दण्डनायक ग्रह घोषित करके नवग्रहों में स्थान प्रदान किया था। यही कारण है कि मैं मनुष्य हो या देव, पशु हो या पक्षी, राजा हो या रंक-सबके लिये उनके कर्मानुसार उनके दण्ड का निर्णय करता हूं। तथा दण्ड देने में निष्पक्ष निर्णय लेता हूं फिर चाहे व्यक्ति का कर्म इस जन्म का हो या पूर्व जन्म का। सत्ययुग में ही नहीं, कलियुग में न्यायपालिका द्धारा चोरी-अपराध आदि की सजा देने का प्रावधान है। यह व्यवस्था समाज को आपराधिक प्रवृत्ति से बचाये रखने हेतु की गयी है, जिससे स्वच्छ समाज का निर्माण हो तथा अपराध की पुनरावृत्ति न हो। मेरी निष्पक्षता और मेरा दण्डविधान जगजाहिर है। यदि अपराध या गलती की है तो फिर देव हो या मनुष्य, पशु हो या पक्षी, माता हो या पिता मेरे लिये सब समान हैं। मेरे पिता सूर्य ने जब मेरी माता छाया को प्रताड़ित किया तो मैंने उनका भी घोर विरोध करके उन्हें पीड़ पहुंचायी। फलस्वरूप वे हमेशा के लिये मुझसे नाराज हो गये और आज तक शत्रुतुल्य व्यवहार ही करते हैं। यहां यह भी उल्लेख करना प्रासंगिक समझता हूं कि यदि व्यक्ति ने पूर्व जन्म में अच्छे कर्म किये हैं तो मैं उसकी जन्म पत्री में अपनी उच्च राशि या स्व राशि पर प्रतिष्ठित होकर उसे भरपूर लाभ भी पहुंचाता हूं। अब आप मेरी प्रवृत्ति के बारे में भली भांति परिचित हो गये होंगे। आइये, आज मैं आपको अपने सम्पूर्ण परिचय से अवगत कराता हूं।

ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को मेरा जन्म हुआ था। मेरे पिता का नाम सूर्य तथा माता का नाम छाया है। हम पांच भाई-बहन है। यमराज मेरे अनुज है तथा तपती, भद्रा और यमुना मेरी सगी बहनें है। लोग मुझे अनेक नामों से जानते है। कुछ लोग मुझे मन्द, शनैश्चर, सूर्यसूनु, सूर्यज, अर्कपुत्र, नील, भास्करी, असित, छायात्मज आदि कहकर भी संबोधित करते हैं। मेरा आधिपत्य मकर एवं कुम्भ राशि तथा पुष्य, अनुराधा एवं उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र पर है।

मैं अस्त होने के 38 दिन के अनन्तर उदय होता हूं। मेरी उच्च राशि तुला तथा नीच राशि मेष है। जन्मकुण्डली के 12 भावों में मैं 8 वें, 10 वें एवं 12 वें भावका कारक हूं। जब मैं तुला, कुम्भ या मकर राशि पर विचरण करता हूं, उस अवधि में किसी का जन्म हो तो मैं रंक से राजा भी बना देने में देर नहीं करता। यदि जातक के जन्म के समय मैं मिथुन, कर्क, कन्या, धनु अथवा मीन राशि पर विचरण करता हूं तो परिणाम मध्यम, मेष, सिंह तथा वृश्चिक पर स्थित होऊं तो प्रतिकूल परिणाम के लिये तैयार रहना चाहिये। हस्तरेखा शास्त्र में मध्यमा अंगुली के नीचे मेरा स्थान है तथा अंक ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक माह 8, 17, 26 तारीख का मैं स्वामी हूं। मैं 30 वर्षों में समस्त राशियों का भ्रमण कर लेता हूं। एक बार साढ़े साती आने के पश्चात 30 वर्षों के बाद ही व्यक्ति मुझ से प्रभावित होता है। अपवाद को छोड़ दिया जाय तो व्यक्ति अपने जीवन में तीन बार मेरी साढ़े साती में साक्षात्कार करता है।

आपने यह कहावत सुनी ही होगी कि 'जाको प्रभु दारूण दुःख देही, ताकि मति पहले हरि लेही।।' मेरा भी यही सिद्धांत है, जिस व्यक्ति को मुझे दण्ड देना हो, मैं पहले उसकी बुद्धि पर अपना आक्रमण करता हूं अथवा उसे दण्ड देने के लिये किसी अन्य की बुद्धि का नाश करके जातक को दण्ड देने का कारण बना देता हूं। कोई अपराध करता है तो मेरी अदालत में उसे पूर्व में किये हुए बुरे कर्मों का दण्ड पहले मिलता है, बाद में मुकदमा इस आशय का चलता है कि उसके आचरण एवं चाल-चलन में सुधार हुआ है या नहीं। यदि दण्ड मिलते-मिलते जातक स्वयं में सुधार कर लेता है तो उसकी सजा समाप्त करते हुए उसे पूर्व की यथास्थिति में लाने का निर्णय लेता हूं। साथ ही यदि उसका चाल-चलन उत्कृष्ट रहा हो तो उसे अपनी दशा अर्थात् सजा की अवधि के पश्चात अपार धन-दौलत तथा वैभव से प्रतिष्ठा पित कर देता है।

सजायोग्य अपराध- भ्रष्टाचार, झूठी गवाही, विकलांगों को सताना, भिखारियों को अपमानित करना, चोरी, रिश्वत चालाकी से धन हड़पना, जुआ खेलना, नशा- जैसे शराब, गुटका तम्बाकू खाना, व्याभिचार करना, परस्त्री गमन, अपने माता-पिता या सेवक का अपमान करना, चींटी-कुत्ते या कौंए को मारना आदि इन अपराधों की कम या ज्यादा सजा मेरी अदालत में अवश्य ही मिलती है।

वेशभूषा- न्याय क्षेत्र में काले रंग का विशेष स्थान प्राप्त है। मेरी वेशभूषा इसी कारण काली है। आज भी न्यायालय में

न्यायाधीश या वकील काला कोट तथा काला गाउन ही पहनते है। यहां तक कि न्याय की देवी की आंखों पर भी काली पट्टी ही बंधी हुई है।

मेरा मंदिर- मेरी पूजा कहीं भी किसी भी प्रकार से श्रद्धापूर्वक की जा सकती है। कण-कण में भगवान है। यह सभी को ध्यान रखना चाहिये। अनेक स्थानों पर मेरी पूजा होती है, फिर भी मैं अपने प्रसिद्ध मंदिर के बारे में थोड़ी जानकारी अवश्य दूंगा। महाराष्ट्र के नासिक जिले में शिरडी के कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर मेरा मंदिर है। वहां मेरी प्रतिमा विद्यमान है। इस प्रतिमा का कोई आकार नहीं है, क्योंकि यह पाषाणखण्ड के आकार में मेरे ही ग्रह से उल्लापिण्ड के रूप में प्रकट हुई है। यहां मेरी निश्चित परिधि में कोई भी व्यक्ति चोरी या अन्य अपराध नहीं कर सकता। यदि भूलवश कर ले तो उसे इतना भारी और कठोर दण्ड मिलता है कि उसकी सात पीढ़ियां भी भूल नहीं कर सकती। यही कारण है कि इस स्थान पर कोई व्यक्ति अपने मकान या दुकान में ताला नहीं लगाता। ताला लगाना तो दूर, यहां मकानों में किवाड़ तक नहीं है। यहां रहने और आनेवालों को मुझ पर पूर्ण विश्वास है। मैं उनकी हर संभव रक्षा करता हूं। मेरी दशा में किस तरह लोग कष्ट उठाते हैं, यह इन पौराणिक सन्दर्भों से ज्ञात हो जायेगा-

पाण्डवों को वनवास- जब पाण्डवों की जन्मपत्री में मेरी दशा आयी तो मैंने ही द्रौपदी की बुद्धि भ्रमित करके कड़वे वचन कहलाये, परिणाम स्वरूप पाण्डवों को वनवास मिला।

रावण की दुर्गति- छः शास्त्र और अठारह पुराणों के प्रकाण्ड पण्डित रावण का पराक्रम तीन लोकों में फैला हुआ था। मेरी दशा में रावण घबरा गया। अपने बचाव के लिये मुझ पर आक्रमण करने पर उतारू हो गया। उसने शिव से प्राप्त त्रिशूल से मुझे घायल करके अपने बन्दीगृह में उलटा लटका दिया। लंका को जलाते समय हनुमानजी ने देखा कि मुझे उलटा लटका रखा है। हनुमानजी ने मुझे छुटकारा दिलाया। मैंने हनुमानजी से मेरे योग्य सेवा बताने का अनुरोध किया तो हनुमानजी ने कहा कि तुम मेरे भक्तों को कष्ट मत देना। मैंने तुरन्त अपनी सहमति दे दी। अन्त में राम-रावण युद्ध में मैंने रावण को परिवार सहित नष्ट करने में अपनी कुदृष्टिका भरपूर प्रयोग किया। परिणाम स्वरूप श्रीराम की विजय हुई।

विक्रमादित्य की दुर्दशा- विक्रमादित्य जब मेरी दशा आयी तो मयूर का चित्र ही हार निगल गया। विक्रमादित्य को तेली के घर पर कोल्हू चलाना पड़ा।

राजा हरिशचन्द्र को परेशानी-

राजा हरिशचन्द्र को मेरी दशा में दर-दर की ठोकरें खानी पड़ी। उनका परिवार बिछुड़ गया। स्वयं को श्मशान में नौकरी करनी पड़ी।

यदि आप चाहते है कि मैं हमेशा आपसे प्रसन्न रहूं तो आप निम्न उपाय करें तो मैं विश्वास दिलाता हूं कि मैं हमेशा आपकी रक्षा करूंगा-हनुमदुपासना, सूर्य-उपासना, शनिचालीसा का पाठ, पीपल के वृक्ष की पूजा, ज्योतिषी से परामर्श कर नीलम या जमुनिया का धारण, काले घोड़े की नाल से बनी अंगूठी का धारण तथा शनि-अष्टक का पाठ करें। अन्त में आप सभी को आर्शीवाद एवं शुभकामनाएं देते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। **(साभार-कल्याण)**

एक संत के त्याग से प्रभावित होकर एक राजा ने भी उनसे गुरूदीक्षा ली। पहले भी हजारों लोग उनसे दीक्षा ले चुके थे। उन्होंने राजा को दीक्षितों में देखा तो सबने जाकर कहा- महाराज! अब तो आप हमारे गुरूभाई है, अब हमसे राज्य-कर नहीं मांगना। राजा ने दुविधावश सबका कर माफ कर दिया। परिणाम यह निकला कि राज्य-व्यवस्था के लिये पैसा मिलना बंद हो गया, सारी व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट हो गई। यह देखकर संत ने राजा को बुलाया और कहा-राजन्! धर्म की सार्थकता कर्म से है। आलसी लोग दीक्षा भी ले लें तो क्या! इनमें मेरा एक भी शिष्य नहीं। राजा ने भूल समझी और टैक्स *लगा दिया, तब कहीं बिगड़ती शासन व्यवस्था संभली।*

❊ इस समाज में बहुत लोग गरीब और अपाहिज है, उनके लिये सब लोग थोड़-थोड़ दान दो। एक बार महापुरूष ईसा ने अपने अनुयायियों से कहा।

लोग धन देने लगे। कई दिन तक दानपात्र में धन गिरता रहा। ईसा उन सब दान देने वालों को देखते रहे। एक विधवा स्त्री प्रतिदिन आती और किसी दिन एक पैसा डाल जाती और किसी दिन दो। तीन पैसे उसे कभी जुटे ही नहीं।

अगले दिन सब लोग यह निर्णय सुनने को एकत्रित हुए कि-सबसे बड़ा सेवक कौन है? ईसा ने उस महिला की ओर संकेत करके कहा- यह है सबसे महान सेवक, जो अपनी तंगी में भी कुछ-न-कुछ देने की भावना से रिक्त नहीं हुई।

बच्चों के संस्कार व अभिभावक

* श्रीमती प्रभा जैन, देवास

आज का युग विज्ञान, कम्प्यूटर का युग है, प्रतिदिन नए-नए अविष्कारों की खोज हो रही है। आज के मानव ने पाताल से लेकर आकाश तक की खोज कर ली साथ ही विश्व के कोने-कोने की खबर मिनटों में निकाल लेते है। हम सोच सकते हैं कि आज का मानव कितना बुद्धिमान, विद्धवान हो गया है। अब इन बुद्धिमानों में हमारे बच्चे भी आते है, वे भी कितने इन्टलीजेंट हो गये है कि 5 वीं, 6 टी क्लास के बच्चों से हमें हेल्प मिलती है, क्या कभी हमने सोचा? नहीं।

बहुत सी बार हमें कोई जनरल या किसी प्रकार की जानकारी निकालनी हो, मोबाइल सिस्टम पूछना हो तो हम कहते हैं अभी.... (बच्चा) आएगा वह बता देगा, उसे सब सिस्टम मालूम है फिर आज हमें धार्मिक पाठशालाओं, संस्कारों की पाठशाला, शिविर आदि की आवश्यकता क्यों महसूस हो रही है? इसका प्रमुख कारण यही है कि आज की शिक्षा बच्चों को नैतिक, व्यवहारिक ज्ञान की शिक्षा नहीं देती। चाहे आज के बच्चों ने बड़ी-बड़ी डिग्रियां प्राप्त कर ली, अच्छे पद पर कार्यरत है परन्तु उनको व्यवहारिक ज्ञान नहीं। यह हमें स्पष्ट उनकी बोल-चाल की भाषा में, व्यवहार में दिखता है।

इसी कारण आज परिवार टूटते जा, रिश्ते टूटते जा रहे है। घर में बड़ें का सम्मान आदर नहीं, बहु-बेटे दोनों सर्विस करते, उनके पास बुजुर्ग माता-पिता को देखने का समय नहीं। अपने बच्चों से बतियाने का समय नहीं। माता-पिता वृद्धाश्रम में भेज देते है, जिस माँ ने अपने बच्चे के लिये मजदूरी की आर्थिक परेशानियों का सामना किया, बच्चे के स्वास्थ्य के लिये रात-दिन सोई नहीं, बच्चे को पढ़ाया, लिखवाया वही बच्चा माता-पिता का उपहास करें तब माता-पिता पर क्या बितती होगी?

ऐसी परिस्थितियां तभी बनती है जब बच्चे में अच्छे संस्कार न हो, आज हर संस्था चाहती है कि बच्चा संस्कारी बने इसके लिये दादा-नानी से कहानियां सुनने पर जोर दिया जा रहा है। नई दुनिया पेपर में गुरूकुल का आयोजन किया जा रहा है, जहां बच्चे सरल भाषा में कहानियां सुनकर शिक्षा ग्रहण करते है। हमारे पूज्य गुरूवर, हमारे स्वाध्यायी भाई-बहन भी धार्मिक पाठशालाओं के लिये बच्चों को प्रेरित करते है जहां संस्कारों व नैतिक मूल्य की शिक्षा दी जा सके। आजकल कई अन्य संस्थाएं भी बाल संस्कार शिविर का आयोजन कर बच्चों में सद्‌गुणों का विकास हो प्रयत्न करती है।

बच्चे संस्कार अभिभावकों से सिखते है-

1- बच्चों को संस्कार देने में माता की अहं भूमिका होती है, परिवार ही प्रथम पाठशाला है। संस्कार किसी स्कूल, कॉलेज यूनिसवर्टी में नहीं मिलते और ना ही किसी दुकान से खरीदे जा सकते है, कार, मोबाईल, संपति भी संस्कार नहीं दे सकती।

2- परिवार में यदि प्रेम-भाव होगा, बड़ें का आदर, सम्मान होगा, बड़ें के प्रति सहानुभूति की भावना होगी तो बच्चों में भी वैसे ही गुण विनम्रता, दया के सहानुभूति के आएंगे।

3- बच्चों के लिये मूल्य आधारित शिक्षा दी जानी चाहिये यदि कोई नियम बच्चों के लिए बनाया तो फिर शक्ति से उसका पालन होना चाहिये, शिथिलता न हो।

4- बच्चों को समय की शिक्षा दी जाए, Time is Money समय का मूल्य समझे। टीवी, मोबाईल, लेपटॉप में समय व्यर्थ न कर पढ़ाई में अधिक ध्यान दें।

5- बच्चों को आशावादी बनाए, जीवन में कभी निराश न हो, सफलता अवश्य मिलेगी।

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।

6- हम स्वयं बड़ें से वैसा ही व्यवहार करें, जैसा हम बच्चों से चाहते है। यदि हम किसी बात पर झूठ बोलते है तो बच्चा भी वही करेगा। वह कह देगा। आप भी तो झूठ बोलते हो।

7- बच्चों के प्रश्नों का समाधान उचित ढंग से करें। बच्चों को अपना लक्ष्य बनाने की प्रेरणा दें।

8- कितना भी व्यस्त जीवन हो, बच्चों के लिये समय अवश्य निकालें, उन्हें हमेशा खुश रहने की प्रेरणा दे। जो भी एक्टीविटी बच्चों की है, उसमें उनका उत्साहवर्द्धन करें।

जानो पहचानो-

* सुधा लोढ़, उज्जैन

चार प्रकार के जीव- 1- अपने सुख से दुःखी- (देवलोक के देवता) 2- अपने पाप से दुःखी- (नरक गति के नारकी)। 3- अपने दुःख से दुःखी- (तिर्यंच गति के पशु-पक्षी) 4- दूसरों के सुख से दुखी- (मनुष्यलोक के मनुष्य)।

*** अन्तिम रण- मरण, * पतन की चाबी- पर निंदा * उभय दान की शाला- सामायिक * प्रेम का शत्रु- ईर्ष्या * भाव का थर्मामीटर- वचन * जीवन की दौलत- चारित्र * ज्ञान की सुरक्षा- ज्ञानायतन * पाप धोने की मशीन- प्रतिक्रमण * आत्म धन- संतोष * सबका बीज- जल है।**

वर्ग पहेली क्रमांक-268

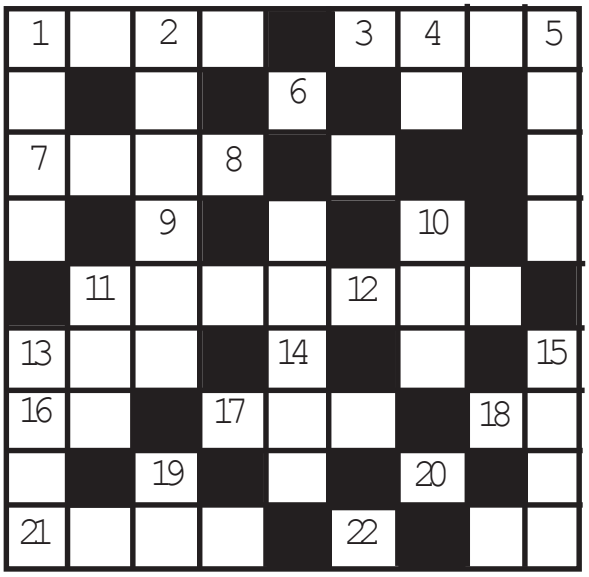

बांये से दांये :-

1-भगवान महावीर का पूर्व भव (4)
3-बीसवें तीर्थंकर भगवान का ज्ञान स्थल (4)
7-मुनि सुव्रत भगवान के शरीर का वर्ण (2)
8-प्रतिवासुदेवों में से एक (3)
11-भगवान महावीर के शरीर का वर्ण (3)
12-अजितनाथ भगवान का व्यवन स्थान (3)
16-जैनियों के दूसरे तीर्थंकर भगवान का लक्षण(2)
17-चंद्रप्रभ भगवान की प्रधान साध्वी (3)
18-संभवनाथ भगवान का चिन्ह (2)
21-भगवान ऋषभदेव का पूर्व भव (4)
22-भगवान अजितनाथ के प्रधान गणधर (4)

ऊपर से नीचे :-

1- जैनियों का महामंत्र (4)
2- पार्श्वनाथ भगवान का चिन्ह, सर्प (2)
4- अष्ट द्रव्यों में से एक (2)
5- अरिष्टनेमी का वंश (4)
6- बारह चक्रवर्तीयों में से एक (3)
9- एक भावी तीर्थंकर (3)
10-दूसरे तीर्थंकर की माता (3)
13-भगवान ऋषभदेव का पूर्वभव (4)
14-सुमतिनाथ भगवान के प्रधान गणधर (3)
15-शांतिनाथ भगवान के पिता (4)
19-गुजरात स्थित तीर्थ जहां की लायब्रेरी विश्व में प्रसिद्ध है (2)
20-अंतिम तीर्थंकर भगवान का चिन्ह (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-267 का परिणाम

अहंकार सारी अच्छाइयों का द्वार बंद कर देता है। व्यक्ति चाहता है कि मैं अपना वजूद बताऊँ हर व्यक्ति को। एक लालाजी थे, गांव में रहते थे। हर किसी के खिलाफ मुकदमे लगाते रहते थे। कभी सूद के नाम पर, कभी कुछ, कभी झूठे मुकदमे। बीमार पड़े। गांव वालों से कहा- अब हम मरने वाले हैं। हमने तुम्हें बहुत कष्ट दिया। सोच रहे है कि प्रायश्चित ही कर लें। हमें आप सब मिलकर सजा दीजिए। मरने के बाद आप सब हमारी छाती में खूंटा गाड़ देना, यह सोचकर कि यह दुष्टात्मा है, इसे शांति मिलें। कृपया! आप लोग यह कर देना, तब हमारी आत्मा को शांति मिलेगी। मर गए। गाँव वालों ने किया वैसा ही, जैसा कि वे कह गये थे। तुरन्त पुलिस आ गई। पकड़कर ले गई कईयों को। वास्तव में मरने से पहले वे पुलिस में रिपोर्ट लिखा गए थे कि गांव के लोग हमारी छाती में खूंटा गाड़कर मारने का प्लान बना रहे हैं। मरकर भी लालाजी ने पूरे गांव को छोड़ा नहीं। दुष्टात्माएं ऐसी ही होती हैं।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशःतीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रूपये 31/-, 21/-, 11/-एम.ओ.भेजें जावेंगे। सही उत्तर वाले नाम हम छांपेगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-268

*** पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.**

हमें पहचानो तो जाने !

1- मुझे 7 द्वीप एवं 7 समुद्र विभाग ज्ञान से दिख रहे थे।

2- मैंने मुनियों पर आये संकट मिटाने पैकिंद शरीर बनाया था।

3- मैं उसका नाथ बनना चाहता था पर उसने मुझे अनाथ कहा।

4-मैंने अपने पुत्रों को जैन साधु-साधुओं से दूर रहने के लिये कहा था।

5-मैंने अपने 500 अविनीत शिष्यों को छोड़ा।

6-मेरे तप का पारणा जहां जहां होता था वहां वहां श्रावक जिनालय बनवाते थे।

7-मैंने मेरे गुरूदेव की याद में पालीताना नगर बसाया।

8-जिस श्लोक का अर्थ मैं नहीं कर पाऊंगा, उसका अर्थ समझानेवाले का मैं शिष्य बन जाऊंगा।

9-मैंने चक्रवर्ती पद प्राप्त करने का नियाणा किया था।

10-मैंने ही ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती को समझाने की कोशिश की थी।

** पंचाग्नि विद्या सीखने पहुंचे नचिकेता से कठोर साधना कराई जाती देख गुरूमाता ने यमाचार्य से निवेदन किया कि अभी तो यह नाजुक उम्र का है। इसके साथ इतनी कठोरता मुझसे नहीं देखी जा रही। दस माह बीत गये। नचिकेता ने गोदधि, जौ की सुखी रोटियों के अलावा कुछ भी नहीं खाया। अन्य स्नातक तो रसयुक्त-स्वादयुक्त भोजन करते हैं। फिर उसी के साथ इतनी कठोरता क्यों? यमाचार्य ने हंसकर कहा- देवी! यही साधना-समर है। अभी तो नचिकेता का अन्न संस्कार ही कराया जा रहा है। आगे और भी कठोर साधनाएं चलेगी। ब्रह्म विराट हो, पवित्रतम, है, अग्निरूप है। शरीर समर्थ नहीं होगा तो नचिकेता उसे धारण कैसे करेगा? अन्नमयकोश की शुद्धि हेतु ही यह सब कराया जा रहा है। यह छुरे की धार पर चलने की तरह दुष्कर मार्ग है, पर यह साहसी है। तुम चिंता मत करो। यह सारी यात्रा कर लेगा। कठोपनिषद् के आख्यान बताते हैं कि पांचों कोश पंचाग्नि की साधना हुई और नचिकेता ने यम के मार्गदर्शन में ब्रह्मतत्व को प्राप्त किया। हर किसी के लिये अध्यात्म का यह मार्ग खुला पड़ा है।*

वर्गपहेली क्रमांक-267 के विजेता

विजेता :-

1- जयंतीलाल जैन, रतलाम, (म.प्र.) - प्रथम

2- वैभव बागरेचा, देवास, (म.प्र.) - द्वितीय

3- समरथमल हवेलीवाला, मंदसौर(म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे-

चंदनबाला जैन, देवास, सुरभि सर्राफ़ बदनावर,मनीष हिंगड़ नरवर (झालानि), ईश्वरचन्द्र भाण्डावत, शाजापुर, शकुन्तला गोदावत, इन्दौर, रोहितकुमार सकलेचा, नलखेड़ा, प्रीति जैन, रतलाम, सुधा लोढ़ा, उज्जैन, शान्ता पोरवाल, उज्जैन कला बेन, रतलाम, चंदनबाला जैन, जवाहरलाल जैन, उज्जैन, श्रीमती भारती जैन, देवास, .शांता बापना, इन्दौर, श्रीमती मुथा धारीवाल, देवास।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-267 के परिणाम

सही उत्तर-

1-किंपाक फल, 2- सिद्धाचल तीर्थ, 3- वीरमति, 4-चंदनबाला, 5- मम्मणसेठ, 6- ढुंढण मुनि, 7- नेमिनाथ, 8- कंडरिक मुनि, 9- पांच पांडव, 10-धन्नासेठ।

एक मात्र विजेता :-

रोहितकुमार सकलेचा, नलखेड़ा (म.प्र.)

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डाले।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-4-2017 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी।

- सम्पादक

* अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोद्धारक भविष्य फल अप्रेल-2017

मेष :- आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, धन लाभ की बेहतर संभावना है रहेगी परन्तु व्ययों की अधिकता भी रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय रहेगा।

वृषभ :- आपके लिये यह माह सामान्य फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ हेतु परिश्रम करना होगा, अधिकारी वर्ग से अनबन संभावित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय रहेगा।

मिथुनः-आपके लिये यह माह सामान्य रहेगा, व्यापार में सामान्य लाभ परन्तु कोई डूबत ऋण प्राप्त हो सकता है, महत्वपूर्ण यात्रा संभावित है।

कर्कः- आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में पदोन्नति की संभावना रहेगी, अधिकारी वर्ग से बेहतर सामजस्य रहेगा, विद्यार्थी में प्रसन्नता व उत्साह रहेगा।

सिंहः-आपके लिये यह माह शुभ रहेगा, निवेश की बेहतर संभावना रहेगी, दूर स्थानों से शुभ समाचार संभावित है।

कन्याः-आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में आशानुसार वृद्धि रहेगी, महिला वर्ग का विशेष सहयोग प्राप्त होगा।

तुलाः-आपके लिये यह माह सामान्य रहेगा, व्ययों की अधिकता मानसिक तनाव दे सकती है, स्वस्थ्य संबंधी समस्याएं उभर सकती है।

वृश्चिकः- आपके लिये यह माह सामान्य रहेगा, कार्य क्षेत्र में परिश्रम की अधिकता रहेगी, क्रोध आदि पर अवश्य रूप से नियंत्रित रखें, विद्यार्थी वर्ग में परिश्रम की अधिकता रहेगी।

धनुः-आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, धार्मिक व सामाजिक कार्यों में रूचि रहेगी, व्यापारिक लाभ संतोषप्रद रहेगा, निवेश की बेहतर संभावना रहेगी।

मकरः-आपके लिये माह मिश्रित फलदायक रहेगा, अधिकारी वर्ग के सहयोग से बेहतर सफलता प्राप्त होगी, रूके हुए कार्य पूर्ण होंगे।

कुम्भ :- आपके लिये माह शुभ रहेगा, व्यापार से अच्छे लाभ की संभावना रहेगी, वाद-विवाद में मजबूती रहेगी, पारिवारिक वातावरण बेहतर रहेगा।

मीनः-आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगी, सामाजिक कार्यों में रूचि रहेगी, स्वास्थ्य संबंधी सतर्कता अवश्य रखें।

युवा जैनाचार्य ने बड़ोद-उज्जैन-राजगढ़-रतलाम से लेकर इन्दौर तक शासन प्रभावना का रंग जमाया

* बड़ौद में महामांगलिक-दीक्षा से जोरदार माहौल बना।
* आगर-पिपलोन-मक्सी में भी शासन सन्देश पहुंचाया।
* उज्जैन में मालव भूषण के जन्मदिन पर संघों का सम्मिलन हुआ।
* आगामी चार्तुमास मन्दसौर में ही होगा।
* राजगढ़, भोपावर तक विहार किया।
* रतलाम में महामांगलिक हुई।
* इन्दौर में प्रभुवीर जन्म कल्याणक पर निश्रा प्रदान करेंगे।
* आपका जन्म दिन भी चैत्र सुदी-13 को है।
* ओली आराधना भी इन्दौर में करवायेंगे।

उज्जैन- जग जयवंता श्री जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा महोत्सव में प्रभावी निश्रा प्रदान कर युवा जैनाचार्य गुरू नवरत्न कृपा पात्र आचार्य श्री विश्वरत्नसागरजी सिरोही में दीक्षा महोत्सव सम्पन्न करवाकर नीमच पधारे यहां 19 फरवरी को प्रवेश पर आपकी भव्य अगवानी की गई। यहां से आपश्री का विहार बड़ेद श्री संघ के लिये हुआ जहां आपकी निश्रा में कु. रीना की दीक्षा सम्पन्न करवाई। महामांगलिक का भव्य आयोजन भी यहां पर हुआ। यहां से विहार कर आपश्री पिपलोन होते हुए आगर,माकड़ेन पधारे, यहां से 7 मार्च को मक्सी पधारे जहां पर आपश्री की निश्रा में अर्हत महाभिषेक का आयोजन किया गया। 9 मार्च को उज्जैन श्रीसंघ में भव्य सामैया के साथ मंगल प्रवेश करवाया गया। उज्जैन के विभिन्न संघों में आपका पदार्पण हुआ। 15 मार्च चैत्र सुदी-3 को पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा का 74 वां जन्मदिन उल्लास और उमंग के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मालवा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, के श्रीसंघों का मंगल आगमन हुआ। श्री प्रकाश सिरोही, ऊर्जा मंत्री पारस जैन, बारा से श्री प्रमोद भाया का आगमन हुआ। जन्म महोत्सव का कार्यक्रम करीब 4 घंटे तक निरंतर चला। इस अवसर पर इन्दौर, मंदसौर श्रीसंघों के द्वारा आपके चार्तुमास की विनंती की गई। युवा जैनाचार्यश्री ने मंदसौर श्री संघ को चार्तुमास की स्वीकृति प्रदान की है। यहां से आपश्री का गुरूकुल के साथ विहार राजगढ़ के लिये हुआ। राजगढ़ से श्री भोपावर तीर्थ पधारे। यहां से रतलाम आगमन हुआ जहां महामांगलिक का आयोजन किया गया। रतलाम से आप इन्दौर पधारे जहां आपश्री की निश्रा में परमात्मा श्री महावीर स्वामीजी का जन्म कल्याणक महोत्सव 9 अप्रेल को मनाया जावेगा। चैत्र मास की ओली भी इन्दौर में ही होगी। चैत्र सुदी-13 को आपका जन्मदिन भी मनाया जावेगा। आगामी चार्तुमास मन्दसौर में घोषित हो गया है।

**** रत्न तो लाखों मिले मगर ज्ञानरत्न नहीं मिला, धन तो हर वक्त मिला मगर चैन किसी क्षण न मिला। खोजते-खोजते ढल गई धूप जीवन की, मगर कोई नवरत्न जैसा दूसरा रत्न न मिला।***

ज्योतिष सम्राट श्री ऋषभचन्द्र विजयजी म.सा.की आचार्य पदवी 7 मई को

मोहनखेड़ा महातीर्थ- श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ के प्रांगण श्री सौधर्म बृहत्त पागच्छीय त्रिस्तुतिक गच्छ की यशस्वी प्रसिद्ध कल्याणकारी गुरू परम्परा के अष्टम पट्ट पर परम पूज्य शासन प्रभावक ज्योतिष सम्राट, अनुयोगाचार्य भावी संघ नायक श्री ऋषभचन्द्र विजयजी म.सा.की की अद्भूत अनुपम, अलौकिक पदवी महा उत्सव 5 मई से प्रारंभ होकर 7 मई 2017 को आचार्य पद पदाभिषेक होगा।

इस अवसर पर देशभर से लाखों भक्त उपस्थित रहेंगे। पाटोत्सव महा महोत्सव में श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेतांबर पेढ़ी ट्रस्ट, श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ के पदाधिकारियों ने सकल संघों को भी देशभर से इस अवसर पर पधारने की अपील की है। इस महोत्सव में प्रवचन प्रभावक मुनिराजश्री पियुषचन्द्र विजयजी म.सा.एवं मुनिराज श्री रजत चन्द्र विजयजी म.सा.के गुरूवर भावी आचार्य श्री ऋषभचन्द्रविजयजी म.सा.के जीवन की विशेष आध्यात्मिक गुणगान सुनने का अवसर प्राप्त होगा।

थाने तीर्थ चैत्य परिपाटी का आयोजन

थाने- बेसते महिने 27 फरवरी को थाने तीर्थ से शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय भट्टीपाड़ा मंडप चैत्य परिपाटी का आयोजन के के.संघवी के संयोजन में उनकी थाने तीर्थ से शांतिधाम पदयात्री तीर्थ मानपाड़ा की 7600 पदयात्रा निर्विघ्न पूर्ण होने पर किया गया जिसमें 60 पदयात्रियों ने भाग लिया। मार्ग में आने में 9 मंदिरों के दर्शन, वंदन, पूजन, गुरूवंदन के लाभ के साथ सभी तपस्वियों को संघपूजन व विशिष्ठ बहुमान सभी पदयात्रियों को संघपूजन व माण्डुप संघ की ओर से बहुमान किया गया। नवकारसी का लाभ श्रीमती चतुरबेन चंदनमलजी श्री श्रीमाल नारलाई भाण्डुपवालों ने लिया।

बिजोवा में ओलीजी आराधना

बिजोवा-मरूधर की धर्मनगरी बिजोवा नगर में श्री श्वेतांबर विसा ओसवाल जैन संघ, बिजोवा द्धारा आयोजित जप-तप ध्याननिष्ठ, राष्ट्रसंत महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की पावन निश्रा में चैत्र मास की भव्य शाश्वती नवपद ओली की आराधना 3 अप्रेल से प्रारंभ होकर 11 अप्रेल 2017 को सम्पन्न हुई। 12 अप्रेल को सभी आराधकों का भव्य पारणा का आयोजन हुआ। 2 अप्रेल को बिजोवा नगर में धूमधाम से आचार्यश्री का नगर प्रवेश हुआ।

पेदमीरम में ध्वजारोहण हुआ

पेदमीरम- दक्षिण भारत का शत्रुंजयावतार अति प्राचीन श्री पेदमीरम तीर्थ में नूतन द्विखंडीय त्रिशिखरीय मेघनाद मंडप सहित जिनालय का नूतन द्विखंडीय त्रिशिखरीय मेघनाद मण्डप सहित जिनालय का द्वितीय वर्षगांठ ध्वजारोहण 9 फरवरी को सैकड़ो जिनभक्तों की उपस्थिति में सानंद सम्पन्न हुआ।

पीड़वाडा में प्रेम गुरू मंदिर का खात मुहूर्त हुआ

पीड़वाड़ा- पूज्य आचार्य श्री कल्याण बोधि सूरी म.सा. की निश्रा में 14 फरवरी को यह प्रेम सूरी जीव रक्षा केन्द्र में प्रेमसूरी गुरूमंदिर का खात मुहूर्त सम्पन्न हुआ। प्रेमसूरी परिवार के ललितभाई ने खातमुहूर्त किया। मुनिश्री सत्वबोधिविजयजी के 500 संलग्न आयंबिल का पारणा हुआ। पीड़वाड़ 1100 सौ वर्ष के जिनशासन महान महर्षि श्री यशोभद्र सूरीश्वरजी म.सा. की जन्म दीक्षा भूमि है। गुरू मंदिर का शिलान्यास 30 अप्रेल को होगा।

ऊँकार तीर्थ में गुरू ऋण स्मृति पर्व का आयोजन

ऊँकार तीर्थ-पूज्य आचार्य श्री भद्रंकर सूरीश्वरजी म.सा. का जन्म शताब्दी तथा स्वर्गारोहण जयंति वर्ष (चैत्र सूद-13) पर पूज्य आचार्य श्री पुण्यानंद सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में ऊँकार तीर्थ में विविध कार्यक्रमों का आयोजन होने जा रहा है। अप्रेल के प्रथम सप्ताह में आयंबिल ओली प्रभु भक्ति, जीवदया आदि आयोजन होंगे।

श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव मना

उदयपुर- भुपालपुरा में श्राविका पद्माबहन भीमारी के द्धारा सद्रव्य से निर्मित श्री मुनि सुव्रत स्वामी के प्रभु के शिखरबद्ध जिनालय का अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। आचार्य श्री हेमचंद्रसूरीजी, श्री कल्याण बोधसूरीजी आचार्य श्री निपुणविजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वीजी की निश्रा में यह धर्म आयोजन 5 से 10 मार्च के मध्य सम्पन्न हुआ।

सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति श्री दौलतसागरसूरीजी का चार्तुमास इन्दौर में होगा

***आचार्य देवेश श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा.का चार्तुमास उज्जैन होगा।**

*** साध्वी प्रियदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा का चार्तुमास उज्जैन होगा।**

*** संभावित चार्तुमास प्रवेश 25 जून को होगा।**

इन्दौर- अब यह सुनिश्चित हो गया है कि सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य देवेश जिनागम सेवी श्री दौलतसागर सूरीश्वर जी महाराजा,पंयांसप्रवर श्रीविराग सागरजी मुनिश्री आगमचंदसागर का चातुर्मास इन्दौर में होने जा रहा है मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराजा के पट्टधर सुशिष्य आचार्य देवेशश्री अपूर्वरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा का चातुर्मास भी इन्दौर में हो यह प्रयास चल रहे है अजात शत्रु पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री नंदिवर्धन सागर सूरीजी म.सा.,मालव विभूषण आचार्य देवेश श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीवर्या श्री प्रियदर्शना श्रीजी म. सा.आदि ठाणा का चार्तुमास बड़ा उपाश्रय, उज्जैन में होने जा रहा था।

संभावित चार्तुमास प्रवेश 25 जून को होने की संभावना है। चार्तुमास हेतु बड़ा उपाश्रय में अनेक कार्यों को अंतिम रूप देकर चार्तुमास की तैयारियां आरंभ हो गई है।

जैन साधु-साध्वियों के लिये होगा पगदंडी मार्ग का निर्माण : सीएम विजय रूपाणी

आणंद- गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजयभाई रूपाणी ने पैदल विचरण करने वाले जैन साधु-साध्वियों की जीवन रक्षा के लिये राजव्यापी पगदंडी रास्तों के निर्माण की घोषणा की है। वे 24 फरवरी को पेटलाव तहसील के माणेज में श्री श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ माणेज महालक्ष्मी परिवार की ओर से बनाए गये कलात्मक मणीलक्ष्मी तीर्थ के द्वार के उद्घाटन और प्रभु प्रतिष्ठा महोत्सव में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि- पैदल विचरण करने वाले धर्माचार्यों एवं अन्य धर्मप्रेमियों के साथ हो रहे हादसे चिंता के विषय है। इसे देखते हुए पालीताना तीर्थ से गरियाधार तक दो सौ किलोमीटर के लंबाई वाले पगदंडी मार्ग का निर्माण ढाई सौ करोड़ रूपये के खर्च से किया जाएगा। इस अवसर पर उन्होंने आचार्यदेव श्रीमद्विजय युगभूषण सूरीश्वरजी म.सा.से आर्शीवाद लिया।

मण्डोदा में जैन मेला लगा

मण्डोदा- श्री मण्डोदा पार्श्वनाथ तीर्थ में प्रतिवर्षानुसार विशाल जैन मेला आयोजित किया गया। 3 एवं 4 मार्च को आयोजित कार्यक्रम में निश्रा साध्वी श्री पद्मलता श्रीजी एवं भव्यपूर्णाजी की रही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री पारसजी जैन (ऊर्जा मंत्री) रहे। इस अवसर पर सत्तरभेदी पूजन, दादा गुरूपूजन का आयोजन भी किया गया।

आचार्यश्री मुक्तिसागरजी का चार्तुमास बेंगलौर में

उज्जैन- यहां श्री अभ्युदय गुरूकुल की संस्थापना करनेवाले श्री अभ्युदय सागरजी म.सा. के सुशिष्य मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास बेंगलोर होगा। आपने उज्जैन होते हुए इन्दौर होकर बेंगलोर के लिये विहार आरंभ कर दिया है।

शक्रस्तव अभिषेक एवं श्री मणिभद्र महाहवन हुआ

पालीताना- यहां श्री श्रवण स्थिरालय में मुनिश्री गुणसागरजी म.सा. की भावना के अनुसार प्रतिवर्षानुसार फागण सुद-12 दिनांक 10 मार्च को शक्रस्तव अभिषेक एवं श्री मणिभद्र महा हवन का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में साधु-साध्वीजी की निश्रा रही। बालशिनोद, नवसारी, मुंबई, ताल, महिदपुर, बांसवाड़ा आदि स्थानों से श्रावक-श्राविका आये थे। साधर्मिक भक्ति का आयोजन भी किया गया।

साध्वी श्री अर्पित-अर्जिताश्री का चार्तुमास बड़नगर में

बड़नगर- सागर समुदायवर्ती एवं साध्वी अमितगुणाश्री म.सा. की शिष्या साध्वी श्री अर्पित-अर्जिताश्रीजी का चार्तुमास बड़नगर में होना निश्चित हुआ है।

पूज्य आचार्य श्री हेमचन्द्रसागर सूरीजी का ऑपरेशन हुआ

अहमदाबाद- सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य भगवंत श्री हेमचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.का एन्जोयोग्राफी का सफल ऑपरेशन दिनांक 18 मार्च को हुआ। यू.एन.मेहता अस्पताल में यह ऑपरेशन हुआ। आचार्यश्री शाता में है।

श्री शांतिनाथ प्रभु जिनालय का प्रतिष्ठा महोत्सव 14 अप्रेल से भाद्राजुन में होगा

भाद्राजुन- पूज्य आचार्य श्री विजय रविशेखर सूरीजी की निश्रा में यहां स्थित श्री शांतिनाथ प्रभु जिनालय का प्रतिष्ठा महोत्सव 14 से 17 अप्रेल तक मनाया जावेगा। 10 अप्रेल को कुंभ स्थापना हुई। 14 अप्रेल को 18 अभिषेक सम्पन्न हुई। 15 अप्रेल को विविध पूजन पढ़ाई गई तथा अन्य आयोजन हुए। 16 अप्रेल को भव्य रथयात्रा का आयोजन किया गया। प्रतिष्ठा 18 अप्रेल को हुई। इसी दिन श्री शांतिस्नात्र महापूजन भी पढ़ाई गई। 18 अप्रेल को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव सम्पन्न हुआ। पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास मेवाड़भवन पालीताना में होगा।

महुड़ी में ओली आराधना

महुड़ी- पूज्य आचार्य श्री हेमचन्द्र सूरीजी म.सा. एवं आचार्य श्री कल्याण बोधि सूरीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में यहां नवपद चैत्र ओली का आयोजन 3 से 11 अप्रेल के मध्य किया जा रहा है। ओली सिरोही के सुशीलादेवी प्रकाशचंद्र मोदी परिवार के द्वारा कराई जा रही है। 11 अप्रेल को श्री सिद्धचक्र महापूजन पढ़ाई गई।

पूज्य आचार्य मुक्तिदर्शन सूरीजी का कालधर्म हुआ

सूरत- यहां के उपनगर सकलवाड़ी में विराजित पूज्य आचार्य श्री मुक्तिदर्शन सूरीजी का कालधर्म दिनांक 17 मार्च को हो गया। आपश्री की पालकी 18 मार्च को उमरा पहुंची। यहां आपश्री का अग्नि संस्कार सम्पन्न हुआ।

राजगढ़ में जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव मना

राजगढ़- फरबदा परिवार के द्वारा त्रिदिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन 22 से 24 मार्च तक किया गया। कार्यक्रम की निश्रा पूज्य आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीजी ने प्रदान की। कार्यक्रम में श्री सिद्धचक्र महापूजन 23 मार्च को पढ़ाई गई। गुरूपाद पूजन भी हुई। श्रीमती मोहनबाई भेरूलालजी फरबदा को स्वर्ण सीढ़ी चढ़ाई गई।

जैनाचार्य श्री पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी का चार्तुमास दिल्ली में

दिल्ली- पूज्य अध्यात्मयोगी आचार्यदेव श्रीमद्विजय कलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न तथा परम पूज्य गच्छनायक आचार्यदेव श्रीमद्विजय कलाप्रभसूरीश्वरजी म.सा.के आज्ञानुवर्ति प्रवचन प्रभावक परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद्विजय पूर्णचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा का सन् 2017 का चार्तुमास मंडल जैन संघ श्री सुमतिनाथ जैन मंदिर, मानसरोवर गार्डन, न्यू दिल्ली में होगा। स्मरण रहे पूज्याचार्यश्री ने सन् 2016 का ऐतिहासिक चार्तुमास 19 साधु-साध्वी तथा 700 आराधकों के साथ श्री सम्मेतशिखरजी महातीर्थ में किया था। जहां आपने सूरिमंत्र की 2-3-4 पीठिका 47 दिन की मौन साधना के साथ की थी।

दादा श्री आदिनाथ का जन्म-दीक्षा कल्याणक मनाया

कैवल्यधाम-प्रथम तीर्थंकर परमात्मा दादा श्री आदिनाथ प्रभु का जन्म दीक्षा कल्याणक महोत्सव के रूप में यहां भव्य रूप से मनाया गया। दिनांक 21 मार्च को आचार्यश्री जिनपूर्णानंद सागर सूरीजी एवं श्री महेन्द्रसागरजी की निश्रा में आयोजित कार्यक्रम में श्री आदिनाथ पंच कल्याणक पूजन हुई। 14 स्वप्नाजी की बोली हुई। 29 अप्रेल को वर्षीतप पारणा का आयोजन भी यहां पर होगा।

चार्तुमास समाचार

✻ डहेलावाला समुदाय-आचार्य श्री अभयदेव-मोक्षरत्न सूरीश्वरजी म.सा. नवसारी।

✻ डहेलावाला समुदाय-आचार्य श्री रत्नचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. मालदास स्ट्रीट, उदयपुर (राज.)।

✻ डहेलावाला समुदाय-आचार्य श्री जगतचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.,सूरत कैलाशनगर।

✻ वागड़समुदाय-आचार्य श्री पूर्णचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा., मानसरोवर दिल्ली।

✻ युगदिवाकर समुदाय- आचार्य श्री पद्मसूरीश्वरजी म.सा. अहमदाबाद (गुज.)।

✻ युगदिवाकर समुदाय- आचार्य श्री महापद्मरत्नसूरीश्वरजी म.सा., सूरत सालरवाड़।

✻ मेवाड़केसरी समुदाय- आचार्य श्री रविशेखर सूरीश्वरजी म.सा. मेवाड़भवन, पालीताना।

✻ आगमोद्धारक समुदाय- आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. मंदसौर।

कोटा में त्रयान्हिका महोत्सव मना

कोटा- श्री चन्द्रप्रभ स्वामी जिनालय की ध्वजा एवं श्री चन्द्रप्रभ जैन भवन के खनन भूमि पूजन पर आयोजित महोत्सव के प्रेरक और मार्गदर्शक शासनरत्न श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण की शुभ उपस्थिति रही। 18 मार्च को परमात्मा की ध्वजा चढ़ाई गई। 17 से 19 मार्च तक मनाये गये महोत्सव में श्री चन्द्रप्रभ जैन भवन का खनन शिलान्यास हुआ। श्री मणिभद्र महापूजन 108 जोड़ें के साथ किया गया।

मानस मंदिर शाहपुर में छः गांव की यात्रा का आयोजन हुआ

शाहपुर- प्रसिद्ध मानस मंदिर शाहपुर में फाल्गुन सुदी-13 पर दिनांक 10 मार्च को छः गांव की परिक्रमा का आयोजन किया गया। पूज्य मुनिश्री विरक्तसागरजी एवं मुनिश्री मंगल सागरजी म.सा.आदि ठाणा-2 की निश्रा में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर 70 से अधिक साध्वीजी की उपस्थिति रही। हजारों की संख्या में श्रावक-श्राविका का मंगल समागम हुआ। महान महातीर्थ श्री सिद्धाचल के अनुसार यहां पर भी सामुहिक रूप से 5 स्थानों पर चैत्यवंदन किये गये। पूज्य मुनिश्री ने फाल्गुन यात्रा के महत्व पर प्रकाश डाला तथा श्री सिद्धाचल की भावयात्रा करवाई।

श्री कांतिलाल चौपड़ा श्री आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी के प्रतिनिधि बने

रतलाम- रतलाम नगर से धर्मनिष्ठ समाजसेवी श्री कांतिलाल चौपड़ा को श्री आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी, अहमदाबाद के म.प्र. के प्रादेशिक प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किया गया है। उक्त पेढ़ी द्वारा संपूर्ण भारत में जैन तीर्थों की व्यवस्था एवं प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार, नवनिर्माण के कार्य किये जाते है। इस अवसर पर समग्र जैन समाज द्वारा हर्ष व्यक्त किया गया। श्री जैन श्वे. खतरगच्छ संघ ट्रस्ट के वरिष्ठ संयोजक पूर्व अध्यक्ष एवं श्री आदिनाथ जैन श्वे. बाबा मंदिर के जीर्णोद्धार समिति के अध्यक्ष श्री कांतिलाल चौपड़ा ने नगर के समस्त जैन संघों का आभार व्यक्त करते हुए अनुरोध किया है कि क्षेत्र के समस्त जैन मंदिर के जीर्णोद्धार के लिये अवश्य अवगत करावें ताकि उक्त संस्था से अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग राशि प्राप्त कर सके।

पंन्यास श्री वैराग्यरत्नजी का चार्तुमास होस्पेट में होगा

सागर- केरला के इस नगर में 17 मार्च को पूज्य पंन्यास प्रवर श्री वैराग्यरत्न सागरजी, मुनिश्री पार्श्वरत्नसागरजी आदि साधु-साध्वी का आगमन हुआ। बैंगलोर के चिकपेट श्री संघ में विगत चार्तुमास सम्पन्न कर आपने केरल के श्री संघों में विचरण किया है। चैत्र मास की ओली के लिये आपश्री श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ जैन संघ हुबली में करवायेंगे। वहां से आपश्री चित्रदुर्गा पधारेंगे। यहां 7 मई को मुमुक्षु कु. विकी की दीक्षा क्रिया विधि महोत्सवपूर्वक आपकी निश्रा में सम्पन्न होगी एवं 10 दिवसीय शिविर का आयोजन भी किया जायेगा। आपका आगामी चार्तुमास होस्पेट नगर में होगा।

नवपद ओली एवं चार्तुमास .उद् घोषणा होगी

भाण्डवपुर- परम पूज्य युग प्रभावक गच्छाधिपति, राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्रीद्धिजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में भाण्डवपुर तीर्थ में शाश्वत नवपद ओलीजी की आराधना होगी। निश्रा प्रदान करने हेतु आचार्यश्री अपने साधु-साध्वी मंडल के साथ चैत्र शुक्ला 2,3, अप्रेल को भाण्डवपुर तीर्थ में पधारेंगे। चैत्र शुक्ला 7 से ओलजी की आराधना आरंभ होगी तथा चैत्र पूर्णिमा 11 अप्रेल को पूज्याचार्य श्री उद् घोमास की घोषणा करेंगे।

पूज्यपाद अपूर्वमंगलरत्नसागर सूरीजी नागपुर पहुंचे

नागपुर- पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के पट्ठधर सुशिष्य पूज्यपाद मालवा विभूति आचार्य देवेश श्री अपूर्वमंगलरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा बैंगलोर, हैदराबाद होते हुए 15 मार्च को नागपुर पहुंचे। इसके पूर्व आप जब हिंगनघाट पहुंचे थे तब आपकी जोरदार मंगल अगवानी की गई थी। नागपुर के रामदास पेठ में भी आपकी भव्य अगवानी की गई। यहां से आपश्री संभवनाथ जैन संघ भी पधारेंगे। आगे आपश्री का विहार मालवा की ओर होगा। मालवा में ही आपका चार्तुमास होने की संभावना है।

संक्षिप्त समाचार

❊ भद्रेश्वर तीर्थ- श्री प्रेम-भुवनभानु समुदायवर्ती आचार्य श्री अभय शेखर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में 2 से 4 जून तक शासन श्रद्धा शिविर का आयोजन होगा।

❊ आबू तीर्थ- बागड़ समुदायवर्ती आचार्य श्री कलाप्रभ-कल्पतरू-मुक्तिचंद्र-मुनिचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में संघवी मनोरीबाई कवंरलाल वेद (फलोदी, चैन्नई) आयोजित उपधान तप की आराधना हेतु प्रथम प्रवेश 15 अप्रेल, द्वितीय मुहूर्त 17 अप्रेल है।

❊ अहमदाबाद- योगनिष्ठ समुदायवर्ती पंन्यास प्रवर श्री अरविंद-महेन्द्रसागरजी म.सा. की आचार्य पदवी 17 अप्रेल को होगी।

❊ भरूच- श्री प्रेम-भवनभानु समुदायवर्ती आचार्य श्री रत्नसुंदर सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में मुमुक्षु श्री अक्षयकुमार संघवी की दीक्षा 19 अप्रेल को होगी।

हमारे तीज-त्यौहार

1- चैत्र सुदी-5	शनिवार	1/4/2017	रोहिणी
2- चैत्र सुदी-7	सोमवार	3/4/2017	आयंबिल ओली आरंभ
3- चैत्र सुदी-11-12-13	शुक्र,शनि,रवि	7-8-9/4/2017	पू.साधु-साध्वीजी के अचित्तरज का काउसग्ग
4- चैत्र-13	रविवार	9/4/2017	परमात्मा श्री महावीरस्वामीजी का जन्म कल्याणक (2615 वाँ)
5-चैत्र-15	मंगलवार	11/4/2017	श्री सिद्धाचल की महायात्रा (चैत्री पूनम)
6-वैशाख वदी-3	शुक्रवार	14/4/2017	मीनार्क कुर्मुहता समाप्त सूर्य मेष राशि में
7- वैशाख वदी-10	शुक्रवार	21/4/2017	श्री सीमंधर स्वामीजी आदि का जन्म कल्याणक
8- वैशाख सुदी-3	शनिवार	29/4/2017	रोहिणी-वर्षीतप पारणा, आखातीज

पुष्प नक्षत्र- आरंभ- चैत्र सुदी-8, मंगलवार, दिनांक-4/4/2017, समय- 23.14 बजे
समाप्त-चैत्र सुदी-9, बुधवार, दिनांक- 5/4/2017, समय- 22.54 बजे

पंचक- आरंभ- वैशाख वदी-10, शुक्रवार, दिनांक-21/4/2017, समय- 14.20 बजे
समाप्त-वैशाख वदी-14, मंगलवार, दिनांक-25/4/2017, समय- 21.55 बजे

✻ एक व्यापारी एक घोड़े पर नमक और एक गधे पर रूई की गाँठ लादकर ले जा रहा था। रास्ते में एक नदी पड़ी। पानी में घुसते ही घोड़े ने पानी में डुबकी लगाई तो काफी नमक पानी में घुल गया। गधे ने घोड़े से पूछा- यह क्या कर रहे हो? घोड़े ने उत्तर दिया- 'वजन हलका कर रहा हूं। यह सुनकर गधे ने भी दो डुबकी लगाई, पर उससे गाँठ भीगकर इतनी भारी हो गई कि उसे ढोने में गधे की जान आफत में पड़ गई। सच है- नकल के लिये भी बड़ी अकल चाहिए।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

✻पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चातुर्मास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें। ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सके।

✻आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव,मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻अंक आपके तक नियमित रूप से नवीन स्वरूप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक